सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 358, नई दिल्ली । गुरुवार, 06 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शालीमार बाग का दौरा कर निरीक्षण किया
06 रासायनिक प्रदूषण भी घोल रहा शरीर में जहर
08 आखिर क्यों लोग वोट देने क्यों नहीं निकल रहे?

परिवहन आयुक्त द्वारा जारी हुई एक्सटेंशन, जाने किसको और क्यों ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। पिछले कई महीनों से आप अलग अलग माध्यम से सुनते आ रहे होंगे की दिल्ली में 5 नए एटीएस की टैंडर प्रगति पर है और साथ ही पिछले कई सालों से झूलझूली वाहन जांच शाखा का टैंडर प्रगति पर है।

कितनी प्रगति में यह आप भी जाने पिछले कई सालों से लगातार किसी ना किसी बहाने से टैंडर रद्द दिखाया जाता रहा है और इस कारण से **झूलझूली के वाहन जांच शाखा में कार्यरत कंपनी का एग्रीमेंट खत्म होने के बाद भी फाइल में यह प्रस्तुत कर की अभी तक किसी अन्य कम्पनी को टैंडर / काम जारी नहीं हो पाया इसलिए इसी कंपनी को एक्सटेंशन जारी किया जाए"** और परिवहन आयुक्त टैंडर खत्म हुई कंपनी को एक्सटेंशन जारी कर देते हैं। **अब सवाल यह उठता है की जहां सरकारी जमीन पर कोई टैंडर नहीं ले पा रहा तो उस राज्य में अपनी जमीन वह भी कमर्शियल कैटेगरी और साथ ही डेढ़ एकड़ पर कैसे कोई टैंडर प्राप्त कर पाएगा** फिर अन्य पांच एटीएस सैंटर क्या दिल्ली में संभव होंगे वह भी ऐसे परिवहन आयुक्त के होते। जो **सिर्फ एक कंपनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से ना सिर्फ बार बार एक्सटेंशन प्रदान करता आ रहा हैं अपितु क्षमता से अधिक वाहनों की जांच के आदेश भी कर फायदा पहुंचवा देता हैं। अब यह जांच का मुद्दा बन चुका हैं और दिल्ली सरकार को तत्काल प्रभाव से इस मुद्दे पर किसी निष्पक्ष एजैंसी (सीबीआई) से इसकी जांच करवानी चाहिए।** इस जांच की आवश्यकता इसलिए भी है **क्योंकि बुराड़ी वाहन जांच शाखा में परिवहन विभाग के अपने परिसर में ही एटीएस की पैक कई नई मशीनें पड़ी सड़ रही हैं और उसको लगाने के लिए अनिवार्य स्थल पिट भी बिलकुल तैयार है और विभाग के पास इसके लिए अनिवार्य स्टाफ और अधिकारी भी विभाग में उपलब्ध हैं फिर बाहरी कंपनी को एक्सटेंशन देकर फायदा क्यों ?**

जनहित में **दिल्ली सरकार, मुख्य सचिव और उपराज्यपाल दिल्ली को तत्काल प्रभाव से परिवहन आयुक्त द्वारा जारी सभी गैर कानूनी आदेशों की निष्पक्ष जांच के आदेश जारी करने चाहिए।**

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है ?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

केदारनाथ यात्रा होगी आसान : सोनप्रयाग से रोपवे को मिली मंजूरी, सफर अब सिर्फ 36 मिनट में

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय रोपवे विकास कार्यक्रम ₹पर्वतमाला₹ के तहत सोनप्रयाग से केदारनाथ (12.9 किमी) और गोविंदघाट से हेमकुंड साहिबजी (12.4 किमी) रोपवे परियोजनाओं को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि इन परियोजनाओं पर कुल 6,811 करोड़ रुपये की लागत आएगी और निर्माण चार से छह वर्षों में पूरा होगा। केदारनाथ रोपवे परियोजना पर 4,081 करोड़ रुपये खर्च होंगे और यह ट्राई-केबल डिटैचेबल गोंडोला (3एस) तकनीक पर आधारित होगी, जिससे यात्रा का समय 8-9 घंटे से घटकर 36 मिनट रह जाएगा। इसकी क्षमता 1,800 यात्री प्रति घंटे प्रति दिशा होगी। हेमकुंड साहिबजी रोपवे परियोजना पर 2,730 करोड़ रुपये खर्च होंगे, जिससे 21 किमी की कठिन चढ़ाई आसान होगी।

2025 में शुरू हो सकती है दिल्ली मेट्रो की 10वीं लाइन, जानें नाम, रूट और स्टेशनों की संख्या

दिल्ली मेट्रो की 10वीं लाइन यात्रियों के लिए शुरू होने के बाद यात्रा के समय को काफी कम कर देगी. इस परियोजना में 5 किमी लंबी जुड़वां सुरंग, एक भूमिगत रैंप, एक कट-एंड-कवर सुरंग बॉक्स और कई भूमिगत स्टेशनों का निर्माण शामिल है.

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो की गोल्डन लाइन एयरोसिटी को तुगलकाबाद स्टेशन से जोड़ता है. इस लाइन का रंग आधिकारिक तौर पर जनवरी 2024 में बदल दिया गया था. पहले इसे सिल्वर लाइन के रूप में नामित किया गया था. नवंबर 2023 में, रंग कोड को सोने में बदल दिया गया था और बाद में, जनवरी 2024 में, इसे आधिकारिक तौर पर गोल्डन लाइन नाम दिया गया था.

गोल्डन लाइन दिल्ली मेट्रो की 10वीं लाइन

गोल्डन लाइन दिल्ली मेट्रो नेटवर्क के चरण 4 का हिस्सा है, जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) को कवर करने वाली एक विशाल सामूहिक तीव्र पारगमन प्रणाली है. दिल्ली मेट्रो में कई रंग-कोडित लाइनें हैं, और गोल्डन लाइन नई लाइन है. गोल्डन लाइन आधिकारिक तौर पर दिल्ली मेट्रो की लाइन 10वीं है.

2025 तक संचालित होने की उम्मीद

इस लाइन पर कुल 15 स्टेशन हैं, जिनकी कुल लंबाई 23.62 किमी है. मैजिक ब्रिक्स की रिपोर्ट के अनुसार, यह लाइन 2025 तक चालू होने की उम्मीद है.

शहर के प्रमुख क्षेत्रों से होगी कनेक्टिविटी

गोल्डन लाइन यात्रियों के लिए शुरू होने के बाद यात्रा के समय को काफी कम कर देगी. इस परियोजना में 5 किमी लंबी जुड़वां सुरंग, एक भूमिगत रैंप, एक कट-एंड-कवर सुरंग बॉक्स और कई भूमिगत स्टेशनों का निर्माण शामिल है. इस विस्तार का उद्देश्य शहर के प्रमुख क्षेत्रों में कनेक्टिविटी में सुधार और भीड़भाड़ को कम करना है.

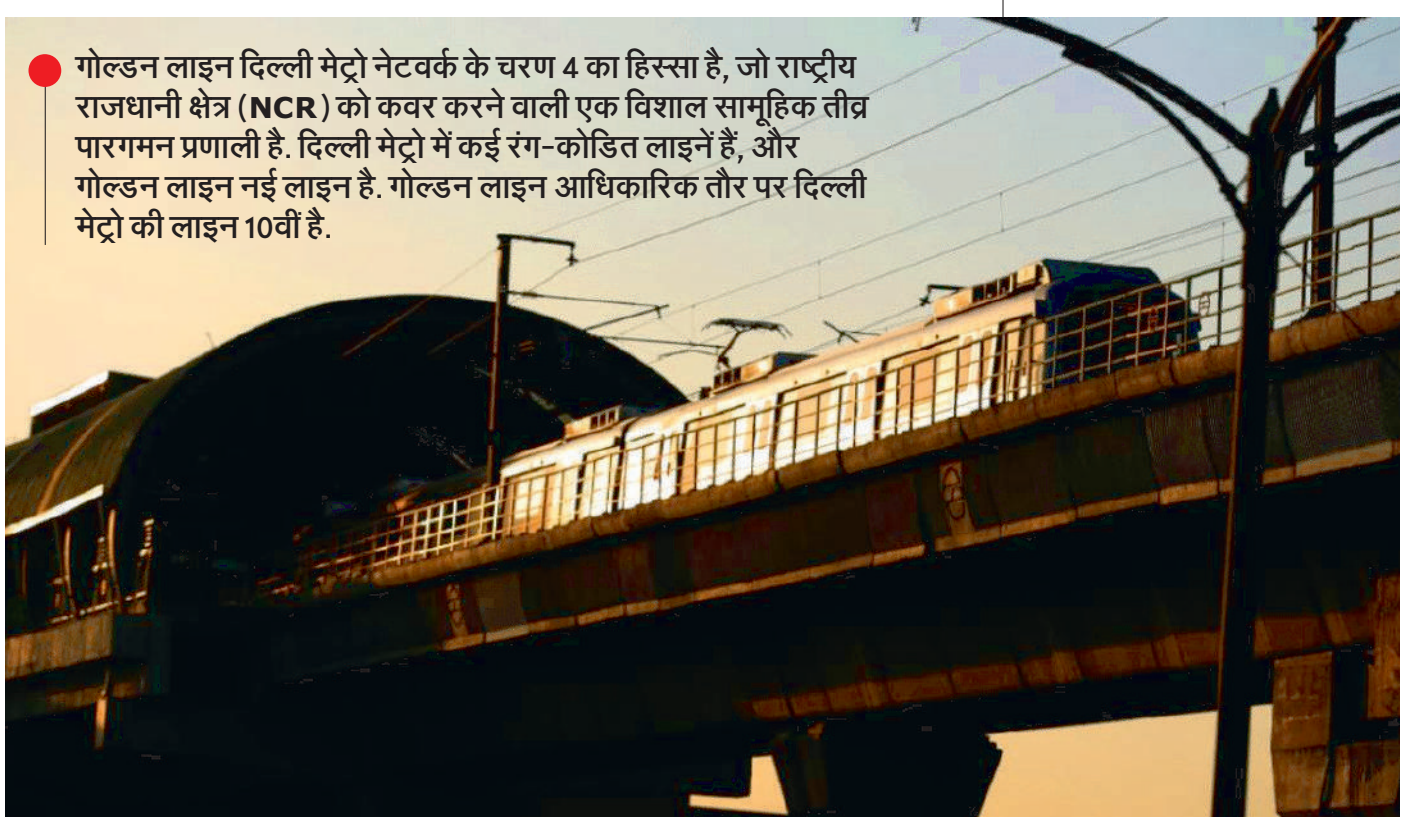

दिल्ली मेट्रो की गोल्डन लाइन की विशेषताएं:

लाइन का नामः एयरोसिटी से तुगलकाबाद मेट्रो कॉरिडोर
लाइन का रंगः दिल्ली मेट्रो गोल्डन लाइन
लाइन नंबरः 10
कुल लंबाईः 25.82 किमी
मार्गः महिपालपुर, छतरपुर, वसंत कुंज, आईसीएनओयू, साकेत और संगम विहार के माध्यम से दिल्ली एयरोसिटी को तुगलकाबाद से जोड़ता है
कुल स्टेशनः 15

लोक निर्माण विभाग ने तैयार किया मास्टर प्लान
30 अप्रैल तक भरेगा दिल्ली की सड़कों पर 7,000 गड्ढे

अब दिल्ली की सड़कों पर चलना सुगम होगा। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने 30 अप्रैल तक 7000 गड्ढों को भरने का लक्ष्य रखा है। इसके अलावा 20 लाख वर्ग मीटर सड़क पैच की मरम्मत भी की जाएगी। इस महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्देश्य दिल्ली के यातायात को सुगम बनाना और सड़कों की स्थिति में सुधार करना है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) 30 अप्रैल तक अपने अधिकार क्षेत्र में आने वालीं सड़कों के 7,000 गड्ढे भरेगा। विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इस बारे में निर्देश जारी किया है।

गत 21 फरवरी को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में दिल्ली मंत्रिपरिषद के समक्ष इस बारे में एक प्रेजेंटेशन भी दिया गया था। इस प्रेजेंटेशन में विभिन्न निविदाओं को आमंत्रित करने और काम शुरू करने के लिए कुछ समय सीमाएं निर्धारित की गई थीं, इसलिए सभी संबंधित अधिकारियों को इन समयसीमाओं का पालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है।

30 अप्रैल निर्धारित किया गया लक्ष्य

विभाग के अधिकारी ने कहा कि रखरखाव वैन का उपयोग करके गड्ढे भरे जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, पीडब्ल्यूडी ने मरम्मत की आवश्यकता वाले 20 लाख वर्ग मीटर सड़क पैच की पहचान की है। इन मरम्मतों के लिए निविदा प्रक्रिया 15 मार्च तक पूरी होने की उम्मीद है, साथ ही पूरा होने का लक्ष्य 30 अप्रैल निर्धारित किया गया है। 70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान राष्ट्रीय राजधानी में सड़कों की कथित खराब स्थिति एक बड़ा मुद्दा थी।

दिल्ली-रोहतक रोड एनएचएआई को सौंपने के प्रस्ताव को मंजूरी

दिल्ली की सड़क नेटवर्क को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के मंत्री प्रवेश वर्मा ने पीरागढ़ी चौक से टिकरी बार्डर तक 13.23 किमी लंबे दिल्ली-रोहतक रोड (एनएच-10) को राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) को हस्तांतरित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

इस महत्वपूर्ण फैसले को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सैद्धांतिक रूप से सहमति दे चुके हैं, जिससे इस महत्वपूर्ण मार्ग को हाईवे में बदलने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। वर्तमान में दिल्ली सरकार के हिस्से वाली इस सड़क ही हालत कई जगहों पर बेहद खराब है।

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने इस प्रस्ताव को मंजूरी देकर एनएचएआई को सौंपने के लिए आगे बढ़ा दिया है। इस पहल का उद्देश्य इस सड़क को राष्ट्रीय राजमार्ग मानकों के अनुरूप विकसित करना है। जिससे यातायात सुगम बने, सड़क की स्थिति में सुधार हो और दिल्ली-हरियाणा के बीच यात्रा अधिक सुगम हो।

पीडब्ल्यूडी मंत्री वर्मा ने क्या कहा?

पीडब्ल्यूडी मंत्री वर्मा ने कहा कि यह कदम मोदी सरकार के विभिन्न राज्यों को बेहतर सड़क नेटवर्क से जोड़ने और निर्बाध यात्रा एवं आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण के अनुरूप है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी की सैद्धांतिक सहमति के साथ इस योजना को आगे बढ़ाने से जनता को लाभ मिलेगा।

डबल इंजन की सरकार यातायात को सुगम बनाने, संपर्क को बेहतर करने और विश्वस्तरीय सड़क अवसंरचना विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। दिल्ली से विभिन्न राज्यों को जोड़ने वाले सभी राष्ट्रीय राजमार्गों की पहचान कर उन्हें एनएचएआइ को सौंपने की प्रक्रिया जारी है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

नाड़ी चक्र वर्णन

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी)

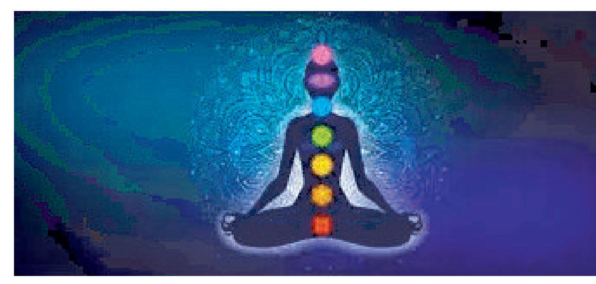

अग्नि पुराण के अनुसार बताए गए नाड़ी चक्र का यहां वर्णन किया जा रहा है। जिसको जानने मात्र से लोग श्री विष्णु को जान सकते है।

योगी जन कुंडली जागरण में इन्ही नाड़ियों के आधार पर प्राण वायु को संतुलित करते हैं। अग्नि पुराण में वर्णन आता है कि अग्नि देव वशिष्ठ मुनि से कहते है कि नाभि के अधोभाग में कंद अर्थात मूलाधार चक्र स्थित है। उसमे अंकुरों की भांति नाड़यिां निकली हुई है। नाभि के मध्य में 72 हजार नाड़यिां स्थित है। जहां मणिपुर चक्र भी स्थापित है। इन नाड़यिों ने शरीर को ऊपर-नीचे ,दाएं-बाएं सब ओर से व्याप्त कर रखा है और ये चक्राकार होकर स्थित है। इनमे 10 नाड़यिाँ प्रधान है।

1- इडा
2- पिंगला
3-सुषुम्णा
4- गान्धारी
5- हस्तिजिह्वा
6- पृथा
7- यशा
8 - अलम्बुषा
9- कुहू
10- शडिनी

ये 10 प्राणों का वहन करने वाली प्रमुख नाड़यिाँ बतलाई गई है।

दस प्राणों के नाम कुछ इस प्रकार से हैं। प्राण ,अपान,सामान , उदान , व्यान , नाग,कूर्म, कृकर , देवदत्त और धनञ्जय - ये दस प्राण वायु है। इनमे से प्रथम वायु प्राण दसों का स्वामी माना गया है।

कृष्णावल

आधुनिक शिक्षा पीढ़ी से पढ़े लोगों के लिए यह बताना मुश्किल होगा की "कृष्णावल" क्या है, संभव है ९८ % तो यही कहेंगे कि उन्होंने यह शब्द कभी सुना ही नहीं है पर यदि आप दादी नानी से जानना चाहेंगे या पचास वर्ष पूर्व के लोगों से पूछताछ करेंगे तो वह आपको बता देंगे कि गाँव में "कृष्णावल" प्याज या पालंडु को कहा जाता है। गांव में प्याज के लिए सबसे प्रचलित शब्द था कृष्णावल और साथ ही जान ले प्याज को कांदा भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे ऑनियन या अन्यन कहते हैं। यह कंद श्रेणी में आता है जिसकी सब्जी भी बनती है और इसे सब्जी बनाने में मसालों के साथ उपयोग भी किया जाता है।

इसे संस्कृत में कृष्णावल कहते थे। वैसे इस शब्द को विस्मृत कर दिया गया है और आजकल यह शब्द प्रचलन में नहीं है। प्याज को कृष्णावल कहने के पीछे छुपा हुआ रहस्य भी है। आईए जानते हैं प्याज को ही क्यों कहा जाता हैं कृष्णावल. !

१. दक्षिण भारत में खासकर कर्नाटक और तमिलनाडु के ग्रामीण क्षेत्रों में प्याज को आज भी कृष्णावल नाम से ही जाना जाता है।

२. इसे कृष्णवल कहने का तात्पर्य यह है कि जब इसे खड़ा काटा जाता है तो वह शङ्खाकृति यानी शङ्ख के आकार में दिखता है।वहीं जब इसे आड़ा काटा जाता है तो यह चक्राकृति यानी चक्र के आकार में दिखाई देता है।

. आप जानते ही हैं कि शङ्ख और चक्र दोनों श्री हरि विष्णु के आयुधों में से हैं और श्री कृष्ण जी श्री हरि के दशावतार में ही पूर्णावतार (नवें अवतार) हैं।

४. शङ्ख और चक्र की आकृतियों के कारण ही प्याज को कृष्णावल कहते हैं। कृष्ण और वलय शब्दों को मिलाकर बना ₹कृष्णावलर₹ शब्द है।

५. कृष्णावल कहने के पीछे केवल यही एक कारण नहीं है ; अपितु यदि आप प्याज को उसकी पत्तियों के साथ उलटा पकड़ेंगे तो वह गदा का भी रूप ले लेता है। यह भी रोचक सच है कि यदि पत्तों के काट दिया जाए तो वह पद्म यानी कमल का आकार लेता है। गदा और पद्म भी भगवान श्री हरि विष्णु के आयुध हैं जिसे वे चक्र और शङ्ख के साथ धारण करते हैं।

साभार/संशोधन/संकलन - इस के सत्यापन हेतु आप खुद कुछ संशोधन कार्य कर सकते है।

महर्षि याज्ञवल्क्य का जीवन का परिचय--

महर्षि याज्ञवल्क्य जी का नाम एक महान अध्यात्मवेत्ता, योगी, ज्ञानी, धर्मात्मा, श्रीरामकथा के प्रवक्ता के रूप में सबने सुना है। इनका नाम ऋषि परम्परा में बड़े आदर के साथ लिया जाता हैं। पुराणों में इन्हें ब्रम्हा जी का अवतार बताया गया है। महर्षि याज्ञवल्क्य वेदाचार्य महर्षि वैशम्पायन के शिष्य थे। इन्होंने अपने गुरु वैशम्पायन जी से वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। एक मान्यता के अनुसार एक बार गुरु से कुछ विवाद हो जाने के कारण गुरु वैशम्पायन जी इनसे रुष्ट हो गये और कहने लगे कि तुम मेरे द्वारा पढ़ाई गई यजुर्वेद को वमन कर दो। गुरुजी की आज्ञा पाकर याज्ञवल्क्य जी ने अन्नरूप में वे सब ऋचाएं वमन कर दी जिन्हें वैशम्पायन जी के दूसरे शिष्यों ने तीतर, बनकर ग्रहण कर लिया। यजुर्वेद की वही शाखा जो तीतर बनकर ग्रहण की गयी तैतरीय शाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई।

इसके पश्चात याज्ञवल्क्य जी एक अन्य गुरुकुल में गये वहां पर विद्याध्ययन करने लगे। इनकी सीखने की प्रवृत्ति भी तीव्र थी। ये स्वाभिमानी स्वभाव के थे। यहां भी किसी बात को लेकर गुरु के साथ इनका विवाद हो गया और इन्होंने सोचा मैं इस लोक में किसी को अपना गुरु नहीं बनाऊंगा। अब उन्होंने वेद ज्ञान व अध्यात्म के विद्या को प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय किया व इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इन्होंने भगवान सूर्य की उपासना की।

याज्ञवल्क्य की स्तुति प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवान सूर्य प्रकट हुए व कहा कि मैं आपकी जिह्वा पर साक्षात्सरस्वती को विराजमान करता हूं। इसके पश्चात सूर्य से प्राप्त ज्ञान के आधार पर 'सरस्वती' की कृपा से इन्होंने 'शुक्ल यजुर्वेद की रचना की जो पहले से विद्यमान नहीं थी । ज्ञानार्जन में ये अपने समय के ऋषियों में अग्रणी रहे। दिनोंदिन इनकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी, इनके शिष्यों की संख्या बढ़ती गयी। कहा जाता है इनके पूर्व के गुरुओं ने भी इनका शिष्यत्व ग्रहण कर अध्यात्म क्षेत्र की उच्च अवस्थाओं को इनसे जाना ।

अध्ययन के बाद इन्होंने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया। इनकी पहली पत्नी का नाम कात्यायनी था। इनका एक राजपरिवार में आना जाना था। वहां के सेनापति के साथ इनके पारिवारिक संबंध थे। उसकी पुत्री मैत्रेयी इनके तेजस्वी रूप पर और उच्चतम ब्रह्मविद्या के फलस्वरूप इनके प्रति आसक्त हो गयी। जब इस बात का पता इनकी पहली पत्नी कात्यायनी को चला तो उसने याज्ञवल्क्य जी को सहर्ष मैत्रेयी से विवाह के लिए तैयार किया। इस प्रकार इनकी दूसरी शादी सम्पन्न हुई। कात्यायनी और मैत्रेयी भी अपने समय की विदुषी महिलाएं थीं। याज्ञवल्क्य मिथिला नरेश जनक के पुरोहित थे। राजा जनक सच्चे जिज्ञासु थे। वे किसी ब्रह्मनिष्ठ को अपना गुरु बनाना चाहते थे। जनक जी ने इस प्रकार उनके पांडित्य की परीक्षा लेकर उन्हें अपना गुरु बनाया। और उनके द्वारा ब्रह्म ज्ञान का सम्पादन किया।

याज्ञवल्क्य जी के तीन पुत्र और अनेकानेक शिष्य हुए। इनकी पत्नी पुत्र सभी उच्च कोटि के विद्वान थे ये उच्च कोटि के विद्वान्‍ के साथ साथ एक सच्चे ब्रह्मवेत्ता योगी थे। इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें याज्ञवल्क्य स्मृति इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। यह स्मृति ग्रंथ आचाराध्याय व्यवहाराध्याय तथा प्रयासचित्ताध्याय इन तीन भागों में विभक्त है। आचाराध्याय में वर्णक्रम धर्म-अधर्म विषयक तथा व्यवहाराध्याय में प्रायश्चित विषयक, उपदेश और आवश्यक बातें बतायी गयी हैं। इस ग्रंथ पर विज्ञानेश्वर पंडित की मिताक्षरा नामक टीका है। मिताक्षरा अति प्रसिद्ध है। ब्रिटिश काल में न्यायालयों में हिन्दुओं के धार्मिक प्रश्नों को हल करने के लिए इसका संदर्भ लिया जाता था।

याज्ञवल्क्य जी ने आयु के चौथे प्रहर में सन्यास ग्रहण किया और वन में जाकर योग साधना की। इनके सन्यास धारण की घटना भी बड़ी रोचक है। घटना इस प्रकार घटी - एक बार राजा जनक ने पूछा भगवन्वैराग्य किसे कहते हैं? आप कहते हैं कि वैराग्य के बिना मुक्ति संभव नहीं है। मुझे सत्य सुबूत जानने की बड़ी उत्कंठा है। जनक का यह प्रश्न सुनकर याज्ञवल्क्य विचार करने लगे कि जनक ने ऐसा प्रश्न क्यों किया। मूढ़ को तो वैराग्य की व्याख्या करके समझाया जा सकता है। परन्तु जनक तो तत्वज्ञानी हैं। शायद जनक वैराग्य को प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं, क्योंकि वैराग्य को तो हम दोनों ही जानते हैं किन्तु उसका आचरण नहीं करते। इस प्रकार विचार कर याज्ञवल्क्य ने कहा कि राजन इस प्रश्न का उत्तर कल दूंगा।' और याज्ञवल्क्य घर जाकर अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति का बंटवारा दोनों पत्नियों में बराबर करना चाहा। जिस पर मैत्रेयी ने कहा कि हे प्राणानाथ ! मुझे लोक सम्पदा नहीं चाहिए। मुझे तो आप आध्यात्मिक उपदेश दीजिए जिससे मेरा कल्याण हो सके इस पर याज्ञवल्क्य ने सारी सम्पत्ति कात्यायनी को देकर मैत्रेयी को आध्यात्मिक उपदेश देते हुए मत्यु के रहस्य को समझाया।

प्रातः काल मैत्रेयी के साथ सन्यास धारण किया । यथासमय कौपीन धारण कर राजा जनक की सभा में जाकर उन्हें प्रणाम किया। राजा जनक ने विस्मित होकर पूछा कि यह क्या है? याज्ञवल्क्य ने कहा जनक यह तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। यही वैराग्य का सत्य स्वरूप है। जनक ने क्षमा मांगते हुए कहा कि मैं सत्यस्वरूप समझ गया हूं। अब आप शीघ्र ही इस वेश का त्याग करें। याज्ञवल्क्य ने कहा कि हे राजन ! जिस प्रकार मलमूत्र का त्यागकर पुनः उसकी ओर कोई भी दृष्टिपात की इच्छा नहीं करता। सरिता का जल पुनः पर्वत पर नहीं चढ़ता। इसी प्रकार की अनेक बातें समझाते हुए कहा कि मैं तो परमात्मा को धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने अनायास ही मुझे सांसारिक मोहमाया के बंधन से मुक्त किया है। अब पुनः इस संसार चक्र में नहीं फंसना चाहता। इस प्रकार जनक को उपदेश करते हुए राजर्षि पद को त्यागकर वे वन में गये और योग साधना में निरत हो गये।

याज्ञवल्क्य एक ब्रह्मनिष्ठ योगी थे। उन्होंने अभ्यास, वैराग्य के माध्यम से ज्ञानयोग की साधना करते हुए ब्रह्म को जाना और लोक में उसी का प्रचार

कर्ण के जीवन के तीन सबसे बड़े शाप: जिसने बदल दी महाभारत की दिशा

कर्ण, महाभारत के सबसे वीर और दानवीर योद्धाओं में से एक थे। लेकिन उनके जीवन में कई कठिनाइयाँ और शाप भी थे, जिन्होंने उनकी नियति को बदल दिया।

कर्ण को मिले तीन प्रमुख शापों ने महाभारत के युद्ध में उनकी हार का मार्ग प्रशस्त किया। आइए जानते हैं इन शापों के बारे में विस्तार से।

1. पृथ्वी माता का शाप

एक बार कर्ण यात्रा कर रहे थे, तभी उन्होंने रास्ते में एक कन्या को रोते हुए देखा। जब उन्होंने कारण पूछा, तो कन्या ने बताया कि उसका घी जमीन पर गिर गया है और यदि वह घी लेकर घर नहीं गई, तो उसकी सौतेली मां उसे दंड देगी। यह सुनकर कर्ण को दया आ गई। उन्होंने उस स्थान की मिट्टी को मुट्ठी में भरकर निचोड़ना शुरू किया ताकि घी वापस निकल आए। लेकिन यह देख पृथ्वी माता को अत्यंत कष्ट हुआ। उन्हें लगा कि कर्ण जबरदस्ती उनके तत्व को निचोड़ रहे हैं। इसलिए उन्होंने क्रोधित होकर कर्ण को शाप दिया— "जब तुम्हारा जीवन सबसे कठिन समय में होगा, जब तुम्हें सबसे अधिक मेरी आवश्यकता होगी, तब मैं तुम्हारा साथ नहीं दूँगी और तुम्हारे रथ का पहिया धरती में धंस जाएगा।"

यह शाप आगे चलकर कर्ण के लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ। महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन से उनका सामना हुआ, तब उनका रथ सच में धरती में धंस गया और वे असहाय हो गए।

2. गुरु परशुराम का शाप

कर्ण एक सूत पुत्र थे, लेकिन वे शस्त्र विद्या में निपुण बनना चाहते थे। उन्होंने परशुराम से शिक्षा प्राप्त करने की ठानी, लेकिन समस्या यह थी कि परशुराम केवल क्षत्रियों को ही शस्त्र विद्या सिखाते थे। इसलिए कर्ण ने झूठ बोलकर स्वयं को ब्राह्मण बताया और उनसे दिव्य अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा ले ली।

एक दिन जब परशुराम विश्राम कर रहे थे, तब कर्ण उनकी गोद में बैठकर उनकी सेवा कर रहे थे। तभी एक कीड़ा आकर कर्ण की जांघ पर काटने लगा, लेकिन कर्ण ने बिना हिले-डुले उस कष्ट को सहन किया ताकि उनके गुरु की नींद न टूटे। जब परशुराम की नींद खुली, तो उन्होंने देखा कि कर्ण की जांघ से रक्त बह रहा है। यह देखकर वे चौंक गए और समझ गए कि कोई ब्राह्मण इतना कष्ट सहन नहीं कर सकता।

तभी उन्हें कर्ण के झूठ का पता चला, जिससे वे अत्यंत क्रोधित हो गए। उन्होंने कर्ण को शाप दिया—

"जिस दिन तुम्हें अपने शस्त्रों और विद्या की सबसे अधिक आवश्यकता होगी, उसी दिन तुम अपनी सारी विद्या भूल जाओगे।"

महाभारत युद्ध में यह शाप सत्य सिद्ध हुआ। जब अर्जुन के साथ युद्ध के दौरान कर्ण को ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना था, तब वे इसे भूल गए और असहाय हो गए।

3. ब्राह्मण का शाप

एक दिन कर्ण शब्दभेदी बाण का अभ्यास कर रहे थे। अभ्यास के दौरान उन्होंने अनजाने में एक गाय का वध कर दिया। यह गाय एक ब्राह्मण की थी। जब ब्राह्मण को इस बात का पता चला, तो वह अत्यंत क्रोधित हुआ और कर्ण को शाप दिया—

"जैसे मेरी निर्दोष गाय को बिना कारण मार दिया गया, वैसे ही एक दिन तुम भी युद्धभूमि में असहाय होकर मारे जाओगे।"

महाभारत के युद्ध में यह शाप भी सच हुआ। जब कर्ण का रथ धरती में धंस गया और वे अपने शस्त्र भूल गए, तब वे पूरी तरह असहाय हो गए। तभी अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण के आदेश पर उन पर प्रहार किया और उनकी मृत्यु हो गई।

कर्ण की वीरता और दानशीलता के बावजूद, उनके जीवन के तीन बड़े शापों ने उनकी हार सुनिश्चित कर दी। महाभारत में यह दिखाया गया कि कैसे भाग्य, शाप और कर्म का गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि कर्ण को ये शाप न मिले होते, तो शायद महाभारत का परिणाम कुछ और ही होता। कर्ण का जीवन हमें यह सिखाता है कि सत्य से बढ़कर कुछ नहीं होता, और छल-कपट से मिली सफलता अंततः विनाश का कारण बनती है।

पत्नी को "वामांगी" क्यों कहा जाता है?

पत्नी को "वामांगी" कहा जाता है, जिसका अर्थ है पति के शरीर का बायां हिस्सा। हिंदू परंपरा में पुरुष का बायां भाग स्त्री का प्रतिनिधित्व करता है."वामांगी" शब्द का अर्थ है "बाएं हिस्से" या "शरीर का बायां भाग, पत्नी को ₹वामांगीर₹ इसलिए कहा जाता है, क्योंकि माना जाता है कि वह पति के बाएं हिस्से की स्वामिनी है। यह विश्वास हिंदू पुराणों से आता है, जहां यह कहा गया है कि स्त्री की उत्पत्ति भगवान शिव के बाएं अंग से हुई है। इसका प्रतीक शिव का अर्धनारीश्वर रूप है, जो पुरुष और स्त्री ऊर्जाओं के संगम को दर्शाता है।

पति-पत्नी के बाएं और दाएं हिस्से का प्रतीकात्मक महत्व:

1. हस्तरेखा विज्ञान और अन्य पारंपरिक विज्ञानों में माना जाता है कि पुरुष का दाहिना हाथ उसका स्वयं का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि बायां हाथ उसकी पत्नी का प्रतिनिधित्व करता है।

2. कुछ रीति-रिवाजों और दैनिक गतिविधियों जैसे सोते समय, सभा में बैठने, सिंदूर लगाने, भोजन करते समय, पत्नी को पति के बाएं ओर रहना चाहिए, क्योंकि इससे शुभ फल मिलता है। हालांकि, कुछ विशेष अवसरों पर इस नियम में अपवाद भी हैं।

पत्नी को कब दाएं ओर बैठना चाहिए?

1. धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, कन्यादान, विवाह, यज्ञ, जातकर्म, नामकरण और अन्नप्राशन जैसे पवित्र संस्कारों के दौरान पत्नी को पति के दाएं ओर बैठना चाहिए।

2. ये कार्य आध्यात्मिक या पारलौकिक (₹परलोकिकर₹) माने जाते हैं और पुरुष-प्रधान माने जाते हैं, इसलिए इन अवसरों पर पत्नी को दाएं ओर बैठने का नियम है।

बाएं और दाएं बैठने के पीछे का तर्क सांसारिक कार्य, जैसे घरेलू जिम्मेदारियां, स्त्री-प्रधान माने जाते हैं, इसलिए ऐसे कार्यों में पत्नी पति के बाएं ओर बैठती है।

1. आध्यात्मिक या धार्मिक कार्य, जैसे यज्ञ और विवाह, पुरुष-प्रधान माने जाते हैं, इसलिए इन कार्यों में पत्नी को दाएं ओर बैठने की सलाह दी जाती है।

2. यह व्यवस्था पुरुष और स्त्री की ऊर्जाओं के संतुलन को दर्शाती है।

पत्नी को ₹अर्धांगिनीर₹ क्यों कहा जाता है?

1. सनातन धर्म में पत्नी को ₹वामांगीर₹ के साथ-साथ ₹अर्धांगिनीर₹ भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है ₹आधा अंग।₹

2. दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है – पत्नी के बिना पति अधूरा माना जाता है।

3. पत्नी पति के जीवन को पूरा करती है, उसे खुशहाली और समृद्धि प्रदान करती है, और घर का ध्यान रखती है।

पति-पत्नी के संबंध का महत्व ग्रंथों मे पति-पत्नी के संबंध को हिंदू दर्शन में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

1. महाभारत में भीष्म पितामह ने कहा था कि पत्नी को सदैव प्रसन्न रखना चाहिए, क्योंकि वह ही वंश की वृद्धि का कारण है और वह घर की लक्ष्मी है।

2. यदि पत्नी प्रसन्न है, तो घर में समृद्धि और खुशहाली आती है।

3. अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी पत्नी के गुणों और उसके महत्व को विस्तार से समझाया गया है।

सफर के बाद पैरों में सूजन दर्द क्या कहता है आयुर्वेद शास्त्र

जो लोग ट्रैवल करते हैं लगभग 50 साल से ज्यादा वाले, उन लोगों के पैर में सूजन आ जाती हैं। जो रोजाना शराब पीते हैं और चिकन खाते हैं उनके पैरों में तो परमानेंट सूजन रहती हैं और वहां पर काला–काला रंग हो जाता है। इसके लिए हमारे क्या कहता हैं आयुर्वेद शास्त्र
एक चम्मच पुराना गुड + एक चम्मच अदरक से निकला हुआ रस = दोनों को मिलाकर दे दीजिए। अगर बकरी का दूध मिल जाए तो आधा गिलास जरूर पिला दे नहीं तो आवश्यकता भी नहीं है मात्र 3 दिन में सारी सूजन और कालापन दूर हो जाएगा।

बार-बार नहिं पाइये मनुष-जनम की मौज

"प्रपन्नपारिजाताय तोत्त्रवेत्रैकपाणये ।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः ॥"

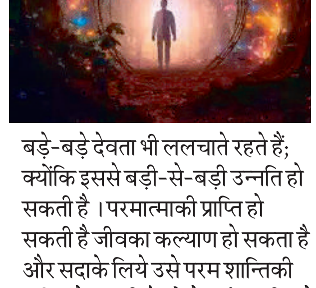

सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्म परमात्माको तथा संत-महापुरुषोंको सादर अभिवादन करके कुछ बातें कहनेकी चेष्टा करता हूँ। इन बातोंमें जो आपको अच्छी लगें, सुन्दर दीखें, उन बातोंको तो संत-महात्माओंकी, शास्त्रोंकी और भगवान्की माननी चाहिये तथा जो त्रुटियाँ हों, उन्हें मेरी । त्रुटियोंकी ओर ध्यान न देकर अच्छी बातोंकी ओर ध्यान दें, कारण, जो महापुरुषोंके और भगवान्के वचन हैं, वे मेरे और आपके लिये परम हित करनेवाले हैं, उन वचनोंके अनुसार आचरण करनेसे निश्चित कल्याण होता है । आप आचरण करेंगे तो आपका हित और कल्याण है तथा मैं करूँगा तो मेरा कल्याण है ।

सबसे पहली एक विशेष ध्यान देनेकी बात यह है कि यह मानव-जीवनका समय बहुत ही दुर्लभ है और बड़ा भारी कीमती है, श्रीमद्भागवतमें बताया है

"दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः ।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम् ॥"

'दुर्लभो मानुषो देहः' यह मनुष्यसम्बन्धी देहयह मानव-शरीर अत्यन्त दुर्लभ है । इसकी प्राप्तिके लिये बड़े-बड़े देवता भी ललचाते रहते हैं; क्योंकि इससे बड़ी-से-बड़ी उन्नति हो सकती है । परमात्माकी प्राप्ति हो सकती है जीवका कल्याण हो सकता है और सदाके लिये उसे परम शान्तिकी प्राप्ति हो सकती है । ऐसे दुर्लभ शरीरको प्राप्त करके जो इसे व्यर्थ ही खो देता है, उसे फिर बड़ा पश्चात्ताप करना पड़ता है; क्योंकि यह सर्वथा अलभ्य, अमूल्य है । अतः इस मनुष्य-जीवनके एक-एक क्षणको ऊँचे-से-ऊँचे काममें बितानेकी चेष्टा करनी चाहिये । समयके समान कोई अमूल्य वस्तु नहीं है । संसारमें लोग पैसोंको बड़ा कीमती समझते हैं, आवश्यक समझते हैं, किंतु विचार कीजिये, जीवनका समय देनेसे तो 'पैसे' मिल जाते हैं, पर पैसे देनेसे यह 'समय' नहीं मिलता है हमारे जीवनके लिये हमारे पास हजारों, लाखों, करोड़ों रुपये रहनेपर भी यदि हमारी आयु नहीं है तो हमें मरना पड़ता है, किंतु यदि हमारी आयु बाकी हो और हमारे पास एक भी कौड़ी न हो, तो भी हम जी सकते हैं।

नारायण ! नारायण !!

मरणासन्न व्यक्ति के लिए कल्याणकारी कर्म

सब से पहले भूमि को गोबर से लेपना चाहिए। फिर जल की रेखा से मंडल बना कर , उस पर तिल और कुश घास बिछा कर मरणासन्न व्यक्ति को उस पर सुला देना चाहिए । उस के मूंह में पंचरत्न / स्वर्ण आदि डालने से सब पापों को जला कर मुक्त कर देता है । भूत , प्रेत आत्माएं और यम के दूत अपवित्र स्थान और ज़मीन के ऊपर रखी चारपाई से मृत शरीर में प्रवेश करते हैं।

उस के मूंह में गंगा जल डालना चाहिए , अथवा तुलसी का पत्ता रखना चाहिए।

कोई भी शोक न मनाता हुआ ,उस के पास प्रभु का नाम ले।

जब तक प्राण हैं , विष्णु का नाम ले।

यमराज का अपने दूतों को आदेश है कि मेरे पास उन आत्माओं को लाओ जो "हरी" का नाम नहीं लेते।

"ॐ", " हरी" को जपने वाले मेरे पास नहीं आते । पापी मनुष जो नारायण को नहीं मानते , उनके कितने ही पुन्य कर्म उन के पापों को नहीं मिटा सकते।

हे गरुड़, जाने या अनजाने में मनुष , जो भी पाप करते हैं, उन पापों की शुद्धि के लिए उन्हें प्रायश्चित करना चाहिए / शाश्त्रों में दशविधि स्नान , चन्द्राय्न्ना व्रत , गौ दान , आदि का लेख किया गया है । यदि मनुष उन में क्षमता के कारण सफल न हो रहा हो तो कम से कम चौथाइ प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए । तत्पश्चात 10 महादान ,गौ, भूमि ,तिल, स्वर्ण घी, वस्त्र , गुड़ ,रजत , लवण , इन का दान करना चाहिए । यह पाप की शुद्धि के लिए ,पवित्रता में एक से एक बढ़ कर हैं।

यमदुआर पर पहुँचने के जो मार्ग बताये गए हैं , वह अत्यंत दुर्गन्धिक, मवाद ,रक्त आदि से परिव्याप्त हैं। अतः उस मार्ग में स्थित वैतरणी नदी को पार करने के लिए वैतरणी- गौ (जो गौ सर्वांग में काली हो और जिस के थन भी काले हों) का दान करने चाहिए। यह सब उत्तम प्रकृति वाले ब्राह्मण को देना चाहिए।

पद दान का महत्व

छत्र, जूता, वस्त्र ,अंगूठी ,कमंडलू ,आसन, पात्र और भोजन पदार्थ , यह आठ प्राकर के पद दान हैं। तिल पात्र, घृत पात्र, शय्या , तथा और जो अपने को ईष्ट हो, देना चाहिए।

हे पक्षी राज , इस पृथ्वी पर जिस ने पाप का प्रायश्चित कर लिया है ,सब प्रकार के दान भी दे चूका है, वैतरणी -गौ तथा अष्ट दान कर चूका है , जो तिल से पूर्ण पात्र , घी से भरा पात्र ,शय्या दान और विधिवत पद दान करता है, वह नर्क रुपी गर्भ में नहीं आता ,अर्थात उस का पुनर्जन्म नहीं होता।

मनुष स्वय जो दान करता है , परलोक में वह सब उसे प्राप्त होता है। वहां उस के आगे रखा हुआ मिलता है। छत्र दान करने से मार्ग में सुख प्रदान करने वाली छाया प्राप्त होती है।

पादुका दान से वह मनुष्य घोड़े पर सवार हो कर सुखपूर्वक मार्ग पार करता है।

जल से परिपूर्ण कमंडलू के दान से मनुष्य सुख पूर्वक परलोक गमन करता है।

वस्त्र - आभूषण दान करने से यम दूत प्राणी को कष्ट नहीं देते।

तिल(सफ़ेद , काले ,भूरे) के दान से , मन ,वाणी ,और शरीर से किये हुए पाप नष्ट होते हैं।

सभी साधनों से युक्त शय्या दान से स्वर्ग लोक में 60000 वर्ष तक , इंद्र लोक के भोग भोगता है।

इस के अतिरिक्त ,गौ दान देते समय "नान्दानान्दानाम " के उच्चारण करने से वैतरणी नदी में नहीं गिरता ।

दुखद , और बिमारी के समय , तिल, लोहा, सोना, रुई का वस्त्र, नमक, सात अनाज, भूमि का टुकड़ा, देने से पाप कर्मों की शुद्धि होती है।

लोहा दान करने से, यम की नगरी में नहीं जाता। लोहे का दान , हाथों को जमीन के साथ छूते हुए देना चाहिए। यम राज के हाथों में कई प्रकार के लोहे के अस्त्र होते हैं । यह दान उन अस्त्रों के प्रभाव को कम करता है।

सोने का दान, यम राज की सभा में उपस्थित , ब्रह्मा,और दुसरे ऋषि मुनिओं को प्रसन्न करता है जो की वरदान की संज्ञा रखता है।

रूई के वस्त्र से यमदूत , कष्ट नहीं देते।

सात अनाजों के दान से , यम दूआरों पर तैनात कर्मचारी आनन्दित होते हैं ।

भूमि के टुकड़े पर,जिस पर फसल हो , देने से इंद्र लोक की प्राप्ति होती है।

पूरे होश में रहते हुए , एक गौ का दान , बीमार अवस्था में एक सो (100) और मरणासन्न के समय एक हजार गौ दान करने के बराबर है।

एक गौ केवल एक जन को ही दी जानी चाहिए । वह यदि इस गौ को बेचता है या किसी दुसरे के साथ इस का बटवारा करता है , तो उस का परिवार सात पीढयों तक पीड़त रहता है।

गौ दान करने की विधि

काली या भूरी गौ के सींगों पर सोने का पत्र , और पैरों में चांदी पहनाएं।

इस का दूध पीतल के बर्तन में निकालें।

गौ के ऊपर काले कपडे का दोशाळा डाले।

दूध वाले बर्तन को ढक कर, रूई के ऊपर रखें ।इस के पास यमराज की एक सोने की मूर्ती , एक लोहे का टुकड़ा , पीतल के बर्तन में घी, यह सब गौ के ऊपर रखें।

गन्ने की पौरिओं से , रेशम की डोर से बंधा एक फट्टा बना कर , धरती में एक गड्ढा बना कर, पानी से भरें और फट्टा को इस में रखें।

गौ की पूंछ पकड़ कर ,पैर फट्टा पर रख कर ,ब्राह्मिन को दान- दक्षिणा , नमस्कार करके , मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवान विष्णु से नम्र प्रार्थना करें की हे प्रभु , आप सब प्रानिओं के दाता , रक्षक और कल्याणकारी हैं। आपके चरणों में यह उपहार भेंट करता हुआ , वेतारनी नदी को नमस्कार करता हूँ। हे गौ माता, आप देवी शक्ति के रूप में, मेरे पापों का खंडन करें। फिर हाथ जोड़े हुए, यम राज को गौ की प्रतिमा में देखते हुए, इन सब के गिर्द एक चक्कर लगा कर ब्राह्मिन को दान में दें।

गौ दान के लिए शुभ समय, स्थान

सभी नहाने वाले पवित्र स्थल
सन्त-ब्राह्मणों के निवास स्थान
सूर्य , चन्द्र ग्रहण
*नये चाँद वाले दिन *

थोड़ी सम्पति, धन अपने हाथों से दान में दी हुई का प्रभाव सदा ही रहता है। धन, सम्पति , पत्नी, परिवार, सब विनाश होने वाले हैं इस लिए पुण्य कर्मों को संचित करो। पुण्य - दान , छोटे-बड़े से मेरे को कोई फर्क नहीं पड़ता ।

लालच के कारण जो पापी लोग , बीमारीओं में पुण्य - दान नहीं करते, वह सदा दुखी ही रहते हैं. ।

पुत्र, पौत्र, भाई, बन्धु , मित्र, जो मरणासन्न व्यक्ति के लिए, दान पुण्य नहीं करते, उन्हें ब्रह्म हत्या तुल्य पाप लगता है ।

इन बताए गये सभी प्रकार के दानों में प्राणी की श्रद्धा और अश्रद्धा से आई हुई दान की अधिकता और कमी के कारण उस के फल में श्रेष्ठता और लघुता आती है ।

भूमि पर बने इस मंडल में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, लक्ष्मी तथा अग्नि देवता विराजमान हो जाते हैं। अतः मंडल का निर्माण अवश्य करना चाहिए। मंडलवहींन भूमि पर प्राणत्याग करने पर, उसे अन्य योनी नहीं प्राप्त होती। उस की जीव आत्मा वायु के साथ भटकती रहती है।

तिल मेरे पसीने से उत्पन्न हुए हैं। इसका प्रयोग करने पर असुर, दानव, दैत्ये भाग जाते हैं। एक ही तिल का दाना स्वर्ण के बतीस सेर तिल के बराबर हैं।

कुश मेरे शरीर के रोमों से उत्पन्न हुए हैं। कुश के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु, तथा अग्र भाग में शिव को जानना चाहिए। इसलिए देवताओं की त्रप्ति के लिए मुख्य रूप से "कुश" को , और पितरों की तृप्ति के लिए "तिल " का महत्व है।

हे पक्षी श्रेष्ठ , विष्णु, एकादशी व्रत , गीता , तुलसी, ब्राह्मिन और गौ ,यह छे , दुर्गम असार- संसार में लोगों को मुक्ति प्रदान करने के साधन हैं। अंतिम साँसों में "ओ गंगा, ओ गंगा , भागवत गीता के शलोक अथवा "हरी" का नाम जपने से मंगल कारी होता है।

मृतु काल में मरणासन्न के दोनो हाथों में "कुश" रखना चाहिए / इससे प्राणी विष्णु लोक को प्राप्त होता है।

लावनारस, पितरों को प्रिय होता है अथवा स्वर्ग प्रदान करता है।

उस के समीप, तुलसी का पेड़, शालग्राम की शिला (सभी पापों को नष्ट करती है), भी लाकर रखें। जिस घर में तुलसी स्थल बना कर तुलसी की पूजा होती है वह एक पवित्र नहाने का स्थान माना जाता है और यम के दूत वहां नहीं आते।

इसके बाद यथा विधान सूतकों का पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से मृत्यु मुक्ति दायक होती है।

शोक न मनाते ,पुत्र को सर मुंडवा कर नए वस्त्र धारण कर , अपने प्रियजनों के साथ लाश को नहलाना चाहिए।

इसके बाद मरे हुए व्यक्ति के शरीरगत विभिन स्थानों में (मुख, नाक के छिदर ,नेत्र , कान , लिंग, ब्रह्माण्ड) पर सोने की शालाखें रखें।

उसके शव को दो वस्त्रों से आच्छादित करके कुंकुम और अक्षत से पूजन करना चाहिए ।

घर की बहुरानी और दूसरों को लाश की परिक्रमा कर उसे पूजन चाहिए और मरण स्थल पर चावल की खील (लाइ) अर्पित करना चाहिए। ऐसा करने से धरती माता और दिव्य शक्तियां प्रसन्न होती हैं ।

पुष्पों की माला से विभूषत करके , उसे पुत्र , बंधुओं के साथ दुआर से ले जाया जाए। उस समय पुत्र को मरे हुए पिता के शव को कंधे पर रख कर स्वयं ले जाना चाहिए। यदि मनुष को मोक्ष न मिलता हो , तो पुत्र नर्क से उसका उद्धार कर देता है। जो पुत्र लाश को कन्धा देता है, उसे हर कदम पर अश्व मेघ यघ का फल मिलता है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शालीमार बाग का दौरा कर निरीक्षण किया

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

दिल्ली : मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शालीमार बाग बीडब्ल्यू ब्लॉक का दौरा कर निरीक्षण किया। अधिकारियों को निवासियों की लंबित चिंताओं को हल करने के लिए निर्देशित किया गया था और आम जनता और जानवरों दोनों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए आवारा कुत्तों के मुद्दे को दूर करने के लिए एक व्यापक नीति बनाने के आदेश दिए गए थे।

[उन्होंने शालीमार बाग के बीडब्ल्यू ब्लॉक का निरीक्षण करते हुए कहा जहां भी आवश्यक हो, तत्काल जीर्णोद्धार (रीस्टोरेशन) कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया और अधिकारियों को एक महीने के अंदर वृक्षारोपण अभियान पूरा करने का निर्देश दिया।

गुप्ता ने कहा, 'जनता की छोटी-छोटी समस्याओं का भी पूरी प्रतिबद्धता से समाधान किया जाएगा। हर अधिकारी की जिम्मेदारी और जवाबदेही स्पष्ट रूप से परिभाषित की जाएगी, ताकि तुरंत समाधान सुनिश्चित हो सके।' एक्स पर एक पोस्ट में मुख्यमंत्री ने कहा, 'शालीमार बाग के बीडब्ल्यू ब्लॉक में जल बोर्ड, एमसीडी और पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों के साथ स्थल पर पहुंचकर स्थानीय जनता की समस्याओं को सुना और उनके त्वरित समाधान करने के लिए अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए। जनता की छोटी से छोटी समस्या का निवारण करने के लिए हम पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। प्रत्येक अधिकारी की जिम्मेदारी और जवाबदेही स्पष्ट रूप से तय की जाएगी, और हर समस्या का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाएगा।'

एक्स पर दूसरे पोस्ट में उन्होंने लिखा, 'एसी ब्लॉक, शालीमार बाग में जल आपूर्ति व्यवस्था का जायजा लिया, अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण चर्चा की और स्थानीय निवासियों की समस्याएँ सुनीं। जनता को बेहतर जल सेवाएं प्रदान करने के लिए हर आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं, और सुधार कार्य शीघ्र पूरे किए जाएंगे। दिल्ली में स्वच्छ और निर्बाध जल आपूर्ति सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता और जिम्मेदारी है।'

दिल्ली की शिक्षा मॉडल में होगा बदलाव, सेफ स्कूल गाइडलाइंस समेत इन चीजों पर रहेगा जोर

दिल्ली सरकार आगामी विकसित दिल्ली बजट में स्कूलों की व्यवस्थाओं में बड़ा बदलाव लाने की तैयारी कर रही है। सेफ स्कूल गाइडलाइंस जारी कर स्कूलों के आसपास के माहौल को बेहतर बनाया जाएगा और बच्चों के लिए डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित की जाएंगी। इस बजट में शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने पर फोकस रहेगा।

नई दिल्ली। आने वाले समय में दिल्ली के स्कूलों की व्यवस्थाओं में बड़ा बदलाव देखने की मिल सकता है। स्कूलों के आसपास के माहौल को बेहतर बनाने के लिए सेफ स्कूल गाइडलाइंस जारी हो सकती हैं और बच्चों के लिए डिजिटल लाइब्रेरी भी स्थापित की जा सकती हैं। दिल्ली सरकार आगामी विकसित दिल्ली बजट में इस तरीके के प्रविधान कर सकती है। बुधवार को दिल्ली सचिवालय में शिक्षाविदों के साथ विकसित दिल्ली बजट को लेकर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के साथ हुई बैठक में इस तरीके के सुझाव सामने आए हैं।

जिसमें दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने को लेकर फोकस किए जाने पर चर्चा हुई है। यहां तक कि शिक्षाविद सीबी मिश्रा ने यमुना की सफाई से लेकर पार्कों को बेहतर बनाने तक को स्कूलों के बच्चों की मदद लेने तक के सुझाव दिए हैं।

उनका मानना है कि इससे बच्चे अपनी जिम्मेदारी समझेंगे और शहर के विकास में भी योगदान दे सकेंगे ।इस तरीके के कार्यक्रमों से बच्चों में अपने शहर के प्रति सम्मान की भावना भी बढ़ेगी।

पूर्व में स्कूलों को मिलीं आतंकी धमकियों को लेकर भी बैठक में चर्चा हुई और इस तरह की समस्याओं से निपटने को लेकर भी आगामी बजट में प्रविधान करने की बात हुई है। वरिष्ठ शिक्षाविद भरत अरोरा कहते हैं कि स्कूलों को मिल नहीं धमकियां उक गंभीर मुद्दा है।

इसे लेकर काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि स्कूलों के आसपास माहौल इस तरह का होना चाहिए कि सुरक्षा की दृष्टि से वहां किसी प्रकार की गतिविधियों को मंजूरी नहीं मिलनी चाहिए। दिल्ली में जो स्थिति पूर्व में हुई है। उसके बाद से सेफ स्कूल गाइडलाइंस यानी स्कूलों के बाहर की व्यवस्थाओं को लेकर दिशा निर्देश जारी किए जाने की समीक्षा किया जाना जरूरी है और इसे लेकर बजट में प्रविधान भी किए जाने चाहिए। स्कूलों के लोगों को प्रशिक्षण भी इसमें शामिल है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इस मौके पर कहा कि हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो देश में सर्वोत्तम हो। इस दिशा में हम निरंतर प्रयासरत हैं। मुख्यमंत्री ने आए सुझावों को सकारात्मक पहल बताते हुए कहा कि वर्षों से चली आ रही चुनौतियों पर खुलकर चर्चा हुई है और कई महत्वपूर्ण सुझाव सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि यह संवाद दिल्ली के समग्र विकास और आगामी बजट को और प्रभावी बनाने में सहायक होगा ।उन्होंने कहा कि हमारी ईमेल आईडी और व्हाट्सएप नंबर पर सैकड़ों सुझाव प्राप्त हो रहे हैं। हमारी टीम उन सभी सुझावों की समीक्षा कर रही है ताकि दिल्ली की जनता को एक सर्वश्रेष्ठ बजट प्रदान किया जा सके।

गुप्ता ने आश्वासन दिया कि यह बजट दिल्ली के नागरिकों का बजट होगा, जो राजधानी की समृद्धि और शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करेगा। उन्होंने कहा कि हम इसे जनता के बजट के रूप में पेश करेंगे, जिससे हर नागरिक को यह महसूस हो कि यह वास्तव में उनकी आकांक्षाओं का बजट है।

चुनाव में किरण बेदी को शिकस्त देने वाले पूर्व विधायक बग्गा का निधन

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। पहली महिला आईपीएस किरण बेदी को कृष्णा नगर सीट से हराने वाले आम आदमी पार्टी के पूर्व विधायक एसके बग्गा का निधन हो गया। वह पिछले कई माह से किडनी समेत कई बीमारियों से जूझ रहे थे। बुधवार दोपहर करीब 12:30 बजे उन्होंने बीएल कपूर अस्पताल में आखिरी सांस ली।

शाम को गीता कालोनी शमशान घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं व कार्यकर्ताओं ने उनके निधन पर दुख जाहिर किया। एसके बग्गा पेशे से वकील थे। वह अन्ना आंदोलन के दौरान अरविंद केजरीवाल के संपर्क में आए थे।

आम आदमी पार्टी के गठन के दौरान ही वह पार्टी से जुड़ गए थे। वर्ष 2015 में कृष्णा नगर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़े थे और इसी सीट से भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री का चेहरा रही किरण बेदी को चुनाव में हराया था। वर्ष 2020 के चुनाव में भाजपा उम्मीदवार डॉ. अनिल गोयल को चुनाव में शिकस्त दी थी। वर्ष 2025 के चुनाव में एसके बग्गा ने स्वास्थ्य कारणों से चुनाव लड़ने से मना कर दिया था। जिसके बाद पार्टी ने उनके बेटे विकास बग्गा को चुनाव में उतारा था, लेकिन वह चुनाव हार गए थे।

विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान ही एसके बग्गा की तबीयत बिगड़ती चली गई थी। उनके निधन पर पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि एसके बग्गा ने अपना पूरा जीवन जनता की सेवा में लगा दिया। उनकी संवेदनाएं शोकाकुल परिवार के साथ हैं। कृष्णा नगर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र उत्तर भारत में दिल्ली के सत्तर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। कृष्णा नगर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र पूर्वी दिल्ली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का एक हिस्सा है। 2015 के विधानसभा चुनाव में आप के एस.के. बग्गा ने भाजपा की सीएम उम्मीदवार किरण बेदी को 2277 वोटों से हराया था।

यमुना नदी की सफाई को लेकर एक्शन मोड में सरकार, निरीक्षण करने पहुंचे मंत्री प्रवेश वर्मा

सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण मंत्री ने किया यमुना का निरीक्षण

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली के सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण मंत्री प्रवेश वर्मा ने बुधवार को नाव से यमुना का निरीक्षण किया और कहा कि पिछले 10 दिन में नदी से 1,300 मीट्रिक टन कचरा निकाला गया है। बाद में, उन्होंने सफाई कार्यों की प्रगति का आकलन करने के लिए अधिकारियों के साथ एक बैठक की और कहा, दिल्ली के सभी नालों को सीवेज उपचार संयंत्रों (एसटीपी) से जोड़ा जाएगा और उनकी क्षमता बढ़ाई जाएगी ताकि अपशिष्ट जल को नदी में बहने से रोका जा सके। बता दें कि भाजपा ने हाल में संपन्न दिल्ली विधानसभा चुनाव में यमुना की सफाई का वादा किया था। उन्होंने लोगों को आश्वासन दिया कि सीवेज उपचार संयंत्र से संबंधित शिकायतों का समाधान किया जाएगा और दो साल के भीतर सभी एसटीपी स्थापित किए जाने की उम्मीद है। वर्मा ने कहा, 2023 में दिल्ली को बाढ़ का सामना करना पड़ा। पहले सभी जलद्वार बंद कर दिए गए थे, लेकिन अब भविष्य में बाढ़ को रोकने के लिए उनकी मरम्मत कर दी गई है और उन्हें ऊंचा कर दिया गया है। मंत्री ने कहा कि हमारी सबसे बड़ी प्रतिबद्धता यमुना को पूरी तरह से साफ करना और उसका पुनरुद्धार करना है। पिछले 10 दिन में 1,300 मीट्रिक टन कचरा निकाला जा चुका है। दिल्ली विकास प्राधिकरण नदी के तल को बहाल करेगा और अतिक्रमण हटाया जा रहा है। भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करते हुए वर्मा ने कहा कि रासायनिक अपशिष्टों का उचित निस्तारण सुनिश्चित करने के लिए औद्योगिक क्षेत्रों में सामान्य उपचार संयंत्र स्थापित किए जाएंगे। मंत्री ने कहा कि इसके अलावा, बाढ़ को रोकने के लिए आईटीओ बैराज द्वारों पर सुरक्षा दीवारों की मरम्मत और ऊंचाई बढ़ाने का काम भी जारी है। उन्होंने कहा कि नदी तटों की सफाई और हरित क्षेत्र विकसित करने के लिए विशेष अभियान भी चलाए जा रहे हैं। वर्मा ने कहा कि हमने दिल्ली विकास प्राधिकरण को यमुना रिवरफ्रंट विकसित करने का निर्देश दिया है, जिससे नदी तट एक पर्यटन और सांस्कृतिक केंद्र में बदल जाएगा। उन्होंने दावा किया कि पिछले दशक में नदी की सफाई के लिए कोई महत्वपूर्ण काम नहीं किया गया, यहां तक कि कागजों पर भी कुछ नहीं किया गया। वर्मा ने कहा कि पिछली सरकार को यमुना के लिए काम करने का ख्याल भी नहीं आया। लेकिन अब, न केवल दिल्ली सरकार बल्कि खुद प्रधानमंत्री कार्यालय भी इसमें शामिल है।

यूथ कांग्रेस के पूर्व नेता सवा करोड़ रुपये की हेरोइन और पिस्टल के साथ गिरफ्तार

दिल्ली की आनंद विहार थाना पुलिस ने यूथ कांग्रेस के पूर्व नेता आसिफ चौधरी को 1.10 करोड़ रुपये की हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया है। उसके पास से 9mm की पिस्टल और पांच कारतूस भी बरामद हुए हैं। आरोपी को सीबीडी ग्राउंड स्थित लीला होटल के पास से गिरफ्तार किया गया। पुलिस को सूचना मिली थी कि हेरोइन तस्करी में शामिल एक शख्स होटल के पास आने वाला है।

दिल्ली। आनंद विहार थाना पुलिस ने यूथ कांग्रेस के पूर्व नेता आसिफ चौधरी को 1.10 करोड़ रुपये की हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित को उस वक्त गिरफ्तार किया जब वह ओडिशा नंबर की कार लेकर पांच सितारा होटल से बाहर निकल रहा था। पुलिस ने इसके पास से 4.61 ग्राम हेरोइन व नौ एमएम की एक पिस्टल और पांच कारतूस बरामद किए हैं। जो पिस्टल बरामद हुई है, वह गैंगस्टर इस्तेमाल करते हैं। सूत्रों का कहना है कि पकड़े जाने के बाद भी आरोपित की अकड़ नहीं गई, वह नेताओं का रौब दिखाकर जल्द ही छूट जाने की धमकी पुलिस को दे रहा है।

पुलिस टीम ने होटल के पास जाल बिछा कर धर दबोचा : जिला पुलिस उपायुक्त प्रशांत गौतम ने बताया कि मंगलवार को सूचना मिली थी कि हेरोइन तस्करी में शामिल एक शख्स सीबीडी ग्राउंड स्थित लीला होटल के पास आने वाला है। रात में एसआई अविनाश, दीपक कुमार, हेड कांस्टेबल सोनू व विकास की टीम बनाई गई।

टीम ने होटल के पास अपना जाल बिछाया। एक स्कोडा कंपनी की आक्टाविया कार होटल से बाहर आती हुई दिखाई दी। पुलिस ने जांच के लिए चालक को रोका और कार की तलाशी लेने अंदर से हेरोइन व पिस्टल बरामद हुई। आरोपित की पहचान सीलमपुर निवासी आसिफ चौधरी के रूप में हुई।

पहले कांग्रेस में था और उसके बाद कई पार्टियां बदली : आरोपित ने पुलिस (Delhi Police) को पूछताछ में बताया कि उसने हेरोइन उत्तर पूर्वी जिले में रहने वाले फैज नाम के शख्स से खरीदी थी। पुलिस पता लगा रही है उसे यह हेरोइन किसे देनी थी और पिस्टल कहां से खरीदी थी। आरोपित पर वर्ष 2019 में सीलमपुर थाने में हत्या के प्रयास व गीता कालोनी थाने में आर्म्स एक्ट में केस दर्ज है। पुलिस ने इसका फेसबुक खंगाला तो पता चला यह अक्सर केंद्रीय मंत्री, राज्यसभा सदस्य, सांसद, बिहार व उत्तर प्रदेश और दिल्ली व उत्तराखंड के मंत्रियों से उनके कार्यालय व आवास पर जाकर मिलता था, उनके साथ फोटो खिंचवाता था। पहले यह कांग्रेस में था और उसके बाद इसने कई पार्टियां बदली। मौजूदा वक्त में देहरादून व नोएडा में रेस्तरा चला रहा था। पुलिस पता लगा रही मादक पदार्थ की तस्करी में किसी बड़े नेता का तो हाथ नहीं है।

नरेन्द्र मोदी: भारत के सपनों का रक्षक, देशवासियों का अभिभावक

भारत की राजनीति में अनेक शासक आए और गए, परंतु कुछ विरले ही होते हैं जो केवल पद पर आसीन नहीं होते, बल्कि जनमानस के हृदय में अपनी अमिट छवि अंकित कर देते हैं। नरेन्द्र मोदी मात्र एक प्रधानमंत्री नहीं, अपितु भारत के जन-जन के अभिभावक हैं—एक ऐसे नेतृत्वकर्ता, जिन्होंने शासन को शुष्क नीतियों तक सीमित न रखते हुए उसे लोकजीवन की आत्मा से जोड़ा है। वे न केवल देशवासियों की मूलभूत आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं, बल्कि उनके स्वाभिमान, स्वास्थ्य, संस्कृति और आत्मनिर्भरता को भी अपने नेतृत्व की आधारशिला बनाते हैं। उनके कुशल निर्देशन में भारत केवल आर्थिक और तकनीकी रूप से समृद्ध नहीं हुआ, बल्कि एक आत्मगौरव से ओत-प्रोत, आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में वैश्विक क्षितिज पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ। यह लेख उस अद्वितीय नेतृत्व के प्रति एक विनम्र अभिवादन है, जो न केवल भारत के उत्थान की कहानी लिख रहा है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक अमिट धरोहर भी छोड़ रहा है।

नरेन्द्र मोदी ने भारत को स्वस्थ और समृद्ध बनाने की जो दूरदृष्टि संजोई, उसे मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने ऐसे कदम उठाए, जो युगों तक प्रभाव छोड़ने वाले हैं। इनमें सर्वाधिक प्रशंसनीय है 'मोटे अनाज' अथवा 'श्री अन्न' को पुनर्जन्म और गौरव प्रदान करने की उनकी अनुपम पहल। बाजरा, ज्वार, रागी, कोदो और सांवा जैसे प्राचीन अनाज, जो कभी भारतीय भोजन का शिरोभूषण थे, कालांतर में उपेक्षा के अंधेरे में खो गए थे। किंतु मोदी ने इन अनाजों को न केवल नवजीवन प्रदान किया, अपितु वैश्विक पटल पर इन्हें 'सुपरफूड' के रूप में प्रतिष्ठित कर एक अद्भुत कीर्तिमान स्थापित किया। यह कोई साधारण नीति नहीं थी, बल्कि एक सांस्कृतिक और स्वास्थ्य-संपन्न क्रांति का प्रारंभ था।

उन्होंने 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष' के रूप में मनाने का संकल्प लिया और संयुक्त राष्ट्र से इसे स्वीकृति दिलाकर अपनी वैश्विक सोच का परिचय दिया। यह उनकी दूरदर्शिता का जीवंत प्रमाण है कि वे केवल भारत की सीमाओं तक नहीं ठहरे, बल्कि समस्त विश्व को स्वस्थ जीवन-पथ का दर्शन कराया। मोटे अनाज को उन्होंने 'पोषण का अमृत भंडार' कहकर सम्मानित किया और स्वयं अपने आहार में समाहित कर एक प्रेरक आदर्श प्रस्तुत किया। उनकी यह पहल सरकारी कागजों तक सीमित न रही, बल्कि जन-जन के जीवन में समा गई। आज ग्रामीण अंचलों से लेकर नगरीय रसोई तक, लोग इन अनाजों को हृदय से अपनाने लगे हैं। इससे एक ओर किसानों को आर्थिक समृद्धि का आधार मिला, तो दूसरी ओर जनसामान्य को मोटापा, मधुमेह और हृदय रोग जैसी आधुनिक आपदाओं से बचाव का प्राकृतिक संजीवनी प्राप्त हुई।

प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि केवल पोषण के दायरे तक संकुचित नहीं है। उन्होंने देश में जीवनशैली से उत्पन्न होती विकट व्याधियों—मोटापा, उच्च रक्तचाप, मानसिक तनाव और मधुमेह—के प्रति जनमानस को जागृत करने का पवित्र संकल्प लिया। उनकी 'फिट इंडिया मूवमेंट' इस संकल्प की एक युगांतरकारी पहल है। इस अभियान के माध्यम से उन्होंने देशवासियों को एक ओजस्वी आह्वान किया कि वे अपने स्वास्थ्य को परम प्राथमिकता मानें। नियमित व्यायाम, संतुलित भोजन और सकारात्मक जीवन-पद्धति को अंगीकार करने का उनका संदेश केवल वाणी तक सीमित न रहा; इसे विद्यालयों, महाविद्यालयों, सरकारी कार्यालयों और निजी संस्थानों ने उल्लासपूर्वक आत्मसात किया।

उनका एक और अनमोल रत्न-तुल्य योगदान है योग को वैश्विक गौरव प्रदान करना। योग, जो भारत की प्राचीन सांस्कृतिक निधि है, उसे उन्होंने केवल शारीरिक कसरत नहीं, अपितु मन, शरीर और आत्मा के संनाद का सशक्त साधन बनाया। 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मान्यता दिलवाकर उन्होंने विश्व को एक ऐसी जीवन-शैली भेंट की, जो आधुनिक तनाव और रोगों से मुक्ति का स्वर्णिम पथ प्रशस्त करती है। स्वयं योग का अभ्यास करते हुए और इसे जन-जन के हृदय तक पहुँचाते हुए उन्होंने यह प्रमाणित कर दिखाया कि सच्चा संरक्षक वही है, जो अपने लोगों को स्वस्थ और सबल जीवन की ओर प्रेरित करे। आज विश्व के हर कोने में योग का प्रकाश फैल रहा है, और यह भारत के लिए परम गर्व का विषय है कि इस महान संकल्प के पीछे नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा और दृढ़ निश्चय है।

नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व अनन्य और अनुपम है, क्योंकि वे जनमानस से हृदयस्पर्शी संवाद स्थापित करते हैं। उनका 'मन की बात' कार्यक्रम इसी आत्मीयता का प्रतीक है। इसके माध्यम से वे अपनी नीतियों और योजनाओं को साझा करने के साथ देशवासियों को प्रेरित करते हैं, उनके प्रयासों को सम्मान देते हैं और उन्हें राष्ट्र-निर्माण में सहभागी बनाते हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान जब उन्होंने मास्क पहनने, हाथ धोने और सामाजिक दूरी बनाए रखने की अपील की, तो इसे शासकीय आदेश नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक की संवेदनशील सलाह के रूप में स्वीकार किया गया। यही जनसंपर्क की उनकी विशिष्ट शैली है, जिसने भारत को इस संकट का साहसपूर्वक सामना करने में सक्षम बनाया।

उनके प्रति जनता का अटूट विश्वास केवल नीतियों के परिधि तक सीमित नहीं है। जब वे स्वच्छता अभियान का संदेश देते हैं, तो लोग संकोच छोड़ झाड़ू थाम लेते हैं; जब वे डिजिटल भारत का स्वप्न साझा करते हैं, तो जन-जन तकनीक को आत्मसात कर लेता है। यह असीम श्रद्धा इसलिए है, क्योंकि जनता उन्हें एक ऐसे युगनायक के रूप में देखती है, जो उनके कल्याण को सर्वोच्च मानता है। उनकी प्रत्येक योजना—चाहे वह आयुष्मान भारत हो, उज्ज्वला योजना हो, अथवा स्वच्छ भारत मिशन—जनजीवन को प्रत्यक्ष रूप से संवारती है। यह एक अभिभावक की वह तन्मय चिंता है, जो अपने परिवार के हर सदस्य के सुख-दुख को हृदय से स्वीकार करता है।

नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व केवल स्वास्थ्य और पोषण के दायरे तक संकुचित नहीं है; वे एक आत्मनिर्भर भारत के युगदृष्टा हैं। 'वोकल फॉर लोकल' और 'मेक इन इंडिया' जैसे प्रेरक अभियानों के माध्यम से उन्होंने देशवासियों को अपनी अंतर्निहित सामर्थ्य पर अटूट विश्वास करना सिखाया। यह कोई साधारण आर्थिक नीति नहीं, अपितु स्वाभिमान और स्वावलंबन का ओजस्वी संदेश है। एक संरक्षक की भाँति उन्होंने राष्ट्र को यह अडिग आश्वासन दिया कि हम अपनी आवश्यकताओं के लिए पराधीन नहीं रहेंगे, बल्कि अपने परिश्रम और प्रतिभा के बल पर विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप अंकित करेंगे।

नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व मात्र एक प्रशासनिक परिभाषा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का एक जीवंत हस्ताक्षर है। वे केवल योजनाएँ गढ़ने वाले नेता नहीं, बल्कि उन योजनाओं को जन-जन की चेतना का अंग बनाने वाले प्रेरणास्तंभ हैं। उनके कुशल मार्गदर्शन में भारत न केवल आर्थिक और सामरिक रूप से सशक्त हुआ, बल्कि स्वास्थ्य, स्वच्छता, योग और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में भी एक नई क्रांति का सूत्रधार बना। उनकी हर नीति एक दिशा-सूचक प्रकाशस्तंभ है, जो भारत को एक सशक्त, समर्थ और स्वाभिमानी राष्ट्र की ओर ले जा रही है। वे मात्र एक प्रधानमंत्री नहीं, बल्कि राष्ट्र के हर नागरिक के संरक्षक हैं, जो प्रत्येक भारतीय को यह विश्वास दिलाते हैं कि भारत का भविष्य सुदृढ़, समृद्ध और स्वर्णिम है। उनका यह अमर योगदान केवल वर्तमान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अमूल्य स्रोत बना रहेगा।

प्रो. आरके जैन अरिजीत,
बड़वानी (मप्र)

ज़िला कांग्रेस कार्यालय में मासिक बैठक के आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज, नई दिल्ली। तिलकनगर जिला कांग्रेस कार्यालय में जिला अध्यक्ष श्री धर्मपाल चंदेला के अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें लोगों ने अपने विचार रखे सब ने कांग्रेस को मजबूत बनाने के संकल्प लिया। इस अवसर पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सी पी मित्तल, मादीपुर से सुनील कुमार, कांग्रेस विधायक प्रत्याशी जे पी पंवार, कांग्रेस नेता विरेन्द्र कुमार चतुर्वेदी ने सभी को सम्बोधित किया। जिला कांग्रेस अध्यक्ष धर्मपाल चंदेला ने भी लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा जिस जोश से कांग्रेस ने चुनाव लड़ा है वह काबिले तारीफ है।

राजधानी में जमीनी स्तर पर पार्टी को पुनर्जीवित करने के लिए ब्लॉक और जिला कांग्रेस कमेटी की बैठकें फिर से शुरू हुईं : देवेंद्र यादव

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने कहा कि मासिक ब्लॉक और जिला कांग्रेस कमेटी की बैठकें फिर से शुरू होने से राजधानी में जमीनी स्तर पर पार्टी को पुनर्जीवित किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनावों के कारण पिछले कुछ महीनों से ये बैठकें नहीं हो पाई थीं, लेकिन जब ये बैठकें फिर से शुरू हुईं तो कांग्रेस कार्यकर्ताओं की प्रतिक्रिया बहुत उत्साहजनक रही।

देवेंद्र यादव ने कहा कि 2 मार्च को 258 ब्लॉक और बुधवार को 14 जिलों में आयोजित ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की बैठकों में सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इन बैठकों में पूर्व सांसदों, दिल्ली के पूर्व मंत्रियों, पूर्व विधायकों, पूर्व और वर्तमान नगर निगम पार्षदों और पदाधिकारियों सहित वरिष्ठ नेताओं ने भाग लिया।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि ब्लॉक एवं जिला कांग्रेस कमेटी की बैठकों में दिए गए सुझावों एवं विचारों को ध्यान में रखते हुए पार्टी जमीनी स्तर पर संगठन को मजबूत करने की दिशा में काम करेगी। उन्होंने कहा कि पार्टी जब जमीनी स्तर पर पार्टी को पुनर्जीवित करने के अभियान पर निकलेगी तो हाल के विधानसभा चुनावों के दौरान संगठन की ताकत एवं कमजोरियों पर ध्यान दिया जाएगा तथा पार्टी को मजबूत करने के लिए जहां भी आवश्यक होगा, बदलाव किए जाएंगे।

देवेंद्र यादव ने कहा कि दिल्ली कांग्रेस, एक जिम्मेदार विपक्षी पार्टी के रूप में, दिल्ली में भाजपा सरकार द्वारा किए गए वादों को पूरा न करने और विकास कार्यों को फिर से शुरू करने में असफल रहने पर जनता की आवाज बुलंद करेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार ने अपने 15 साल के शासनकाल में दिल्ली को दुनिया के बेहतरीन शहरों में शामिल करने के लिए जो विकास कार्य किए थे, उन्हें केजरीवाल सरकार के 11 वर्षों के कुशासन ने नष्ट कर दिया है। अब लोग भाजपा सरकार से राजधानी की पुरानी प्रतिष्ठा बहाल करने की उम्मीद कर रहे हैं, जिसे दिल्ली कांग्रेस बारीकी से मॉनिटर करेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार को खोखले भाषणों के सहारे नहीं छोड़ दिया जाएगा, बल्कि उसे जनता से किए गए वादों को पूरा करने के लिए मजबूर किया जाएगा। सबसे पहले, सरकार को अपनी घोषणा के अनुसार राजधानी की प्रत्येक महिला के खाते में हर महीने रू2500 जमा करने और रुकी हुई जनकल्याणकारी पेंशनों का वितरण फिर से शुरू करने का वादा पूरा करना चाहिए।

"सूचना क्रांति व एआई चैटबॉट युग में भी जीवन को रौशन कर रहा है रेडियो"

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

आज का युग सूचना क्रांति का युग है, एडवांस एआई तकनीक का युग है।

विज्ञान ने आज इतनी अधिक तरक्की कर ली है कि सूचना क्रांति और एआई तकनीक के इस आधुनिक युग में आज हमारे पास मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं।प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन आखेट, कथा-कहानी, आपबीती, तैराकी, घुड़सवारी, पर्यटन, चौसर, खेल-तमाशे, कुश्ती, कबड्डी,ताश, शतरंज ,कला, प्रदर्शन, नृत्य, संगीत, बाजे,नाटक, मेले, सामाजिक सभाएं(चौपाल),ढ़ोलक, हारमोनियम पर गाना आदि हुआ करते थे और मनुष्य इन साधनों के द्वारा मनोरंजन किया करता था। पहले के जमाने में आज की तरह न इंटरनेट की उपलब्धता ही थी और न ही स्मार्ट फ़ोन,लैपटॉप, टीवी ही हुआ करता था। कहना ग़लत नहीं होगा कि पहले के जमाने में मनोरंजन के सीमित संसाधन थे। वैसे पुराने जमाने में मनोरंजन का एक बड़ा साधन जो रहा है, वह 'रेडियो' है। कहना ग़लत नहीं होगा कि रेडियो जानकारी प्रदान करने, लोगों को शिक्षित करने, संस्कृतियों के बीच अभिव्यक्ति की अनुमति देने और निश्चित रूप से, हमारे सभी पसंदीदा संगीत बजाने का एक शानदार और सशक्त मंच है। चाहे तकनीक कितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, रेडियो एक अपूरणीय माध्यम है, खासकर प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं के दौरान। सच तो यह है कि रेडियो आज प्रसारण का वह माध्यम है जो मनोरंजन, स्थानीय समाचार, खेल अपडेट, चर्चाएँ, बढ़िया संगीत प्रदान करता है, और मार्केटिंग का भी एक प्रभावी तरीका है। आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स के इस आधुनिक युग में भी रेडियो की प्रासांगिकता समय के साथ बिल्कुल भी कम नहीं हुई है और आज 13 फरवरी है-'विश्व रेडियो दिवस।' पाठकों को बताता चलूं कि पहला रेडियो प्रसारण 1895 में गुग्लिल्मो मार्कोनी द्वारा किया गया था और संगीत और बातचीत का रेडियो प्रसारण, जिसका उद्देश्य व्यापक दर्शकों के लिए था, प्रयोगात्मक रूप से, कभी-कभी 1905-1906 के आसपास अस्तित्व में आया। यह भी उल्लेखनीय है कि जेम्स क्लर्क मैक्सवेल ने सबसे पहले रेडियो की संभावना का प्रस्ताव रखा था।साल 1920 के दशक की शुरुआत में रेडियो व्यावसायिक रूप से अस्तित्व में आया और लगभग तीन दशक बाद रेडियो स्टेशन अस्तित्व में आए और 1950 के दशक तक रेडियो और प्रसारण प्रणाली दुनिया भर में एक आम वस्तु बन गई। वास्तव में विश्व रेडियो दिवस का उद्देश्य रेडियो के महत्व के बारे में जनता और मीडिया के बीच अधिक जागरूकता बढ़ाना है। इस दिन का उद्देश्य रेडियो स्टेशनों को अपने माध्यम से सूचना तक पहुंच प्रदान करने और प्रसारकों के बीच नेटवर्किंग और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना भी है। बहरहाल, भले ही आज के युग के बारे में कोई ये समझे कि आज का मल्टीप्लेक्स सिनेमा का युग है या सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युग है। लेकिन रेडियो का महत्व आज भी कम नहीं हुआ है। शहरों में सिटी बसें दौड़ रहीं हों या आटो-टैक्सियां आपको इनमें रेडियो बजता हुआ सुन जाएगा। आज स्थान स्थान पर बहुत से कम्युनिटी रेडियो सेंटर्स खुल गये हैं अथवा एफ.एम. की बहार है। सिटी बसेज में तो एफ.एम. का अपना अलग ही आनंद है। आप दिल्ली चले जाइए, जयपुर घूम आइए या किसी अन्य बड़े शहर की सैर कर आइए, आपको रेडियो मिर्ची, समाचार जरूर ट्यून होते मिलेंगे। चाय की थड़ियों में, दुकानों में अखबार पढ़ने के साथ ही आपको रेडियो सुनने का आनंद लेते लोग मिल जाएंगे। आज भागमभाग भरी व दौड़-धूप भरी इस जिंदगी में भी रेडियो की एक अपनी अलग ही महत्ता व खूबी है। गांवों में आज भी बहुत से लोग बड़े चाव से रेडियो सुनते हैं, क्योंकि रेडियो अनपढ़ और पढ़े-लिखे दोनों ही लोगों का परम्मित्र है। रेडियो वह शक्तिशाली माध्यम है जो लोकतान्त्रिक विमर्श के लिए एक शानदार मंच का निर्माण करता है। रेडियो संचार का सबसे अच्छा व बेहतरीन माध्यम है। वास्तव में रेडियो एक ऐसी सेवा है जो दुनियाभर में सूचनाओं का आदान प्रदान करती है। यह बात सत्य है कि आज के समय में अधिकतर लोगों के लिए रेडियो पुराने जमाने की बात हो गई है, परंतु रेडियो बुजुर्गों के लिए आज भी मनोरंजन का एक अत्यंत सशक्त साधन व शानदार माध्यम है। मोबाइल फोन के अधिक प्रयोग से अन्य वर्गों का इससे रुझान पहले से काफी कम हुआ है। लेकिन आज भी रेडियो पर हम सभी समाचार सुनतें हैं, कृषि संबंधी विभिन्न जानकारियां सुनते हैं, सरकार की योजनाओं के बारे में सुनते हैं, रेडियो फोन- इन -प्रोग्राम सुनते हैं, यहाँ तक कि नाटक,कहानी, वार्ता व विज्ञापन तक सुनते हैं। महानगरों में सिटी बसों में रेडियो ही बजता सुनाई देता है और इससे सवारियों का अच्छा खासा मनोरंजन होता है। वास्तव में सूचनाओं को आदान प्रदान करने में रेडियो की जो भूमिका है, वह किसी अन्य साधन की अब तक नहीं है, क्योंकि रेडियो सूचनाओं का प्रसार करने का सबसे शक्तिशाली और सस्ता माध्यम है। वैसे विश्व रेडियो दिवस की शुरुआत वर्ष 2011 में की गई थी।साल 2010 में स्पेन रेडियो अकादमी ने 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस मनाने के लिए पहली बार प्रस्ताव दिया था। साल 2011 में यूनेस्को के सदस्य देशों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस मनाने की घोषणा की। बाद में साल 2012 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भी इसे अपना लिया। फिर उसी साल 13 फरवरी को पहली बार यूनेस्को ने विश्व रेडियो दिवस मनाया। गौरतलब है कि इटली के पीसा विश्वविद्यालय में प्रथम विश्व रेडियो दिवस के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था।पहली बार 13 फरवरी, 2012 को विश्व रेडियो दिवस आयोजन में विश्व की प्रमुख प्रसारक कंपनियों को बुलाया गया था जिसमें 44 भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करने वाली दुनिया की सबसे बड़ी एवं पुरानी कंपनी रेडियो रूस भी शामिल हुई थी। भारत में 1936 में 'इंपीरियल रेडियो ऑफ इंडिया' की शुरुआत हुई थी जो आजादी के बाद 'ऑल इंडिया रेडियो' के नाम से विख्यात हुआ। वर्ष 1957 में ऑल इंडिया रेडियो का नाम बदलकर 'आकाशवाणी' कर दिया गया। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के अपने ध्येय वाक्य के साथ आकाशवाणी 27 भाषाओं में शैक्षिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, खेलकूद, युवा, बाल एवं महिला तथा कृषि एवं पर्यावरण संबंधी प्रस्तुतियों से संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोते हुए सुवासित परिवेश निर्मित कर रही है। साथ ही शेष विश्व को भारतीय संस्कृति और साहित्य से परिचित भी करा रही है। 2 अक्टूबर, 1957 को स्थापित 'विविध भारती' ने 1967 से व्यावसायिक रेडियो प्रसारण शुरू कर नए युग में प्रवेश किया। यह भी बताना बड़ा रूचिकर होगा कि आजादी के समय भारत में केवल 6 रेडियो स्टेशन थे और आज बहुत से रेडियो स्टेशन उपलब्ध हैं। बताता चलूं कि हर साल रेडियो दिवस पर एक खास थीम तैयार की जाती है और इस साल यानी कि वर्ष 2022 की थीम 'विकास' थी। विश्व रेडियो दिवस 2023 का विषय 'रेडियो और शांति' रखा गया था। वहीं पर वर्ष 2024 में इसकी थीम 'रेडियोः सूचना देने, मनोरंजन करने और शिक्षित करने वाली एक सदी' रखी गई थी। पाठकों को बताता चलूं कि इस वर्ष यानी कि 2025 में रेडियो दिवस की थीम 'रेडियो और जलवायु परिवर्तन' रखी गई है।हमें यह भी जानना चाहिए कि डॉयचै वैले जर्मन अंतरराष्ट्रीय प्रसारणकर्ता है जो तीस भाषाओं में प्रसारण करता है। इसके अलावा वॉइस आफ अमेरिका, बीबीसी अन्य प्रमुख प्रसारणकर्ता हैं। एक दौर था जब देश में टेलीविजन नहीं हुआ करते थे और उस जमाने में हर कोई रेडियो सुनना पसंद करता था। आज तो टीवी है, टीवी भी नहीं एल ई डी टीवी आ गए हैं, स्मार्टफोन का जमाना है, स्मार्टफोन ही नहीं स्मार्ट घड़ियां भी आ चुकी हैं लेकिन रेडियो का महत्व कम नहीं हुआ है। यह बात अलग है कि पहले के जमाने की तुलना में रेडियो आज कम ही सुना जाता है लेकिन अब धीरे धीरे देश दुनिया रेडियो की और लौट रही है। आज कम्यूनिटी रेडियो आ गए हैं जो बीस पच्चीस किलोमीटर के एरिया में सुने जाते हैं। कम्यूनिटी रेडियो अपने एप तैयार कर रहे हैं, जिससे उन्हें दुनिया के किसी भी कोने में सुना जा सकता है। दूर-दराज के क्षेत्रों, पहाड़ों, दुर्गम क्षेत्रों, रेगिस्तान आदि में रेडियो सुनने का जो आनंद है, वह कहीं भी नहीं है। रेडियो की पहुंच शहरों ही नहीं कस्बों व गांवों तक है और आप कहीं भी बैठे आसानी से रेडियो सुन सकते हैं। आजकल तो विभिन्न मोबाइल कंपनियां की बोर्ड वाले फोन में ₹रेडियो₹ का ऑप्शन जरूर देतीं हैं, जिसे इयरफोन का इस्तेमाल कर कभी भी सुना जा सकता है। एंड्रॉयड फोन में तो आप कभी भी रेडियो एप इंस्टाल करके रेडियो सुनने का आनंद ले सकते हैं। रेडियो का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे आपकी आंखों की सेहत हमेशा अच्छी बनी रहती है, हम सभी घरों में बैठे बैठे टेलीविजन देखना अधिक पसंद करते हैं, कलर टेलिविजन आंखों पर बुरा प्रभाव डालता है, जबकि रेडियो पॉरटेबल होता है, उसे आप खेतों में पानी लगाते वक्त, वॉक करते समय, रसोई या कहीं भी काम करते करते भी सुन सकते हैं। वास्तव में रेडियो की प्रासांगिकता हमेशा हमेशा के लिए कायम रहेंगी, क्योंकि रेडियो से हम भावात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करते हैं। वास्तव में बहुत बार हमारी आंखें वह काम नहीं कर पातीं हैं जो हमारे कान कर पाते हैं, भगवान ने हमें दो कान ज्यादा से ज्यादा सुनने के लिए ही दिए हैं। जो चीज आंखें देख नहीं पाती हैं, उसे हमारे कान सुन लेते हैं, रेडियो में यह क्षमता है कि वह हमें सुनना सिखाता है, हमारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है। रेडियो की खास बात यह है कि यह हमारी कल्पनाशीलता को हमेशा बढ़ावा देता है, टेलीविजन में वह बात नहीं है, जो रेडियो में है। बहुत कम लोगों को यह जानकारी होगी कि पहले के जमाने में रेडियो रखने व सुनने के लिए लाइसेंस लेना पड़ता था। आज की युवा पीढ़ी को यह बात आश्चर्यचकित कर सकती है लेकिन यह सत्य है। आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स के इस जमाने में लोग यह बात कह सकते हैं कि रेडियो ने दिन-ब-दिन अपनी पहचान व महत्व खो दिया है, आज शहरों में भी रेडियो को ठीक करने की दुकानें नहीं मिलतीं, जैसा कि आज से बीस-पच्चीस बरस पहले मिलती थी। यहाँ तक कि नया रेडियो तक बाजार में उपलब्ध नहीं हो पाता है, क्योंकि युवा पीढ़ी का अधिक रूझान एंड्रॉयड मोबाइल की ओर है लेकिन, नये माध्यम के आने के बावजूद रेडियो प्रचलन से बाहर कतई नहीं हुआ है, रेडियो हमारे एंड्रॉयड व साधारण मोबाइल में हमेशा उपलब्ध है। जिस प्रकार से घड़ी पहनना पसंद करने वाले लोग मोबाइल आने के बाद भी घड़ी पहनना नहीं छोड़ते,ठीक उसी प्रकार से रेडियो के प्रति भी लोगों का मोह आज तक बना हुआ है। रेडियो के साथ जो आत्मीयता आदमी की होती है, शायद किसी ओर माध्यम के साथ कभी नहीं हो सकती। पुराने जमाने में रेडियो गांव की चौपालों में,गांव के घरों में बजता था, यह हमारे सैनिकों के मनोरंजन व समाचार प्राप्त करने का सच्चा साथी था। नये माध्यम आने से पुराने माध्यम कभी भी अपना दम नहीं खोते,बल्कि वे उभरते जाते हैं। आज गांव-गांव कम्युनिटी रेडियो हैं तो शहर शहर एफ.एम.स्टेशन। रेडियो मिर्ची प्रोग्राम आदमी को जो खुशी व आनंद प्रदान करता है, वह कभी भी मल्टीप्लेक्स संस्कृति में हमें प्राप्त नहीं हो सकती है। जिस प्रकार से सोशल नेटवर्किंग साइट्स, इंटरनेट, कम्प्यूटर युग आने से प्रिंट मीडिया का महत्व कम नहीं हुआ है, ठीक उसी प्रकार से रेडियो का महत्व भी कभी कम नहीं होगा,क्योंकि रेडियो हमारी 'आत्मा और हमारे मन' से जुड़ा है और जो चीज हमारी 'आत्मा और मन' से जुड़ी हुई होती है वह न तो कभी आउटडेटेड हो सकती है और न ही हमसे परे। रेडियो की आवाज गति हमेशा त्वरित होती है। आपने क्रिकेट कमेंट्री के वक्त अक्सर टेलीविजन पर देखा होगा कि रेडियो पर जब प्लेयर द्वारा चौका-छक्का लगाने की बात हम सुनते हैं, तब तक टेलीविजन पर बॉलर द्वारा बॉल फेंकने की तस्वीर आ रही होती है। मतलब यह है कि रेडियो में गति है। रेडियो आपको दृश्य जगत की कल्पनीय दुनिया में तुरंत ले जाता है और रेडियो से हम भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। आकाशवाणी केन्द्र बिजली द्वारा ध्वनि को बिजली की लहरों में परिवर्तित कर देता है।फिर इन लहरों को आकाश में छोड़ दिया जाता है। इन लहरों को रेडियो रिसीवर पकड़ लेते हैं और सुनने वाले रेडियों के बटन दबाकर मनचाहे कार्यक्रम सुन सकते हैं। आज रेडियो क्षण भर में विश्व में घटित महत्वपूर्ण सूचनाएं हम तक तुरन्त पहुँचा देता है। व्यापारी वर्ग व विभिन्न कंपनियों के विज्ञापन भी रेडियों से प्रसारित होते हैं। रेडियो पर विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों की जानकारी, पर्वों पर विशेष कार्यक्रम, बच्चों के लिए शिक्षाप्रद कहानियाँ आदि अनेक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।इसके अतिरिक्त पुराने नए फिल्मी गाने, विभिन्न कलाकारों से वार्तालाप, शास्त्रीय संगीत, नाटक, महत्वपूर्ण वार्ताएं, स्त्रियों के घरेलू कार्यक्रम, जिनमें उन्हें-खाना बनाने की रेसिपी, कपड़ों,बच्चों की देखभाल, घरेलू चिकित्सा के उपाय आदि के बारे में भरपूर जानकारी दी जाती है। कृषि, मौसम संबंधी अनेक जानकारियां हमें रेडियो से मिलती हैं। रेडियो में हर कला का दृष्टिकोण इस में समाहित है।मनोरंजन का यह साधन पहले भी लोकप्रिय था, आज भी लोकप्रिय है और भविष्य में भी रहेगा। रेडियो की महत्ता कभी भी कम नहीं होगी।

नोएडा में लगी आग, धुआं-धुआं हुआ शहर; लोगों को सांस लेना हो रहा मुश्किल

नोएडा प्राधिकरण के सेक्टर 32 स्थित डंपिंग ग्राउंड में एक बार फिर आग लग गई है। इससे आसपास के क्षेत्र में धुआं का गुबार फैल गया है। अग्निशमन विभाग की गाड़ियां मौके पर मौजूद हैं और आग बुझाने का प्रयास कर रही हैं। हालांकि अभी तक आग पर पूरी तरह से काबू नहीं पाया जा सका है। आशंका जताई जा रही है कि ग्रैप हटते ही आग लगाई गई है।

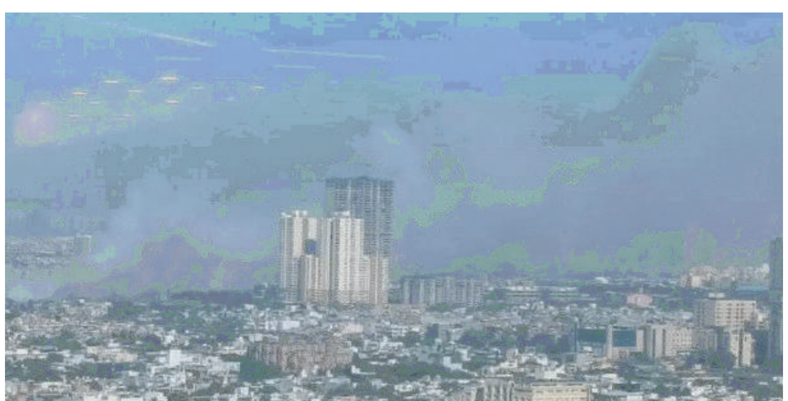

नोएडा। सेक्टर 32 स्थित नोएडा प्राधिकरण के डंपिंग ग्राउंड में पड़े उद्यानिक कचरे में बुधवार दोपहर को एक बार फिर आग लग गई। आग लगने से आसपास के क्षेत्र में धुआं का गुबार फैला रहा।

अग्निशमन विभाग की गाड़ियों से देर शाम तक आग बुझाना जारी रहा लेकिन अभी भी आग पूरी तरह से नहीं बुझ पाई। ग्रैप हटते ही आग लगने की घटना होने को संदिग्ध मानते हुए आग लगाए जाने की चर्चा है। उधर, अग्निशमन विभाग के पत्राचार करने पर भी प्राधिकरण चेता नहीं। मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि बुधवार दोपहर को सेक्टर 32 के डंपिंग ग्राउंड के उद्यानिक कचरे में आग लगने की सूचना मिली थी। तत्काल मौके पर कई गाड़ियों को भेजा गया, आग को बुझाने का काम जारी है। जल्द ही आग पर काबू पा लिया जाएगा।

चार बार लिखा पत्र, नहीं चेता प्राधिकरण

मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि डंपिंग ग्राउंड में पूरे शहरभर का उद्यानिक कचरा एकत्रित होता है। सूखे पत्ते आदि होने से आग लगने पर काबू पाना काफी मुश्किल होता है। विगत सालों में भी आग लगने की घटनाएं हो चुकी है।

इस बाबत नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों को चार बार पत्राचार किया जा चुका है। 15 दिन पहले भी पत्र लिखकर आग की संभावना और बचाव को लेकर ठोस कदम उठाने पर जोर दिया गया था लेकिन कोई पहल नहीं की गई है।

उधर, पिछले साल पांच दिन में बुझी आग को लेकर प्राधिकरण अधिकारियों ने डंपिंग ग्राउंड में कूड़ा नहीं डालने का दावा किया था। सेक्टर के पार्क आदि में ही मशीन लगवाकर, वहीं पर उद्यानिक कचरे का निस्तारण कराने पर जोर दिया था। जानकारों की मानें तो यहां पर उद्यानिक कचरा डालना जारी रहा।

लापरवाही का खामियाजा भुगत रहे लोग

पिछले दो साल से होली के आसपास डंपिंग ग्राउंड में आग लगने की घटना हो रही हैं। इसका खामियाजा नोएडा के लोगों को प्रदूषण के रूप में भुगतना पड़ता है। आग को लेकर नोएडा के लोग नाराजगी जता चुके हैं लेकिन प्राधिकरण की ओर महज खानापूर्ति की जाती है। अब फिर से आग लगने पर लोगों को प्राधिकरण की लापरवाही का खामियाया भुगतना पड़ रहा है।

बुलडोजर की कार्रवाई से मची खलबली, 71 हजार रुपये जुर्माना भी लगाया

गाजियाबाद जिले के साहिबाबाद में अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई की गई। टीम ने बुलडोजर द्वारा अवैध अतिक्रमण को हटाया। साथ ही 71 हजार रुपये का जुर्माना भी वसूला गया। वहीं बुलडोजर की इस कार्रवाई से इलाके में हड़कंप मचा हुआ है। अधिकारियों ने कहा कि कहीं पर भी अवैध निर्माण को छोड़ा नहीं जाएगा। अवैध निर्माण के खिलाफ अभियान चलता रहेगा।

साहिबाबाद। गाजियाबाद जनपद में साहिबाबाद में नगर निगम ने बुधवार को वसुंधरा जोन में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाकर कार्रवाई की। इस दौरान झुग्गी-झोपड़ी व सड़क किनारे हो रहे अतिक्रमण को हटाया गया। टीम को देखकर अतिक्रमण करने वालों में भी अफरातफरी मच गई। कुछ लोगों ने पहले ही अपना सामान उठाकर अंदर रख लिया।

नगरायुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने बताया कि वर्षों से अतिक्रमण कर रखा था। इसको लेकर आइजीआरएस पर भी लगातार शिकायतें आ रही थीं। अतिक्रमण हटाने के लिए नगर निगम की पांचों जोन से टीम पहुंचीं। इस दौरान वसुंधरा जोन के बृज विहार क्षेत्र में रेलवे लाइन के बराबर में कई वर्षों से झुग्गी-झोपड़ियों को बनाकर अवैध अतिक्रमण किया हुआ था। इन्हें हटाया गया।

इसके बाद रेलवे लाइन से बृज विहार तक अवैध अतिक्रमण को हटाया गया। सिटी जोन में सब्जी घंटाघर सब्जी मंडी में भी अतिक्रमण पर नगर निगम का बुलडोजर चला। कविनगर जोन में डायमंड फ्लाई ओवर के नीचे पांडव नगर तक चार अतिक्रमण हटाया गया। इस दौरान अतिक्रमण करने वालों से जुर्माना भी वसूला गया।

उन्होंने बताया कि शहर की सुंदरता को बरकरार रखने और आवागमन को आसान बनाने के लिए अवैध अतिक्रमण पर कार्रवाई की जा रही है। मोहननगर जोन में 10 मार्च को अभियान चलाया जाएगा। इस दौरान सीमापुरी बॉर्डर के आसपास कार्रवाई की जाएगी। इसके लिए पहले ही जानकारी दी जा रही है।

शेयर बाजार लगातार धड़ाम !- शुभ मंगल में अमंगल कोहराम ! मिनट भर में 1.33 लाख करोड़ स्वाह

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दशकों से यह प्रचलन रहा है कि जब भी कोई प्राकृतिक, मानवीय मेड घटना, महायुद्ध सत्ता का पलटना महामारी इत्यादि कुछ घटनाएं होती है तो इसका प्रभाव संबंधित अनेक क्षेत्रों में होता हुआ दिखता है। जैसे 57 देशों के इस्लामी सहयोग संगठन, खड़ी देश हो या फिर विकसित देशों के बीच टकराव हो इससे तेल का रेट बढ़ना, किसी राजनीतिक उलटफेर का डर या कानून से विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा शेयरों की बिकवाली से शेयर मार्केट गिरना या कोई महामारी आने से स्वास्थ्य व खाद्य क्षेत्र का चरमरा जाना इत्यादि होता है। मैंनें बचपन में हर्षद मेहता का बहुत बड़ा शेयर घोटाला तथा एक स्टांप पेपर घोटाला सुना था जिसनें उच्चस्तर तक को हिला दिया था। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि पिछले अनेक दिनों से भारतीय शेयर बाजार लगातार धड़ाम हो रहा है,भारत ही नहीं बल्कि ट्रंप द्वारा 4 मार्च 2025 से मैक्सिको कनाडा पर 25 परसेंट टैरिफ लगाने से ऑटोमेटेकली शेयरों को भारी मात्रा में गिरता देखा जा रहा है, इस तरह ट्रंप के विज़न अमेरिकी फर्स्ट व भारतीय लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन के कारण विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा लगातार शेयरों की बिकवाली कर भारत से पैसा समेट रहे हैं, शायद अमेरिका में लगाने का उनका विचार हो सकता है !ऐसे अनेक संभावित कारणों की चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे।चूँकि शेयर मार्केट की लगातार भारी मात्रा में गिरावट चिंतनीय है, एनएसई निफ्टी को साप्ताहिक मासिक एक्सपायरी दिन को मंगलवार से सोमवार किया गया है जो 4 अप्रैल 2025 से लागू हो गया है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, शेयर बाजार लगातार धड़ाम शुभमंगल को कोहराम, मिनट भर में 1.33 लाख करोड़ स्वाहा !

साथियों बात अगर हम शेयर मार्केट की होती जा रही बुरी गति की करें तो,लगातार 12 वें दिन गिरावट के साथ कारोबार कर रहा है, मंगलवार को ओपनिंग बेहद खराब रही थी। गिफ्ट निफ्टी ने भी भारी गिरावट का संकेत दिया था, और हुआ भी वैसा ही, सेंसेक्स और निफ्टी गिरावट के साथ खुले, और अब भी दबाव के साथ ही कारोबार कर रहा है। दरअसल, निवेशकों की अब हर उम्मीदें टूटती जा रही हैं। फरवरी का महीना शेयर बाजार के निवेशकों के लिए बेहद बुरा साबित हुआ।अभी मार्च का आगाज भी कोहराम के साथ हुआ है। मंगलवार को सेंसेक्स गिरावट के साथ 72,817.34 अंक पर खुला, जबकि निफ्टी 21,974.45 अंक पर खुला। मंगलवार दोपहर 1.30 बजे सेंसेक्स 176 गिरकर कारोबार कर रहा था, जबकि निफ्टी 56 अंक गिरकर कारोबार कर रहा था।इससे पहले सोमवार को निफ्टी लुढ़ककर 22004 अंक तक पहुंच गया था। अगर निफ्टी 22000 अंक के नीचे चला जाता तो फिर गिरावट और बढ़ जाती है।हालांकि निफ्टी का 52 वीक लो 21,281.45 अंक है, जो मार्च-2024 का आंकड़ा है। ऐसे में टेक्निकल पैरामीटर पर अगर निफ्टी 22000 का लेवल तोड़ता है तो फिर 21000 अंक तक फिसल सकता है। फिलहाल 22000 अंक निफ्टी के लिए एक मजबूत सपोर्ट का काम कर रहा है। अगर गिरावट की बात करें तो पेटीएम के शेयर में 4.60 फीसदी, बजाज ऑटो में 5 फीसदी, हीरो मोटोकॉर्प में 3.50 फीसदी, इत्यादि अनेक शेयरों के रेट गिरे हैं, जबकि एचएएल में 3.5 फीसदी, एसबीआई में करीब 3 फीसदी, भेल में 2.50 फीसदी की तेजी दर्ज की गई।

साथियों बात अगर हम शेयर बाजार में गिरावटों के संभावित कारणों की करें तो,बाजार में गिरावट के ये सात मुख्य कारण हैं (1) एफआईआई की जोरदार बिकवाली- अगर बाजार में गिरावट के कारण देखें तो विदेशी निवेशकों की बिकवाली जारी है, साल 2025 में अबतक फी भारतीय बाजार से करीब 1.50 लाख करोड़ रुपये निकाल चुके हैं. सिर्फ सोमवार को ही फिईस ने भारतीय शेयरों में 4,788 करोड़ रुपये के शेयर बेच डाले। इससे पहले शुक्रवार 28 फरवरी को 11639 करोड़ रुपये के शेयर बेचे थे,वहीं भारतीय बाजार से पैसे निकालकर विदेशी निवेश चाइनीज मार्केट में लगा रहे हैं। (2) ट्रंप का टैरिफ अटैक- कनाडा और मैक्सिको से आने वाले सामानों पर 25 पेर्सेंट टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। जवाब में कनाडा ने भी अमेरिकी प्रोडक्ट्स पर 25 पेर्सेंट का जवाबी टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। जिससे निवेशकों की चिंताएं बढ़ गई हैं. यही कारण है कि सोमवार को अमेरिकी बाजार में भी भारी गिरावट देखी गई। यही नहीं, डोनाल्ड ट्रंप की नई टैरिफ पॉलिसी ने ग्लोबल मार्केट्स में हड़कंप मचा दिया है। (3) अब बड़ी कंपनियों के शेयरों में गिरावट मिडकैप और स्मॉल कैप कंपनियों में भारी गिरावट के बीच अब लॉर्जकैप शेयरों में बिकवाली बढ़ने लगी है।मंगलवार को भी रिल के शेयरों गिरावट दर्ज की गई. इसके अलावा आईटी कंपनियों में दबाव देखने को मिल रहा है. टैरिफ वॉर से भी आईटी कंपनियों के शेयर गिर रहे हैं। निवेशकों को डर है कि टैरिफ और व्यापार तनाव के कारण भारतीय आईटी कंपनियों को मिलने वाले आउटसोर्सिंग प्रोजेक्ट्स में गिरावट आ सकती है (4) ग्लोबल सेंटीमेंट खराब- पिछले करीब 6 महीने की गिरावट से बाजार का सेंटीमेंट काफी खराब हैं।अच्छी खबर पर भी बाजार चलने को तैयार नहीं है,खासकर अमेरिकी चुनाव के बाद डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों ने माहौल बिगाड़ने का काम किया है,यही नहीं, अमेरिका ने चीन से आने वाले उत्पादों पर 10 पेर्सेंट का अतिरिक्त शुल्क लगाने का ऐलान किया है, इससे चीन पर कुल टैरिफ 20पेर्सेंट तक पहुंच गया है।एक्सपर्ट्स को चीन से भी आने वाले दिनों में ऐसी ही कदमों का अनुमान हैं। (5) भारतीय शेयर बाजार में गिरावट का कारण लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस टैक्स माना जा रहा है- विशेषज्ञ इसे हटाने की मांग कर रहे हैं ताकि विदेशी निवेशक वापस आएं। (6) चीन की ओर से अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की कोशिशें-चीन की सरकार कोविड महामारी के बाद अपने देश की अर्थव्यवस्था को एक बार फिर से पटरी पर लाने की कोशियों में जुट गई है। इसके लिए सरकार की ओर से कई पहल किए गए हैं। उद्योगों के हित में कई नई घोषणाओं के बाद चीनी इक्विटी में वैश्विक निवेशकों को बड़े मौके दिख रहे हैं। इसे देखते हुए वे अपना पैसा भारत जैसे बाजार से निकालकर वहां डाल रहेहैं, इससे भारतीय इक्विटी को नुकसान हो रहा है। अगर चीनी सरकार की नई पहलों को एफआईआई से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है, तो इसका मतलब है कि भारतीय बाजार पर दबाव बढ़ेगा और हैंग सेंग एक्सचेंज के जरिए चीनी शेयरों में और अधिक पैसा आएगा। हालांकि जानकारों का मानना है कि भारतीय शेयरों, विशेष रूप से मिड और स्मॉल- कैप के उच्च मूल्यांकन के कारण एफआईआई भले ही बिकवाली करें लेकिन, हालांकि, अच्छी बात यह है कि भारत में लार्ज- कैप का उचित मूल्यांकन है, जो इस सेगमेंट में खरीदारी को आगे भी आकर्षित करना जारी रख सकता है। (7) सोने की कीमतों में इजाफा- वैश्विक बाजारों में गोल्ड फ्चूचर और हाजिर सोने की कीमतों में बीते कुछ महीनों में बड़ा उछाल दिखा। सोना लगातार अपने ऑल टाइम हाई के आसपास कारोबार कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में, हाजिर सोना 24 फरवरी, 2025 को 2,956.37 डॉलर प्रति औंस के सर्वकालिक उच्च स्तर को छू गया। 2024 में सोने की कीमतों में 27 पेर्सेंट मजबूती दर्ज की गई और 2025 में अब इस में 10.3पेर्सेंट का उछाल आ चुका है।आईसी आईसी आई बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, स्थानीय सोने की कीमतें पहली छमाही में 90,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंचने की उम्मीद है। दिसंबर 2025 तक इसकी कीमतें 95,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंचने की उम्मीद है। सोने की कीमतों में लगातार इजाफा भारतीय इक्विटी पर भी नकारात्मक असर डाल रहा है, क्योंकि लोग सुरक्षित निवेश की संभावना को देखते हुए इक्विटी से निकल कर सोने का रुख कर रहे हैं।

साथियों बात अगर हम भारत में शेयर मार्केट के गिरने के कारणों में एक कैपिटल गेन टैक्स की करें तो, गेंस एक प्रकार का कर है जो किसी संपत्ति को बेचने पर हुए मुनाफे पर लगाया जाता है. भारतीय शेयर बाजार में गिरावट का कारण एलटीसीजी टैक्स माना जा रहा है। विशेषज्ञ एलटीसीजी टैक्स हटाने की मांग कर रहे हैं। एलटीसीजी हटने से विदेशी निवेशक भारतीय बाजार में लौट सकते हैं।कैपिटल गेंस टैक्स एक प्रकार का कर है जो किसी संपत्ति को बेचने पर हुए मुनाफे पर लगाया जाता है, यह दो तरह का होता है, शार्ट टर्म कैपिटल गेंस टैक्स और लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस टैक्स। लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स टैक्स किसी संपत्ति जैसे शेयर और संपत्ति को एक निश्चित अवधि से अधिक समय तक धारण करने के बाद बेचने पर हुए मुनाफे पर लगाया जाता है।शेयरों के मामले में यह अवधि 12 महीने है, यानी अगर हम 12 महीने तक किसी शेयर को रखने के बाद उसे बेचते हैं, तो उससे हुए मुनाफे पर हमको एलटीसीजी चुकाना होगा। बजट 2025 में वित्त मंत्री ने कैपिटल गेन टैक्स की दरों को बढ़ा दिया था।सरकार ने शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन टैक्स की दरों को 15 फीसदी से बढ़ाकर 20 फीसदी कर दिया था, जबकि लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन टैक्स को 10 पेर्सेंट से बढ़ाकर 12.5 पेर्सेंट कर दिया था। भारत उन चुनिंदा देशों में शामिल हैं, जो शेयरों की बिक्री पर लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस टैक्स वसूलता है।

साथियों बात अगर हम भारतीय शेयर बाजार पर आगे के लिए अनुमानों के कयास लगाने की करें तो, भारतीय अर्थव्यवस्था में वित्तीय वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही का जीडीपी अनुमान दलाल स्ट्रीट की उम्मीदों के अनुरुप रहना बाजार को अस्थायी राहत प्रदान कर सकता है। दिसंबर तिमाही में जीडीपी वृद्धि 6.2 पेर्सेंट दर्ज की गई। यह मुख्य रूप से सरकार की ओर से उच्च खपत से प्रेरित रही। इस दौरान पूंजी निर्माण पिछली तिमाही की तुलना में स्थिर रहा। पूरे वित्तीय वर्ष के लिए जीडीपी वृद्धि दर 6.5 पेर्सेंट आंकी गई है। ऐसा तब संभव है जब चौथी तिमाही की वृद्धि दर 7.6 पेर्सेंट या उससे अधिक रहे। हालांकि फिलहाल यह एक लंबा लक्ष्य प्रतीत होता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि शेयर बाजार लगातार धड़ाम !- शुभ मंगल में अमंगल कोहराम ! मिनट भर में 1.33 लाख करोड़ स्वाह ।शेयर बाजार में भारी गिरावट जारी- विदेशी संस्थागत निवेशकोंकी लगातार बिकवाली, अमेरिकी टैरिफ, ट्रंप- यूक्रेन-ईयू टेंशन- निवेशकों में डर मेंशन ।शेयर मार्केट में लगातार भारी गिरावट चिंतनीय-एनएसई निफ्टी के साप्ताहिक मासिक एक्सपायरी दिन को गुरुवार से सोमवार किया, 4 अप्रैल 2025 से लागू।

पहले से ज्यादा भौकाली हुई टोयोटा फॉर्च्यूनर लीजन्डर 4x4 ड्राइव ऑप्शन समेत मिला दमदार इंजन

नई टोयोटा फॉर्च्यूनर लीजन्डर को 4x4 मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ लॉन्च किया गया है। कंपनी ने इसे लॉन्च करने के साथ ही बुकिंग भी लेना शुरू कर दिया गया है। यह SUV 11 स्पीकर 4x4 ड्राइव ऑप्शन और 2.8-लीटर 4-सिलेंडर डीजल इंजन से लैस है। कंपनी ने Toyota Fortuner Legender को 46.36 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत पर लॉन्च किया है।

नई दिल्ली। टोयोटा भारतीय बाजार में Toyota Fortuner को ऑफर करती है। टोयोटा की यह SUV कई प्रीमियम फीचर्स के साथ आती है। कंपनी Toyota Fortuner Legender वेरिएंट को अपडेट किया है। यह पहले केवल ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ आती थी, जिसे अब 6-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ लेकर आया गया है, लेकिन इस मैनुअल ऑप्शन को केवल इसके 4x4 (4-व्हील-ड्राइव) सेटअप के साथ ही लेकर आया गया है, जबकि रियर-व्हील-ड्राइव (RWD) ऑप्शन को अभी भी केवल ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ पेश किया जाता है। इसे भी बाकी ट्रिम की तरह ही डुअल-टोन प्लेटिनम व्हाइट पर्ल कलर ऑप्शन के साथ ब्लैक रूफ के साथ ही लेकर आया गया है।

कीमत

Toyota Fortuner Legender कीमत (रुपयों में)

वेरिएंट

कीमत

4x2 AT	44.11 लाख
4x4 MT	46.36 लाख
4x4 AT	48.09 लाख

ऊपर दिए गए टेबल पर देख सकते हैं कि Toyota Fortuner का नया वेरिएंट समान सेटअप वाले ऑटोमैटिक ट्रिम की तुलना में 3.73 लाख रुपये ज्यादा किफायती है। वहीं, कंपनी ने इसे भारत में लाने के साथ ही बुकिंग भी शुरू कर दी है।

इंजन

Toyota Fortuner Legender में 2.8-लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 204 PS की पावर जनरेट करता है। वहीं, इसका मैनुअल ट्रांसमिशन 420 Nm का टॉर्क और ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन 500 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 6-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन और 6-स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन का ऑप्शन मिलता है। इसमें RWD और 4WD दोनों ही ड्राइवट्रेन मिलते हैं।

इंजन

2.8-लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन

पावर

204 PS

टॉर्क

420 Nm (MT) / 500 Nm (AT)

ट्रांसमिशन

6-स्पीड MT / 6-स्पीड AT

ड्राइवट्रेन

RWD / 4WD

इसके दोनों गियरबॉक्स ऑप्शन का पावर समान है, लेकिन मैनुअल ट्रांसमिशन वाला फॉर्च्यूनर लेजेंडर ऑटोमेटिक ऑप्शन की तुलना में 80 Nm ज्यादा है। हम जैसे आपको पहले ही बता चुके हैं कि RWD वैरिएंट केवल ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ मिलता है, जबकि 4WD ऑप्शन दोनों ही ट्रांसमिशन विकल्प में दिया जा रहा है।

कावासाकी बाइक पर दमदार डिस्काउंट, 45000 रुपये तक बचाने का मौका; कब तक रहेगा ऑफर?

परिवहन विशेष न्यूज

मार्च 2025 में कावासाकी अपनी मोटरसाइकिलों पर बंपर डिस्काउंट दे रहा है। Kawasaki Eliminator 500 पर सबसे कम 15000 रुपये की छूट मिल रही है उसके बाद Versys 650 पर 30000 रुपये की छूट मिलती है। Ninja 300 और Z900 पर 40000 रुपये का डिस्काउंट जबकि Ninja 500 और Ninja 650 मॉडल पर 45000 रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है।

नई दिल्ली। कावासाकी इंडिया फिर एक बार अपनी मोटरसाइकिलों पर बंपर ऑफर लेकर आई है। मार्च 2025 में कावासाकी अपनी बाइक्स पर 15,000 रुपये से लेकर 45,000 रुपये तक की छूट की घोषणा की है। कंपनी मार्च में अपनी Eliminator 500, Versys 650, Ninja 300, Ninja 500, Ninja 650 और Z900 पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। Kawasaki Bikes पर मिल रहा यह डिस्काउंट ऑफर 1 मार्च से लेकर 31 मार्च, 2025 तक रहने वाला है। आइए जानते हैं कि Kawasaki की किस मोटरसाइकिल पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है।

1. Kawasaki Eliminator 500

कीमतः 5.62 लाख (एक्स-शोरूम)।

डिस्काउंट ऑफरः 15,000 रुपये तक।

Kawasaki Eliminator में 451 cc, पैरेलल-ट्विन, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 45 PS की पावर और 42.6 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को असिस्ट और स्लिपर क्लच के साथ 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

इसमें स्मार्टफोन कनेक्टिविटी के साथ एक गोल एलसीडी इंस्ट्रूमेंट कंसोल मिलता है। इसके इंस्ट्रूमेंट कंसोल में स्पीडोमीटर, डिजिटल बार-स्टाइल टैकोमीटर, गियर पोजिशन इंडिकेटर, क्लॉक, ओडोमीटर, डुअल ट्रिप मीटर, फ्यूल गेज, बचा हुआ फ्यूल रेंज, करंट और एवरेज माइलेज, कूलेंट तापमान, मेंटेनेंस रिमाइंडर, स्मार्टफोन मेल और कॉल नोटिस जैसी जानकारी मिलती है।

2. Kawasaki Versys 650

कीमतः 7.77 लाख (एक्स-शोरूम)।

डिस्काउंट ऑफरः 30,000 रुपये तक।

Kawasaki Versys 650 में 649 cc, लिक्विड-कूल्ड, पैरेलल ट्विन मोटर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 66 PS की पावर और 61 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को मल्टी-डिस्क क्लच के साथ छह-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा गया है।

इसमें ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ पूरी तरह से डिजिटल TFT इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। इसके अलावा, यह कावासाकी ट्रैक्शन कंट्रोल (KTRC) नामक दो-स्तरीय ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

3. Kawasaki Z900

कीमतः 9.29 लाख (एक्स-शोरूम)।

डिस्काउंट ऑफरः 40,000 रुपये तक।

Kawasaki Z900 में 948 cc, लिक्विड-कूल्ड, इनलाइन-फोर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 123.6 bhp की पावर और 98.6 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। बाइक के इंजन को स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच के साथ 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

इसमें एलईडी हेडलाइट और स्मार्टफोन कनेक्टिविटी के साथ TFT इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है। इसमें चार राइडिंग मोड, तीन-स्तरीय ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम और दो पावर मोड जैसे बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। यह मेटालिक स्पार्क ब्लू और मेटालिक मैटे ग्रैफेन स्टील ग्रे कलर स्कीम में आती है।

4. Kawasaki Ninja 300

कीमतः 3.43 लाख (एक्स-शोरूम)।

डिस्काउंट ऑफरः 40,000 रुपये तक।

Kawasaki Ninja 300 में 296 cc पैरेलल-ट्विन लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 39 PS की पावर और 26.1 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को असिस्ट और स्लिपर क्लच के साथ 6-स्पीड ट्रांसमिशन यानी गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

कावासाकी इस बाइक में हैलोजन हेडलैंप और LED टेल लैंप दी गई है। इसके साथ ही सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। इसमें LED हेडलैंप और स्मार्टफोन-कनेक्टिविटी इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर लगाया गया है, जो प्रीमियम फील देता है।

5. Kawasaki Ninja 500

कीमतः 5.24 लाख (एक्स-शोरूम)।

डिस्काउंट ऑफरः 45,000 रुपये तक।

Kawasaki Ninja 500 में 451 cc लिक्विड-कूल्ड, पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 45 bhp की पावर और 42.6 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच के साथ छह-स्पीड ट्रांसमिशन से जोड़ा गया है।

इसमें फुल-डिजिटल 5-इंच एलसीडी डिस्प्ले दिया गया है। इसमें आपको कावासाकी के राइडोलॉजी ऐप के जरिए स्मार्टफोन कनेक्टिविटी जैसे फीचर्स मिलते हैं। बाइक में स्लिप और असिस्ट क्लच, डुअल चैनल ABS जैसे

6. Kawasaki Ninja 650

कीमतः 7.16 लाख (एक्स-शोरूम)।

डिस्काउंट ऑफरः 45,000 रुपये तक।

Kawasaki Ninja 650 में 649 cc लिक्विड-कूल्ड, पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 67.3 bhp की पावर और 64 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को वेट, मल्टी-डिस्क क्लच वाले छह-स्पीड ट्रांसमिशन से जोड़ा गया है।

इसमें ट्विन LED हेडलाइट्स और कलर TFT डिस्प्ले दिया गया है। इसमें दिए गए 4.3 इंच का डिस्प्ले कावासाकी राइडोलॉजी ऐप के ज़रिए ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के फीचर के साथ आता है। इसमें कावासाकी ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम (KTRC), पीछे की सीट पर बेहतर पैडिंग समेत और भी कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। यह सिर्फ एक कलर लाइम ग्रीन में आती है।

अब भारत की सड़कों पर नहीं दिखेंगी केटीएम की ये दो सस्ती बाइक, बंद होने जा रही बिक्री

भारतीय बाजार में KTM अपनी दो मोटरसाइकिल की बिक्री और प्रोडक्शन को बंद करने जा रही है। यह दोनों बाइक्स KTM 125 Duke और KTM RC 125 है। यह दोनों ही अपने सेगमेंट में कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। इन दोनों मोटरसाइकिल को प्रीमियम कंपोनेंटरी से भी लैस किया था। आइए जानते हैं कि KTM की इन दोनों मोटरसाइकिल के बंद होने का कारण।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में KTM इंडिया अपनी 125 सीसी की दो मोटरसाइकिल की बिक्री को बंद करने जा रही है। यह दोनों मोटरसाइकिल एक समय में भारत में काफी पॉपुलर थी और अब इनकी ऐसी स्थिति हो गई है कि कंपनी को इनकी सेल को बंद करना पड़ रहा है। यह मोटरसाइकिल कोई और नहीं, बल्कि KTM 125 Duke और KTM RC 125 है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इन दोनों मोटरसाइकिलों की बिक्री 1 अप्रैल, 2025 से बंद कर दिया जाएगा। इसके पीछे का कारण अप्रैल, 2025 से लागू होने वाले आगामी OBD-2B मानदंडों का पालन करने के लिए बाइक्स को अपडेट नहीं किया जा सकता है।

इन वजहों से हो रही बंद

KTM 125cc सेगमेंट में अपनी इन दोनों मोटरसाइकिल KTM 125 Duke और KTM RC 125 को ऑफर करती है। अब इन दोनों ही मोटरसाइकिल को कंपनी बंद करने जा रही है। इन्हें भारत में डिस्कंटीन्यू करने के पीछे का सबसे बड़ा कारण खराब बिक्री है। कंपनी ने अप्रैल 2024 से जनवरी 2025 तक केवल इसके 1,044 यूनिट्स की ही बिक्री कर पाया है। यह साल-दर-साल करीब 50 प्रतिशत तक की भारी गिरावट है। वहीं, जनवरी 2025 में भी इनकी बिक्री काफी खराब रही है, बिक्री की संख्या केवल 17 बाइक ही रही, जो साल-दर-साल 92 प्रतिशत की गिरावट है।

इसकी बिक्री गिरने के पीछे के दो कारण है पहली तो इसकी ज्यादा कीमत और दूसरा प्रतिद्वंद्वी निर्माताओं से बढ़ती प्रतिस्पर्धा। इसके KTM 125 Duke की एक्स-शोरूम कीमत 1,81,030 रुपये और KTM RC 125 की एक्स-शोरूम कीमत 1,91,795 रुपये है।

कंपनी की तरफ से इन मोटरसाइकिलों को बंद करने के पीछे का एक कारण वह अपने उत्पाद पोर्टफोलियो को सुव्यवस्थित करना चाहते हैं। कंपनी उन बाइक्स पर ध्यान केंद्रित करना चाहती है जिनकी बिक्री भारतीय बाजार में अच्छी है। इसके साथ ही कंपनी इन्वेंट्री बिल्डअप को साफ करने पर काम कर रहा है।

KTM 125 Duke और RC 125 के फीचर्स

KTM की यह दोनों ही मोटरसाइकिल एक जैसा ही इंजन 124.7cc सिंगल-सिलेंडर लिक्विड-कूल्ड DOHC 4V/सिलेंडर का इस्तेमाल किया गया है। इनमें दिया गया इंजन 14.34 bhp की पीक पावर और 12 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इनके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा गया है।

KTM ने अपनी इन दोनों बाइक्स को प्रीमियम कंपोनेंटरी से भी लैस किया था। इन दोनों में ही P Apex 43mm USD फ्रंट फोर्क्स, 110-सेक्शन फ्रंट टायर, 150-सेक्शन रियर टायर, 320 mm फ्रंट डिस्क और स्विचेबल ABS के साथ 230 mm रियर डिस्क दिया गया था। यह दोनों ही बाइक स्टाइलिश लुक के साथ आती है।

अब ओला को होगी टेंशन, अल्ट्रावायलेट के नए स्कूटर और ऑफ रोडिंग बाइक हुई लॉन्च, जानें कितनी है कीमत, फीचर्स और रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

सेगमेंट में लगातार नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। इसी क्रम में Ultraviolette भी अब अपने पोर्टफोलियो को बढ़ाने की तैयारी कर रही है। औपचारिक तौर पर कंपनी दो नए वाहनों को लॉन्च कर दिया है। किस तरह की खासियत रेंज और सेगमेंट्स में इनको लाया गया है। इससे OLA सहित किन कंपनियों को चुनौती मिलेगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में सामान्य Electric Vehicles के साथ ही परफॉर्मेंस सेगमेंट में भी बाइक्स को ऑफर किया जाता है। देश की स्टार्टअप Ultraviolette की ओर से भी 5 March 2025 को औपचारिक तौर पर दो नए वाहनों को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इन उत्पादों को किस सेगमेंट में लॉन्च किया गया है। किस तरह की खासियतों के साथ इनको लाया गया है। किस कीमत पर इनको खरीदा जा सकता है। इनसे किन कंपनियों को कड़ी चुनौती (Ultraviolette New launch) मिल सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Ultraviolette ने लॉन्च किए दो नए वाहन

अल्ट्रावायलेट की ओर से भारतीय बाजार में अपने पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए दो नए वाहनों को लॉन्च कर दिया है। कंपनी की ओर से Electric Scooter और Electric Off Road Bike सेगमेंट में नए वाहनों को लाया गया है।

कैसा है Ultraviolette Tesseract Scooter

कंपनी की ओर से Ultraviolette Trsseract नाम से नए स्कूटर को लॉन्च (Ultraviolette scooter launch) किया गया है। इस स्कूटर में 14 इंच अलॉय व्हील्स, 34 लीटर की अंडर सीट स्टोरेज, दुनिया का पहला इंटीग्रेटिड रडार और डैशकैम के साथ ओम्नीसेंस सेंसर, ब्लाइंड स्पॉट डिटेक्शन, लेन और ओवरटेक असिस्ट, रियल टाइम कॉलिजन अलर्ट, सात इंच टीएफटी डिस्प्ले, 261 किलोमीटर की IDC रेंज, मोटर से 20 बीएचपी की पावर, एलईडी ड्यूल प्रोजेक्टर लाइट्स के साथ फ्लोटिंग डीआरएल जैसे बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है।

Ultraviolette Shockwave बाइक में क्या है खासियत

अल्ट्रावायलेट की ओर से दूसरे उत्पाद के तौर पर ऑफ रोडिंग इलेक्ट्रिक बाइक (Ultraviolette off-road bike) को लाया गया है। इस बाइक को Ultraviolette Shockwave नाम दिया गया है। इसमें 17 और 19 इंच के स्पोक्ड व्हील्स, 165 किलोमीटर की रेंज, 14.5 बीएचपी की पावर और 505 न्यूटन मीटर का टॉर्क दिया गया है।

कितनी है कीमत

Ultraviolette Tesseract इलेक्ट्रिक स्कूटर को कंपनी की ओर से 1.45 लाख रुपये में लॉन्च किया गया है। लेकिन पहले 50 हजार लोगों को इस स्कूटर 1.3 लाख रुपये में दिया जाएगा।

इसके अलावा Ultraviolette Shockwave बाइक को पहले एक हजार लोगों को 1.49 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लाया गया है। दोनों उत्पादों के लिए कीमतें इंट्रोडक्ट्री हैं जिसे बाद में बदला जा सकता है। कंपनी के स्कूटर और बाइक को 999 रुपये में बुक करवाया जा सकता है।

किनको मिलेगी चुनौती

अल्ट्रावायलट की ओर से लॉन्च किए गए स्कूटर और बाइक से भारतीय बाजार में Ola, Ather, TVS, Bajaj, Hero Vida, Oben, Revolt जैसी कंपनियों को कड़ी चुनौती मिलेगी।

नए अवतार में आएगी जीप कम्पास, जारी हुआ नया डिजाइन, देखें तस्वीरें

ऑटोमेकर जीप की तरफ से पेश की जाने वाली Jeep Compass का नया जनरेशन आने वाला है। इसके नए डिजाइन की कुछ तस्वीरों को कंपनी ने जारी भी कर दिया गया है। कंपनी की तरफ से जारी की गई तस्वीरों में इसका पूरा डिजाइन बदला हुआ दिखाई दे रहा है। आइए जानते हैं कि नई Jeep Compass का डिजाइन कितना बदलेगा।

नई दिल्ली। ऑटोमेकर कंपनी Jeep ने नई Compass के डिजाइन से पर्दा हटा दिया है। इसका नया डिजाइन पहले से ज्यादा बोल्ड और शानदार है। अपडेट की गई Next-gen Jeep Compass में कई बदलाव देखने के लिए मिले हैं, जो इसके जरूरी भी था। कंपनी की तरफ से अभी फिलहाल इसके डिजाइन की कुछ फोटो को ही जारी किया गया है, अभी इसके नई तकनीक और इंटीरियर अपग्रेड की जानकारी सामने नहीं लाई गई है। आइए जानते हैं कि कंपनी की तरफ से जारी की गई फोटो में Jeep Compass के नए डिजाइन में क्या कुछ देखने के लिए मिला।

कितना बदला Jeep Compass का डिजाइन

नई जनरेशन Jeep Compass के नए डिजाइन में रैक्टेंगुलर शेप के हेडलैम्प देखने के लिए मिले हैं। जिसे देखकर लगता है कि यह जीप रिकॉन से प्रेरित हैं। इसमें स्लेटेड ग्रिल डिजाइन को पहले की तरह बरकरार रखा गया है। इसके साइड प्रोफाइल को ज्यादा पॉलिश लुक और व्हील आर्च पर भी कुछ बदलाव देखने के लिए मिला है।

इसके व्हील आर्च पर चौड़े फेंडर फ्लेयर देखने के लिए मिल रहे हैं। इसमें फ्लोटिंग रूफ इफ़ेक्ट भी देखने के लिए मिला है। इसके पीछे की तरफ LED लाइटिंग एलिमेंट के साथ शार्प रैप अराउंड टेल लैंप देखने के लिए मिला है।

नई-जनरेशन वाली Jeep Compass मौजूदा मॉडल से बड़ी हो सकती है। इसके साइज में बढ़ोतरी के साथ, नई जनरेशन वाली Jeep Compass अपनी मौजूदगी को बढ़ा सकती है और ज़्यादा जगहदार इंटीरियर से भी लैस किया जा सकता है।

कंपनी की तरफ से अभी तक इसके इंटीरियर की कोई फोटो नहीं जारी किया गया है, लेकिन हमें उम्मीद है कि इसके इंटीरियर में काफी बदलाव देखने के लिए मिल सकता है। इसमें सेंटर कंसोल, डैशबोर्ड और डोर ट्रिम्स में अपडेट देखने को मिल सकते हैं। इसमें इंफोटेनमेंट सिस्टम के लिए बड़ी स्क्रीन के साथ टेक किट भी दिया जा सकता है।

नई जनरेशन Jeep Compass में कनेक्टिविटी और ADAS किट में सुधार किया जा सकता है। हाल में मिलने वाले मॉडल में 10.1 इंच की टचस्क्रीन दिया जाता है। इसके अलावा, वेंटिलेटेड लेदर सीट, वॉयस कमांड, वायरलेस चार्जिंग और डुअल-पैन सनरूफ समेत कई फीचर्स को पहले की तरह बरकरार रखा जा सकता है।

क्या इंजन भी मिलेगा अपग्रेटेड

आने वाली नई पीढ़ी की जीप कंपास STLA मीडियम आर्किटेक्चर पर बेस्ड हो सकती है। इस प्लेटफार्म का इस्तेमाल ओपल ग्रैंडलैंड और आने वाली सिट्रोएन C5 एयरक्रॉस जैसी गाड़ियों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। अगर यह इस प्लेटफॉर्म के साथ आती है तो यह कई तरह के पावरट्रेन को सपोर्ट कर पाएगी। इसमें इलेक्ट्रिक, हाइब्रिड और प्लग-इन हाइब्रिड ऑप्शन भी देखने के लिए मिल सकता है।

लॉन्च टाइमलाइन

नई जनरेशन Jeep Compass यूरोप में साल 2025 में लॉन्च हो सकती है। वहीं, इसके भारत में लॉन्च होने की उम्मीद 2026 तक तो नहीं है, क्योंकि कंपनी मौजूदा मॉडल को भारत में कम से कम 2026 तक जारी रहने की उम्मीद है।

सरकारी दफ्तरों में कामकाज का हिसाब

विजय गर्ग

कुछ ही मिनटों में आदेश की कापी हर मोबाइल में पहुंच गई। बाबू रामलाल अपनी कुर्सी पर बैठे- बैठे चाय की चुस्कियां ले रहे थे। मिश्रा जी बोले, 'रामलाल जी, लगता है कि अमेरिका की तरह ट्रंप का फरमान यहां भी लागू हो रहा है। बताओ क्या लिखेंगे ईमेल में इस हफ्ते आपने क्या किया ?' रामलाल बोले, 'पहले तो हमको यह बताओ ईमेल में लिखते कैसे हैं?' इस पर आठिया जी हरिराम से बोले कि तुम जाओ और कंप्यूटर रूम से मौर्या को बुला लाओ। हरिराम थोड़ी देर में हांफते हुए आया और बोला, 'मौर्या तो नहीं मिले।'

हर दिन की तरह कल भी आधा दफ्तर चाय की गुमटी पर था और आधा अपनी कुर्सियों पर बैठा पांच बजने की प्रतीक्षा में ऊंघ रहा था। तभी एक चपरासी आया और सूचना पटल पर एक कागज चिपकाने लगा । आठिया बाबू ने देख लिया। पूछने लगे, 'क्या चिपका रहे हो हरिराम ?' हरिराम ने कहा, 'डीएम साहब ने दिया था। बोले, चिपका आओ, सो हमने चिपका दिया। जो है, सो आप पढ़ लें।' आदेश था, 'हर सरकारी कर्मचारी को ईमेल करके सोमवार की दोपहर तक बताना है कि इस सप्ताह उन्होंने क्या किया। जो नहीं बताएगा उसके ऊपर कार्रवाई की जाएगी।'

कुछ ही मिनटों में आदेश की कापी हर मोबाइल में पहुंच गई। बाबू रामलाल अपनी कुर्सी पर बैठे- बैठे चाय की चुस्कियां ले रहे थे। मिश्रा जी बोले, 'रामलाल जी, लगता है कि अमेरिका की तरह ट्रंप का फरमान यहां भी लागू हो रहा है। बताओ क्या लिखेंगे ईमेल में इस हफ्ते आपने क्या किया ?' रामलाल बोले, 'पहले तो हमको यह बताओ ईमेल में लिखते कैसे हैं?' इस पर आठिया जी हरिराम से बोले कि तुम जाओ और कंप्यूटर रूम से मौर्या को बुला लाओ। हरिराम थोड़ी देर में हांफते हुए आया और बोला, 'मौर्या तो नहीं मिले।' रामलाल गुस्सा होकर बोले, 'किसी को काम करने की पड़ी ही नहीं है। बताओ, चार बजे निकल गए।' वर्मा जी ने अपने चश्मे को ऊपर खिसकाया और धीमे स्वर में बोले, 'रामलाल जी, किसी से लिखवा लीजिए ईमेल, कोई कठिन काम थोड़ी है और भेज दीजिए कि इस सप्ताह क्या किया ?'

आठिया बोले, 'तो आप हमें भी सिखाइए । ' 'वह हम नहीं सिखा सकते। हमें भी अच्छे से नहीं आता। किसी और से मदद लो।' रामलाल जी गहरी आवाज में बोले, 'देखिए, ईमेल करना तो चलो कैसे न कैसे जुगाड़ लेंगे, लेकिन हमारा प्रश्न यह है कि सरकारी दफ्तरों में यह पूछना उचित है क्या ?' यह भी कोई प्रश्न है, 'पिछले हफ्ते क्या किया ?' इस पर आठिया जी ने कहा, 'देखिए जी, सरकारी काम धीरे-धीरे और आराम से होता है। इसे मछली पकड़ने की तरह समझिए, जाल डाल दिया जाता है, फिर इंतजार होता है।' रामलाल जी गंभीर स्वर में बोले, 'सरकारी दफ्तर में पिछले हफ्ते के कामकाज का हिसाब-किताब रखने की कोई अवधारणा नहीं होती, क्योंकि जो बीत गई सो बात गई।'

शाम होते-होते सभी दफ्तरों में इस आदेश को लेकर हड़कंप मच गया था। इसे देखते हुए सरकारी कर्मचारी महासंघ ने इमरजेंसी बैठक बुलाई और घोषणा की, 'तानाशाही नहीं चलेगी। आदेश वापस नहीं लेने तक हड़ताल की जाएगी। भारत बंद किया जाएगा।' विपक्ष के बयान आने शुरू हो गए, 'यह सरकारी

कर्मचारियों का उत्पीड़न है।' 'यह आदेश संविधान विरोधी है।' इसमें सबसे बढ़िया बयान एक बड़े नेता का आया, 'जाति जनगणना कराओ। वही सब समस्याओं का समाधान है।' मीडिया ने इसे 'नौकरी का एनआरसी' करार दिया, 'जिसके पास काम का सुबूत नहीं, उसकी नौकरी खतरे में!' सरकारी दफ्तरों में बैनर लग गए, 'कर्मचारी जगाओ, ईमेल भगाओ!'

उच्चाधिकारियों ने स्थिति को संभालने के लिए सफाई दी, 'हमने यह आदेश सुधार के लिए दिया था, लेकिन लगता है हम अपनी बात कर्मचारियों को समझा नहीं पाए। अगर इससे असंतोष है, तो इस आदेश को वापस लिया जाएगा।' यह बयान देखकर आठिया बाबू ने ठहाका लगाते हुए कहा, 'अब कोई फिर से पूछे कि पिछले हफ्ते क्या किया ? तो जवाब होगा, भारत बंद करवाया।'

छोटे रिएक्टरों से बढ़ेगी ऊर्जा सुरक्षा

विजय गर्ग

दुनिया में ऊर्जा उत्पादन के लिए अब बड़े परमाणु रिएक्टरों के बजाय छोटे माड्यूलर रिएक्टरों का चलन बढ़ रहा है। भारत भी माड्यूलर रिएक्टरों के मामले में किसी से पीछे नहीं रहना चाहता। हाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की फ्रांस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने आधुनिक परमाणु रिएक्टरों को संयुक्त रूप से विकसित करने का इरादा जाहिर किया। छोटे माड्यूलर रिएक्टरों (एसएमआर) और एडवांस्ड माड्यूलर रिएक्टरों (एएमआर) के बारे एक आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए। एसएमआर कांपैक्ट परमाणु विखंडन रिएक्टर हैं जिन्हें कारखानों में निर्मित किया जा सकता है और फिर कहीं और स्थापित किया जा सकता है। वे आम तौर पर पारंपरिक परमाणु रिएक्टरों की तुलना में कम क्षमता वाले होते हैं। माड्यूलर रिएक्टर माड्यूलर डिजाइन पर आधारित होता है। यह रिएक्टर छोटे और माड्यूलर इकाइयों में बनाया जाता है जिन्हें एक साथ जोड़कर एक बड़ा रिएक्टर बनाया जा सकता है। माड्यूलर रिएक्टर छोटे आकार में बनाए जा सकते हैं, जिससे उन्हें आसानी से कहीं ले जाया जा सकता है। माड्यूलर रिएक्टर की लागत कम होती है, क्योंकि उन्हें माड्यूलर इकाइयों में बनाया जाता है । माड्यूलर रिएक्टर में पैसिव कूलिंग सिस्टम जैसे कई सुरक्षा उपाय होते हैं। इनकी दक्षता बढ़ाने के लिए कई तकनीकों का उपयोग किया जाता है। स्माल माड्यूलर रिएक्टर (एसएमआर) छोटे आकार के रिएक्टर होते हैं जो 10-100 मेगावाट की क्षमता वाले होते हैं। एडवांस्ड माड्यूलर रिएक्टरों को विशेष रूप से सेफ्टी के लिए डिजाइन किया जाता है। इन रिएक्टरों को लागत की दृष्टि से प्रभावी बनाया जाता है।

एडवांस्ड माड्यूलर रिएक्टरों का विकास और उपयोग परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में एक बड़ा कदम है, जो कि सुरक्षित और कुशल उत्पादन की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है । माड्यूलर रिएक्टर का उपयोग विद्युत उत्पादन के अलावा उद्योगों में ऊर्जा उत्पादन के लिए किया जा सकता है। आने वाले समय में एआइ सिस्टम के संचालन के लिए निर्बाध ऊर्जा की आपूर्ति की जरूरत पड़ेगी। पारंपरिक ऊर्जा स्रोत एआइ सेक्टर की मांग पूरी नहीं कर सकते। निरंतर ऊर्जा के लिए माड्यूलर रिएक्टर ज्यादा उपयोगी होंगे।

भारत में माड्यूलर रिएक्टर की स्थिति में तेजी से प्रगति हो रही है। सरकार ने एसएमआर के अनुसंधान और विकास का समर्थन करने के लिए 20,000 करोड़ रुपये के बजट के साथ एक परमाणु ऊर्जा मिशन शुरू करने की योजना की घोषणा की है। भारत 2033 तक कम से कम पांच स्वदेशी रूप से विकसित एसएमआर को चालू करने की योजना बना रहा है। भारत में ऊर्जा की मांग तेजी से बढ़ रही है । माड्यूलर रिएक्टर के विकास से भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में आत्मनिर्भर बन सकता है।

रासायनिक प्रदूषण भी घोल रहा शरीर में जहर

विजय गर्ग

वायु ही नहीं, रासायनिक प्रदूषण भी देश-दुनिया में तेजी से बढ़ रहा है । यह जल को भी दूषित कर रहा है । ग्रामीण क्षेत्रों में कीटनाशक रसायनों का अत्यधिक प्रयोग घातक है। इसे नियंत्रित करने के लिए प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है अन्यथा भविष्य में इससे लोग तमाम तरह की बीमारियों से ग्रस्त हो जाएंगे। लंबे समय तक रसायनों के संपर्क में रहने से कैंसर, अंग क्षति, प्रतिरक्षा प्रणाली का कमजोर होना, एलर्जी या अस्थमा आदि कई स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं।

आलम यह है कि मानव निर्मित रसायन। अब न केवल 'फारएवर' हैं बल्कि वह अब ₹एवरी व्हेयर₹ प्रदूषक भी बन गए हैं। चाहे वायुमंडल की ऊंचाई हो या समुद्र की गहराई । मिट्टी और पेड़ों से लेकर निर्जन क्षेत्रों तक वह हर जगह पहुंच चुके हैं। सेंटर फार साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) के तत्वावधान में चल रहे तीन दिवसीय वार्षिक पर्यावरण सम्मेलन के अंतिम दिन 'पर्यावरण में रसायन' पर चर्चा में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। सीएसई की विशेषज्ञ रोहिणी कृष्णमूर्ति ने कहा कि 2019 में पर्यावरण में फैले रसायनों के कारण दुनिया भर में 20 लाख मौतें हुईं। पर्यावरण में रसायनों के उत्सर्जन की दर अधिक है। सालाना लगभग 22,000 करोड़ टन रसायन उत्सर्जित किए जाते हैं। दरअसल मनुष्य हर सेकंड 65 किग्रा कैंसर पैदा करने वाले रसायनों को वायुमंडल में उत्सर्जित करता है। कृष्णमूर्ति ने आगाह किया कि एक बार यदि शरीर में रसायन प्रवेश कर जाएं तो सिंथेटिक रसायन सबसे पहले फेफड़ों, त्वचा और आंतों पर असर डालते हैं। रक्तप्रवाह के माध्यम से गुर्दे या प्रतिरक्षा प्रणाली जैसे अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकते हैं। वह एक एक कोशिका में प्रवेश कर सकते हैं और डीएनए में मौजूद निर्देशों को प्रोटीन में परिवर्तित करने के तरीके को प्रभावित कर सकते हैं।

कहानी: तोहफा

विजय गर्ग

किसी को पसंद करना ऐसा एहसास है, जिसे लाख छिपाना चाहो तो भी दूसरों को खबर लग ही जाती है.

शैली एकटक बादलों की तरफ देख रही थी और सोच रही थी कि बहती हवाओं के साथ बदलती आकृतियों में ढलते रुई के फाहों से ये बादल के टुकड़े मन को कितना सुकून देते हैं. लगता है जैसे अपना ही वजूद वक्त के झोंकों के साथ कभी सिमट रहा है, तो कभी नए आयामों को छूने का प्रयास कर रहा है. एक अजीब सा स्पंदन था उस के मन के हर कोने में. लोग कहते हैं, प्रेम की उम्र तो बस युवावस्था में ही होती है. मगर शैली उस की अल्हड़ता को इस उम्र में भी उतनी ही प्रगाढ़ता से महसूस कर रही थी. उस का मन तो चाह रहा था कि वह भी हवा के झोंकों के साथ उड़ जाए. वहां जहां किसी की भी नजर न पड़े उस पर. बस वह हो और उस के एहसास.

वह बचपन से आज तक अपनी जिंदगी अपने ही तरीकों से जीती आई है. कभी जिंदगी की गति को चंद पड़ावों में नहीं बांटा वरन नदी के प्रवाह की तरह बह जाने दिया. उस दिन सुमित ने उसे छेड़ा था, ''तुम दूसरों जैसी बिलकुल भी नहीं, काफी अलग तरह से सोचती हो और अपनी जिंदगी के प्रति तुम्हारा रवैया भी बहुत अलग है''

''हां सच कहा. वैसे होता तो यही है कि लोगों की जिंदगी की शुरुआत में ही तय कर दिया जाता है कि इस उम्र में पढ़ाई पूरी करनी है, उस उम्र में शादी, बच्चे और फिर उम्र भर के लिए उसी रिश्ते में बंधे रहना. भले ही खुशी से ज्यादा गम ही क्यों न मिले. मैं घिसेपिटे फौर्मूले से अलग जीना चाहती हूं, इसलिए स्वयं को एक मकसद के हवाले कर दिया. मकसद के बगैर इंसान कितना अधूरा होता है न.'' ''पर मुझे तो लगता है कि जो इंसान अधूरा होता है, वही जीने के लिए मकसद तलाशता है.''

सुमित ने उस की कही बात की खिल्ली उड़ाने जैसी बात कही थी पर वह सुमित के इस कथन से स्वयं को विचलित होता दिखाना नहीं चाहती थी. उस ने स्वयं को समझाया कि बिलकुल विपरीत सोच है सुमित की, तो इस में बुराई क्या है? नदी के 2 किनारों की तरह हम भी नहीं मिल सकते पर साथ तो चल सकते हैं. उस ने सुमित से बस इतना कहा था, ''क्या इंसान को पूर्ण होने के लिए दूसरे की मदद लेनी जरूरी है? क्या प्रकृति ने इंसान को पूर्ण बना कर नहीं भेजा है? लोग यह क्यों समझते हैं कि जीवनसाथी के बगैर व्यक्ति अधूरा है.''

''मैं ने यह तो नहीं कहा,'' सुमित ने प्रतिरोध किया.

''मगर तुम्हारे कहने का अर्थ तो यही था.''

''नहीं ऐसा नहीं है. तुम ने मेरी बात को उसी रूप में घुमा लिया जैसा तुम दूसरों को बोलते सुनती हो.''

फिर थोड़ी देर शैली खामोश रही तो सुमित ने उसे छेड़ते हुए पूछा, ''एक बात बताओ शैली, तुम्हें इतना बोलना क्यों पसंद है? कभी खामोश रह कर भी देखो. उन लमहों को महसूस करो जिन्हें वैसे कभी महसूस नहीं कर सकतीं. बहुत सी बातें और यादें एकएक कर तुम्हारे जेहन में खिले फलों सी महकने लगेंगी.'' ''जरूरी नहीं कि वह फूलों की महक ही हो, कांटों की चुभन भी हो सकती है. तो कोई क्यों आने दे उन एहसासों को मन के गलियारों में फिर से?''

''तुम ने कभी अपने बारे में कुछ नहीं बताया, पर लगता है कि तुम जिस से बेहद प्यार करती थीं उसी ने गम दिया है तुम्हें.''

''कोई बात मैं कहती हूं, तो जरूरी तो नहीं कि उस का सरोकार मुझ से हो ही.''

''कुछ भी कह लो, पर तुम्हारी जबान कभी तुम्हारी आंखों का साथ नहीं देती.''

''साथ तो कोई किसी का नहीं देता. साथ की

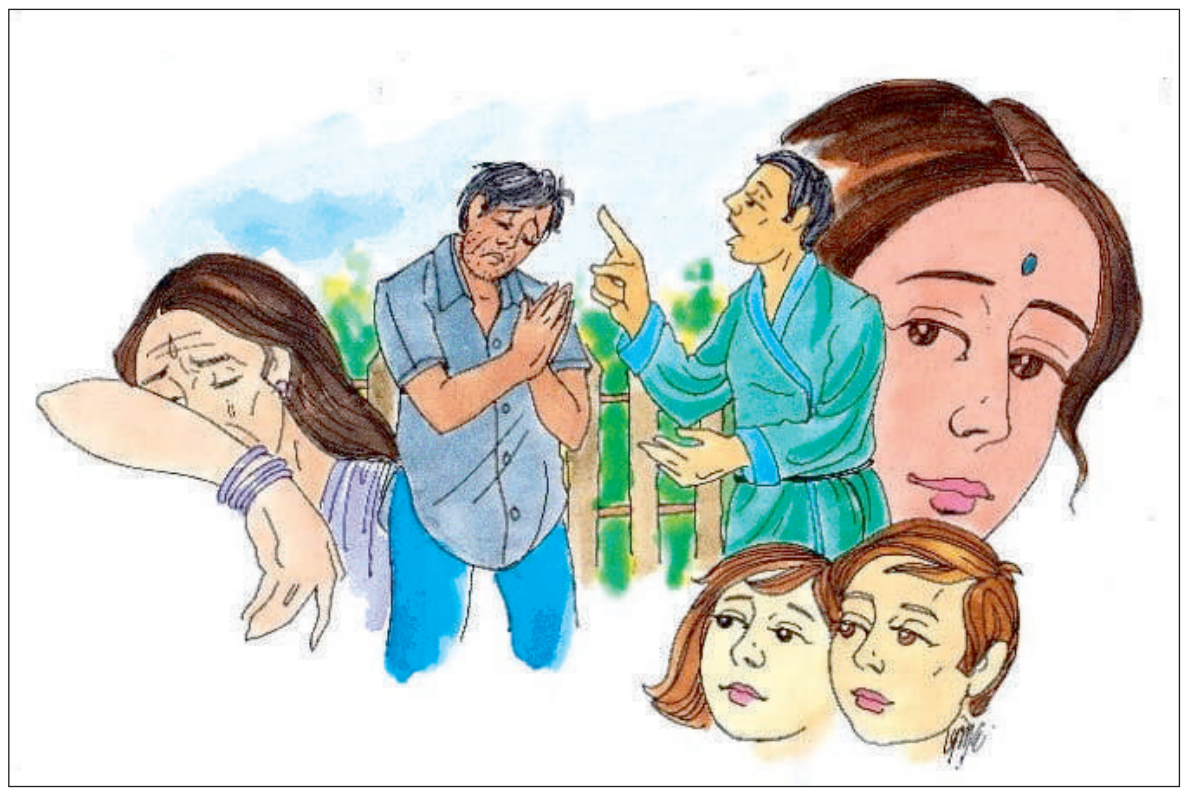

आस करना ही बेमानी है. जो अपना होता है, परछाईं की तरह खुद ही साथ चला आता है. पर किसी से अपेक्षाएं रखो तो गमों के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता.''

''तुम्हारी बातें मुझे समझ में नहीं आतीं, पर बहुत अच्छी लगती हैं. लगता है जैसे शब्दों के साथ खेल रही हो. काश तुम्हारा यह अंदाज मेरे पास भी होता.''

''वैसे शब्दों से खेलते तो तुम भी हो. अंतर सिर्फ इतना है कि दोनों का अंदाज अलगअलग है,'' यह कहते हुए. एक राज भरी मुसकान आई थी शैली के होंठों पर. उसे न जाने क्यों आजकल सुमित से मिलना, बातें करना अच्छा लगने लगा था. सब से पहले सुमित की पेंटिंग्स देख कर उस की और आकर्षित हुई थी वह. पर अब उस की बातें भी अच्छी लगने लगी थीं.

किसी को पसंद करना ऐसा एहसास है, जिसे लाख छिपाना चाहो तो भी दूसरों को खबर लग ही जाती है. कल की ही तो बात है. वह बरामदे में बैठी सुमित की बातें सोच रही थी कि बेटी नेहा का स्वर गूंजा, ''ममा अकेली बैठ कर मुसकरा क्यों रही हो?'' वह कोई जवाब नहीं दे सकी. तुरंत खड़ी हो गई जैसे चोरी पकड़ी गई हो.फिर खुद को संभाल कर, प्यार से बेटी के कंधों पर हाथ रखते हुए बोली, ''कुछ नहीं, सोच रही हूं कि आज खाने में क्या बनाऊं,'' और किचन की तरफ चल दी. कितना अंतर था सुमित और उस के पति संकल्प में. कढ़ी बनाते समय सहसा ही पुराने जख्म हरे हो गए थे. उस के जेहन में संकल्प के कहे गए शब्द गूंजने लगे थे.

''शैली तुम खाना अच्छा बनाती हो. पर जो भी हो तुम्हारी बनाई कढ़ी में वह स्वाद नहीं जो अम्मां की बनाई कढ़ी में आता है.''

अपने पति का यह रिमार्क उसे अंदर तक बेध गया क्योंकि सामने बैठी सास ने बड़े ही व्यंग्य से मुसकुरा कर उसे देखा था. यह एक दिन की बात नहीं थी. रोज ही ऐसा होता था. संकल्प मां के गुण गाता, मां मुसकरातीं और यह मुसकराहट जले पर नमक का काम करती. शैली बातबात पर संकल्प से झगड़ कर अपना गुस्सा उतारती, तो संकल्प भी उसे जी भर कर जलीकटी सुनाता. उस के पिता ने कितने अरमानों से संकल्प के साथ उस की शादी की थी. उस ने भी ख्वाहिशें लिए हुए ही ससुराल में कदम रखा था. पर छोटीछोटी बातों ने कब रिश्तों में दरारें पैदा कर दीं, उसे पता ही नहीं चला. कभी सास के साथ बदतमीजी की बात, कभी दोस्तों, रिश्तेदारों की सही आवभगत न करने की शिकायत. कभी बात न मानने का गिला और कभी अपनी मरजी चलाने का हवाला दे कर किसी न किसी तरह संकल्प उस पर बरसते ही रहते थे और कभी अन्याय न सहने वाली शैली हर दफा बंद कमरे में चीखचीख कर रोती और अपना गुस्सा उतारती.

इस तरह अपने गुस्से की आग को पानी बनाने के प्रयास में कब उस का प्यार भी पानी बनता चला गया इस बात का उसे एहसास भी नहीं हुआ. अब संकल्प के करीब आने पर उसे मिलन की उत्कंठा नहीं होती थी. कोई एहसास नहीं जागता था. उन दोनों के बीच वक्त के साथ दूरियां बढ़ती ही गईं और एक दिन उस ने अलग रहने का फैसला कर लिया, जब छोटी सी बात पर संकल्प ने उस पर हाथ उठा दिया. दरअसल, उस की सास सदा ही शैली के खिलाफ संकल्प को भड़काती रहतीं और उलटीसीधी बातें कहतीं.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

सोने-चांदी की कीमतों में तेजी जारी, चेक करें लेटेस्ट प्राइस

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में सोना 300 रुपये चढ़कर 89300 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया जबकि चांदी 1000 रुपये बढ़कर 99000 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। सुरक्षित निवेश की मांग और वैश्विक बाजारों में मजबूती के कारण यह बढ़ोतरी जारी है। अमेरिकी टैरिफ वॉर के बढ़ने से निवेशक सोने की ओर रुख कर रहे हैं। वैश्विक स्तर पर सोना 2926 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड कर रहा है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में सोने की कीमतों में बुधवार को 300 रुपये की तेजी आई। इससे यह 89,300 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंच गया। यह बढ़ोतरी वैश्विक बाजारों में मजबूती और सुरक्षित निवेश की बढ़ती मांग के कारण देखी गई। इससे पहले मंगलवार को सोना 89,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। 20 फरवरी को सोना अब तक के अपने रिकॉर्ड स्तर 89,450 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंचा था।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के सीनियर कमोडिटी एनालिस्ट सौमिल गांधी के अनुसार, ₹बुधवार को सोने की कीमतों में लगातार तीसरे दिन बढ़ोतरी हुई। इसकी प्रमुख वजह सुरक्षित निवेश की ओर रुझान और अमेरिकी डॉलर में नरमी है, जिससे पीली धातु को समर्थन मिला है।"

उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका ने नया टैरिफ लगाया है। उसके जवाब में कनाडा और चीन ने भी कुछ अमेरिकी उत्पादों पर टैरिफ बढ़ा दिया है। इससे ट्रेड वॉर तेज होने की आशंका बढ़ गई है। इस स्थिति में निवेशकों का झुकाव सुरक्षित संपत्तियों की ओर बढ़ रहा है, जिससे सोने की मांग में इजाफा हुआ है।

चांदी की भी बढ़ी चमक

सोने की तरह ही चांदी की कीमतों में भी जबरदस्त उछाल आया। मंगलवार को 98,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद होने के बाद, चांदी बुधवार को 1,000 रुपये की बढ़ोतरी के साथ 99,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। वहीं, एमसीएक्स (मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज) पर अप्रैल डिलीवरी के लिए सोने के वायदा भाव 38 रुपये बढ़कर 86,064 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गए।

वैश्विक बाजारों में भी सोने की कीमतों में बढ़ोतरी देखी गई। अप्रैल डिलीवरी के लिए गोल्ड फ्यूचर्स 0.18% बढ़कर 2,926 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। हालांकि, स्पॉट गोल्ड 2,917.72 डॉलर प्रति औंस पर लगभग स्थिर बना रहा।

गोल्ड पर एक्सपर्ट की राय

कोटक सिक्योरिटीज की एवीपी-कमोडिटी रिसर्च, कायनात चैनवाला ने बताया कि ₹सोना 2,925 डॉलर प्रति औंस के करीब ट्रेड कर रहा है। लेकिन इसकी तेज बढ़त सीमित हो सकती है क्योंकि अमेरिका के वाणिज्य सचिव हॉवर्ड लटकनिक ने कनाडा और मैक्सिको के लिए संभावित टैरिफ राहत का संकेत दिया है। अगर इस पर सहमति बनती है और शुल्क में कटौती होती है, तो सोने की कीमतों पर दबाव आ सकता है।₹

उन्होंने आगे कहा कि निवेशक प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के सेवा पीएमआई डेटा और अमेरिका के निजी रोजगार आंकड़ों पर नजर बनाए हुए हैं, जिससे वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के बारे में संकेत मिल सकते हैं। वहीं, एलकेपी सिक्योरिटीज के वीपी (कमोडिटी और करेंसी रिसर्च एनालिस्ट) जतिन त्रिवेदी के अनुसार, अमेरिकी नौकरियों से जुड़े अहम आर्थिक आंकड़ों जैसे ADP नॉन-फार्म एम्प्लॉयमेंट और नॉन-फार्म पेरोल्स पर भी निवेशकों की नजर रहेगी, जिससे बुलियन बाजार की दिशा तय होगी।

भारत में बढ़ रही रईसी, 191 हुई अरबपतियों की संख्या

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में करोड़पतियों (HNWIs) की संख्या 2024 में 6% बढ़कर 85698 हो गई जबकि 2028 तक यह 93753 तक पहुंचने का अनुमान है। भारत में अरबपतियों की संख्या 191 हो गई जिनकी कुल संपत्ति 950 अरब डॉलर आंकी गई है। अमेरिका और चीन के बाद भारत तीसरे स्थान पर है। लग्जरी निवेश में कलाकृतियों और दुर्लभ व्हिस्की की कीमतों में गिरावट आई। हैंडबैग की कीमतों में 2.8% की वृद्धि हुई।

नई दिल्ली। ग्लोबल रियल एस्टेट कंसल्टेंट कंपनी नाइट फ्रैंक का कहना है कि एक करोड़ डॉलर से अधिक की संपत्ति वाले उच्च नेटवर्थ भारतीयों की संख्या पिछले साल छह प्रतिशत बढ़कर 85,698 हो गई। नाइट फ्रैंक ने बुधवार को अपनी 'द वेल्थ रिपोर्ट-2025' जारी की। इसमें अनुमान लगाया गया है कि भारत में उच्च नेटवर्थ वालों (एचएनडब्ल्यूआई) की संख्या बढ़कर 2024 में 85,698 होने का अनुमान है जबकि पिछले साल यह 80,686 थी। कंपनी ने कहा कि 2028 तक यह संख्या बढ़कर 93,753 पर पहुंचने की उम्मीद है।

अब सिर्फ अमेरिका और चीन आगे

रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वैश्विक स्तर पर 3.7 प्रतिशत एचएनआई रहते हैं और वर्तमान में यह अमेरिका (9,05,413), चीन (4,71,634) और जापान (1,22,119) के बाद चौथे स्थान पर है। उच्च नेटवर्थ वाले लोगों की बढ़ती संख्या देश की मजबूत दीर्घकालीन आर्थिक वृद्धि, बढ़ते निवेश अवसरों और विकसित हो रहे लग्जरी बाजार को दर्शाती है। यह भारत को वैश्विक धन सृजन में एक प्रमुख देश के रूप में स्थापित करती है। इससे भारत के बढ़ते दबदबे का भी पता चलता है।

अरबपतियों की संयुक्त संपत्ति 950 अरब डॉलर

भारत में अरबपतियों की आबादी में भी 2024 में सालाना आधार पर मजबूत वृद्धि हुई है। परामर्श कंपनी ने कहा, 'भारत में अब 191 अरबपति हैं। इनमें से 26 पिछले साल ही इस श्रेणी में शामिल हुए हैं। जबकि 2019 में यह संख्या सिर्फ सात थी।' भारतीय अरबपतियों की संयुक्त संपत्ति 950 अरब डॉलर आंकी गई है, जो अमेरिका (5,700 अरब डॉलर) और चीन (1,340 अरब डॉलर) के बाद वैश्विक स्तर पर तीसरे स्थान पर है। वैश्विक स्तर पर अति धनवानों की संख्या 2024 में 4.4 प्रतिशत बढ़कर 2,341,378 हो गई, जो एक साल पहले 2,243,300 थी।

दुर्लभ व्हिस्की की कीमतों में 2024 में गिरावट

जुनून की हद तक लोकप्रिय शीर्ष 10 निवेश श्रेणियों के तहत आने वाली कलाकृतियों की कीमतों में बीते साल अधिकतम 18.3 प्रतिशत तक की गिरावट आई। नाइट फ्रैंक की रिपोर्ट के अनुसार, इस श्रेणी में शराब और दुर्लभ व्हिस्की की दरों में नौ प्रतिशत की कमी हुई। रिपोर्ट में बताया गया कि इन 10 वस्तुओं में केवल पांच की कीमतों में 2024 के दौरान वृद्धि हुई। इस श्रेणी में हैंडबैग ने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया, जिसकी कीमतें 2024 में 2.8 प्रतिशत बढ़ीं।

सेंसेक्स में जबरदस्त उछाल, निफ्टी ने तोड़ा 10 दिनों की गिरावट का सिलसिला

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय शेयर बाजार ने 10 दिनों की गिरावट तोड़ते हुए जबरदस्त उछाल दर्ज किया। सेंसेक्स 740 अंक चढ़कर 73730.23 पर बंद हुआ जबकि निफ्टी 254.65 अंक बढ़कर 22337.30 पर पहुंच गया। अदाणी पोर्ट्स टाटा स्टील एसबीआई सहित कई स्टॉक्स में तेजी रही। HSBC इंडिया सर्विसेज PMI 59.0 तक बढ़ने से बाजार को सपोर्ट मिला। वैश्विक बाजारों में मजबूती और अमेरिकी टैरिफ राहत की संभावनाओं ने निवेशकों का भरोसा बढ़ाया।

नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार ने बुधवार को मजबूती दिखाई। बीएसई सेंसेक्स 740 अंकों की बढ़त के साथ 73,730.23 पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 254.65 अंक चढ़कर 22,337.30 पर पहुंच गया। लगातार 10 दिनों की गिरावट के बाद बाजार में आई इस तेजी ने निवेशकों को राहत दी। सेंसेक्स ने दिनभर के कारोबार में 943.87 अंकों की छलांग लगाते हुए 73,933.80 का उच्चतम स्तर छुआ। इसी तरह निफ्टी ने 312.25 अंकों की बढ़त के साथ 22,394.90 के स्तर तक पहुंचने के बाद मजबूती के साथ बंद हुआ।

बाजार में कहां दिखी तेजी?

आज अदाणी पोर्ट्स, टाटा स्टील, पावर ग्रिड, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एनटीपीसी, टेक महिंद्रा, टाटा मोटर्स, आईटीसी, नेस्ले इंडिया, एचसीएल टेक्नोलॉजीज, भारती एयरटेल, एसबीआई, एशियन पेंट्स और कोटक महिंद्रा बैंक के शेयरों में अच्छी खरीदारी देखने को मिली। दूसरी ओर, बजाज फाइनेंस, इंडसइंड बैंक, एचडीएफसी बैंक और जोमैटो के शेयरों में गिरावट दर्ज की गई।

बाजार में तेजी की वजहें

इस उछाल के पीछे कई अहम कारक रहे। वैश्विक बाजारों में मजबूती देखने को मिली। इससे भारतीय बाजार में भी निवेशकों का भरोसा बढ़ा। एक प्रमुख कारण यह भी रहा कि अमेरिकी प्रशासन के कुछ टैरिफ कम करने की संभावनाओं ने निवेशकों को राहत दी। इस खबर के बाद वैश्विक बाजारों में खरीदारी बढ़ी और इसका सकारात्मक असर भारतीय शेयर बाजार पर भी दिखा।

सर्विसेज सेक्टर में दिखी मजबूती

फरवरी में भारत के सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में जबरदस्त उछाल देखा गया। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मांग में बढ़ोतरी के कारण आउटपुट में तेजी आई। कंपनियों ने बड़े स्तर पर नई भर्तियां भी कीं।

HSBC इंडिया सर्विसेज पीएमआई बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स जनवरी के 56.5 से बढ़कर फरवरी में 59.0 हो गया, जो पिछले 26 महीनों का उच्चतम स्तर है। HSBC की मुख्य भारतीय अर्थशास्त्री प्रांजल भंडारी के मुताबिक, वैश्विक मांग में आई मजबूती ने सेवा क्षेत्र की ग्रोथ को तेज़ किया है।

वैश्विक बाजारों से सकारात्मक संकेत

एशियाई बाजारों में भी मजबूती देखने को मिली। टोक्यो, शंघाई, हांगकांग और सियोल के बाजार बढ़त के साथ बंद हुए। यूरोपीय बाजार भी सकारात्मक रुख में रहे, हालांकि वॉल स्ट्रीट मंगलवार को गिरावट के साथ बंद हुआ।

इस बीच, ब्रेंट क्रूड की कीमतों में हल्की गिरावट दर्ज की गई और यह 70.69 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को थोड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। विदेशी संस्थागत निवेशकों (FII) ने मंगलवार को भारतीय बाजार में 3,405.82 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी। इसके बावजूद, घरेलू निवेशकों ने मजबूत खरीदारी कर बाजार को संभाले रखा।

आगे कैसी रहेगी बाजार की चाल

विशेषज्ञों का मानना है कि अगर निफ्टी 22,200-22,500 के स्तर को पार करता है, तो बाजार में और मजबूती देखने को मिल सकती है। वहीं, यदि सेंसेक्स 72,300 के नीचे जाता है, तो इसमें और गिरावट की संभावना रहेगी। आने वाले दिनों में वैश्विक संकेतों, कच्चे तेल की कीमतों और विदेशी निवेशकों के मूड पर बाजार की दिशा निर्भर करेगी।

वर्कफोर्स में कितनी बढ़ी महिलाओं की भागीदारी, कहां आ रही हैं चुनौतियां?

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी तेजी से बढ़ रही है। सरकार 2047 तक 70% महिलाओं को कार्यबल में शामिल करने के लक्ष्य पर काम कर रही है। NeoGrowth NeoInsights रिपोर्ट के अनुसार 70% महिलाओं ने अपने सपनों को पूरा करने के लिए व्यवसाय शुरू किया जबकि 90% ने अपने व्यवसाय के कारण समाज में सम्मान पाया। 81% महिलाएं अपने बिजनेस को स्वतंत्र रूप से संचालित कर रही हैं।

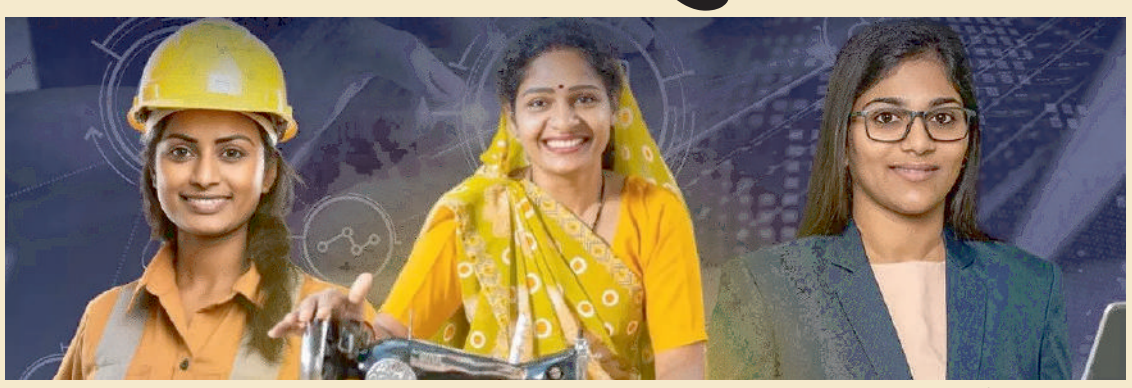

नई दिल्ली। सरकार वर्कफोर्स में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए लगातार कोशिश कर रही है। वह चाहती है कि जब विकसित भारत 2047 का सपना साकार हो, तो महिलाओं की कार्यबल में अच्छी-खासी हिस्सेदारी हो। केंद्रीय श्रम सचिव सुमिता डावरा का कहना है कि 2047 तक 70% महिलाओं को कार्यबल में शामिल करना सरकार का बड़ा लक्ष्य है। उन्होंने महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए बेहतर शिक्षा, मेंटरशिप और वित्तीय मदद पर जोर दिया।

NeoGrowth की हालिया NeoInsights रिपोर्ट भी भारत में महिलाओं की बढ़ती उद्यमशीलता भावना को उजागर करती है। इस सर्वे में 3,000+ महिला उद्यमियों की भागीदारी रही। इसमें उनके प्रेरणास्रोत, चुनौतियों और सामाजिक प्रभाव पर गहन अध्ययन किया गया। NeoGrowth एक NBFC-ML (गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी– मिड-लेयर) है, जो महिला उद्यमियों को MSME फाइनेंसिंग के जरिए सपोर्ट करती है।

महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने की जरूरत

CII के एक कार्यक्रम में बोलते हुए डावरा ने कहा कि आने वाले समय में कई ऐसे सेक्टर हैं, जहां महिलाओं की भागीदारी और बढ़ सकती है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के तहत महिलाओं की शिक्षा को मजबूत करने की जरूरत बताई। उन्होंने महिला उद्यमियों के लिए आर्थिक सहायता और सही मार्गदर्शन (मेंटरशिप) को भी जरूरी बताया।

महिलाओं के रोजगार में चुनौतियां

महिलाओं के सामने नौकरी पाने और उसे बनाए रखने में कई चुनौतियां हैं। जैसे कि काम के कम मौके, पुरुषों की तुलना में कम वेतन, नौकरी की सुरक्षा को लेकर चिंता, घर और करियर के बीच संतुलन बनाने की मुश्किल। डावरा का कहना है कि 45% महिलाएं घर-परिवार और बच्चों की देखभाल के कारण नौकरी नहीं कर पातीं। हालांकि, पिछले छह सालों में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में अच्छी बढ़ोतरी हुई है। डावरा ने बताया कि आज महिलाएं सेवा क्षेत्र, टेक्नोलॉजी, वित्त और मैन्युफैक्चरिंग में बेहतरीन काम कर रही हैं।

महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

15 साल से ज्यादा उम्र की महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर (WPR) 2017-18 में 22% थी, जो 2023-24 में 40.3% हो गई। वहीं, महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 2017-18 में 23% थी, जो अब 42% तक पहुंच गई है। उन्होंने इसे भारत के आर्थिक बदलाव का एक अहम संकेत बताया। अब ज्यादा शिक्षित महिलाएं भी नौकरी कर रही हैं। 2023-24 में पोस्ट-ग्रेजुएट और उससे ज्यादा पढ़ी-लिखी 40% महिलाएं काम कर रही थीं, जबकि छह साल पहले यह आंकड़ा 35% था।

NeoInsights रिपोर्ट की खास बातें

70% महिलाओं ने अपने सपनों को पूरा खुद व्यवसाय शुरू किया, न कि केवल आर्थिक जरूरतों के कारण।

90% महिलाओं ने बताया कि उनके व्यवसायों के कारण समाज में उनके प्रति सम्मान बढ़ा है।

98% महिलाओं ने परिवार और समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव डाला। इसमें से 67% ने अन्य महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता की ओर प्रेरित किया।

81% महिलाएं अपने व्यवसाय को पूरी तरह स्वतंत्र रूप से संचालित करती हैं, जबकि 19% को परिवार या जीवनसाथी से सहायता मिलती है।

64% महिला उद्यमी अपने व्यवसायों में अन्य महिलाओं को रोजगार देने को प्राथमिकता देती हैं।

महिला उद्यमियों के सामने चुनौतियां

महिला उद्यमियों को लैंगिक पूर्वाग्रह (27%), बाजार में उतार-चढ़ाव (34%) और संसाधनों की कमी (32%) जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद, वे वित्तीय अनुशासन बनाए रखती हैं। इसे जिससे 93% महिलाएं अपने वित्तीय जरूरतों को खुद मैनेज करती हैं और समय पर EMI भुगतान करती हैं। महिलाओं लगातार खुद को अपडेट भी कर रही हैं, ताकि वे आने वाली चुनौतियों का मुकाबला कर सकेंगे। 90% महिला व्यवसायी डिजिटल तकनीकों को अपना रही हैं, ताकि वे अपने ग्राहक आधार को बढ़ा सकें और संचालन को अधिक कुशल बना सकें।

पीएमआई डेटा से मिली खुशखबरी; पटरी पर लौट रही इकोनॉमी, रोजगार भी बढ़ा

परिवहन विशेष न्यूज

फरवरी में HSBC इंडिया सर्विसेज PMI इंडेक्स 59.0 पर पहुंच गया जो जनवरी के 26 महीने के निचले स्तर 56.5 से ऊपर है। ग्लोबल डिमांड और नए ऑर्डर्स के चलते सेवा क्षेत्र में मजबूत रिकवरी हुई। अफ्रीका एशिया यूरोप और अमेरिका से अंतरराष्ट्रीय ऑर्डर बढ़े जिससे रोजगार में उछाल आया। विज्ञापन रणनीतियों और उत्पादकता सुधार से भविष्य की ग्रोथ को लेकर कंपनियां सकारात्मक हैं।

नई दिल्ली। भारत के सेवा क्षेत्र (Services Sector) में फरवरी में जबरदस्त उछाल देखने को मिला, जिसका प्रमुख कारण घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मांग में तेजी रहा। इस बढ़ती मांग के चलते उत्पादन में तेजी आई और कंपनियों ने बड़े पैमाने पर नई भर्तियां कीं। यह जानकारी बुधवार को जारी मंथली सर्वे- HSBC इंडिया सर्विसेज PMI बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स से मिली। यह जनवरी के 26 महीने के निचले स्तर 56.5 से बढ़कर फरवरी में 59.0 पर पहुंच गया, जो मजबूत विकास दर का संकेत देता है।

PMI इंडेक्स का मतलब क्या है?

परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (PMI) में 50 से ऊपर का स्कोर विकास (Expansion) को बताता है, जबकि 50 से नीचे का स्कोर गिरावट (Contraction) को दर्शाता है।

HSBC की मुख्य भारतीय अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा, ₹फरवरी में भारत का सेवा क्षेत्र गतिविधि सूचकांक (PMI) 59.0 तक पहुंच गया, जो जनवरी के 26 महीने के निचले स्तर 56.5 से काफी ऊपर है। ग्लोबल डिमांड बीते छह महीनों में सबसे तेज गति से बढ़ी। इसने भारत के सेवा क्षेत्र के उत्पादन में वृद्धि में अहम भूमिका निभाई।"

नई डिमांड और अंतरराष्ट्रीय ऑर्डर ने दी रफ्तार

इस सर्वे के अनुसार, उत्पादकता में सुधार, मजबूत मांग और नए ऑर्डर की आवक के कारण सेवा क्षेत्र की ग्रोथ को बढ़ावा मिला। अंतरराष्ट्रीय ऑर्डर में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जिसमें अफ्रीका, एशिया, यूरोप, अमेरिका और मिडिल ईस्ट से बेहतर मांग दर्ज की गई।

रोजगार के मोर्चे पर बड़ी छलांग

बढ़ते ऑर्डर्स और कैपेसिटी प्रेशर को कम करने के लिए भारतीय सेवा क्षेत्र की कंपनियों ने नए कर्मचारियों की भर्ती तेज कर दी। सर्वे के अनुसार, नौकरी देने की रफ्तार 2005 से डेटा कलेक्शन शुरू होने के बाद के सबसे तेज स्तरों में से एक रही।

प्रांजुल भंडारी ने आगे कहा, ₹फरवरी में रोजगार सृजन और कीमतों में बढ़ोतरी की प्रवृत्ति मजबूत बनी रही। आगे के लिए बिजनेस सेंटिमेंट पॉजिटिव बना हुआ हैष हालांकि यह अगस्त 2024 के बाद के सबसे निचले स्तर पर आ गया है"

विज्ञापन से बड़ी मदद

सर्वे के मुताबिक, बेहतर विज्ञापन रणनीति, ग्राहक संबंधों में सुधार, उत्पादकता बढ़ने और मांग के मजबूत रहने से आने वाले साल में सेवा क्षेत्र में और ग्रोथ की उम्मीद है। 25% कंपनियों ने भविष्य में ग्रोथ का अनुमान लगाया है। 2% से भी कम कंपनियों ने नकारात्मक नजरिया जताया है।

सर्वे से यह भी पता चलता है कि रोजगार के अवसर जनवरी के रिकॉर्ड स्तर के करीब रहे। प्राइवेट सेक्टर में लागत दबाव पिछले अक्टूबर के बाद से सबसे कम स्तर पर रहा।

आखिर क्यों लोग वोट देने क्यों नहीं निकल रहे ?

-डॉ सत्यवान सौरभ

राजनीति और लोकतंत्र की ताकत इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) में निहित है। आखिरकार, मतदान एक महत्वपूर्ण शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, और हर मतदाता के लिए इसे पहचानना महत्वपूर्ण है। राष्ट्र हमारा है, और हमारा लोकतंत्र भी हमारा है। इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में, वोट की सबसे बड़ी ताकत होती है। इस शक्ति से हम अपना और अपने बच्चों का भविष्य संवारते हैं। इसलिए, 18 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह चुनाव में भाग ले। मतदान न करने का विकल्प चुनना अनिवार्य रूप से इस लोकतांत्रिक दायित्व से विमुख होना है। हर मतदाता को अपने व्यस्त जीवन के बावजूद भी चुनावी प्रक्रिया में शामिल होने का प्रयास करना चाहिए। जिस तरह लोग सुख और समृद्धि के लिए प्रार्थना करने के लिए पूजा स्थलों पर जाने के लिए समय निकालते हैं, उसी तरह हमें संसद को अपने लोकतंत्र के पवित्र स्थान के रूप में देखना चाहिए। चुनाव इस लोकतंत्र का उत्सव है, और मतदान की अपनी जिम्मेदारी को पूरा करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से, कई आम नागरिकों, खासकर युवाओं, जो हमारे देश का भविष्य हैं, के लिए मतदान करना प्राथमिकता से कम हो गया है। वे अक्सर लोकतांत्रिक प्रक्रिया से सच्चे उत्साह और देशभक्ति के साथ जुड़ने में विफल रहते हैं। कई कामकाजी लोग अपने परिवार के साथ मतदान दिवस का आनंद लेने के लिए उत्सुक रहते हैं, लेकिन युवाओं के लिए मतदान अक्सर पीछे छूट जाता है। उनकी मानसिकता यह होती है, "अगर छुट्टियों के मौज-मस्ती के दौरान मेरे पास समय होगा, तो मैं मतदान करूंगा," और अगर उन्हें मतदान केंद्रों पर लंबी कतारें मिलती हैं, तो वे इस विचार को पूरी तरह से त्याग सकते हैं। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि युवा पीढ़ी के लिए मतदान प्राथमिकता नहीं है, और नागरिक कर्तव्य के महत्व को समझाने के बुजुर्गों के प्रयासों के बावजूद, उनकी सलाह अक्सर अनसुनी हो जाती है। यह मतदान गिरावट में योगदान देने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

राजनीति की स्थिति इतनी खराब हो गई है कि मतदाता अक्सर नेताओं में अपनी पसंद पर सवाल उठाते हैं। एक राजनेता कई सालों तक किसी पार्टी के साथ रह सकता है, सत्ता के लाभों का आनंद ले सकता है, लेकिन जब उन्हें आगामी चुनावों

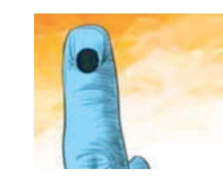

में संभावित हार का आभास होता है, तो वे पार्टी बदल लेते हैं और उसी संगठन की आलोचना करना शुरू कर देते हैं जिसका वे इतने लंबे समय तक हिस्सा रहे हैं। इस व्यवहार ने मतदाताओं का अपने नेताओं पर भरोसा खत्म कर दिया है, जो हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए परेशान करने वाला है। आजादी के पचहत्तर साल बाद, दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे पुराना लोकतंत्र भारत, लोकतंत्र में कम होते विश्वास के बारे में वैश्विक चिंताओं का सामना कर रहा है। क्या नागरिक कथित राजनीतिक तानाशाही से उत्पीड़ित महसूस कर रहे हैं और ब्रिटिश राज की याद कर रहे हैं? क्या लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण चुनावी प्रक्रिया में रुचि कम हो रही है? ये ज्वलंत प्रश्न समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उठाए जा रहे हैं, जो चुनावों में मतदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट से उजागर होते हैं। इस मुद्दे की जड़ केवल युवा मतदाता नहीं हैं; यह नई पीढ़ी में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना पैदा करने में सामूहिक विफलता है। अगर ये मूल्य घर पर उनकी प्रारंभिक शिक्षा का हिस्सा होते, तो शायद आज हम इस स्थिति का सामना नहीं कर रहे होते। अगर हम देशभक्ति और नागरिक जिम्मेदारियों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर विचार करने के लिए एक पल भी निकालें, तो हम खुद को कमतर पा सकते हैं। दैनिक जीवन की भागदौड़ में, हम अक्सर अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों पर विचार करना भूल जाते हैं। हालाँकि, हमारे पास अभी भी अपने निजी मुद्दों के साथ-साथ राष्ट्रीय मुद्दों पर भी विचार करने का समय है। हमें अपने देश की वर्तमान राजनीतिक दिशा पर गंभीरता से विचार करना चाहिए; अन्यथा, हम पुरानी कहावत को दोहराने का जोखिम उठाते हैं, "'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' ?

राजनीति में सिद्धांतों को प्राथमिकता देना ज़रूरी है। राजनीतिक कार्रवाइयों में हमेशा राष्ट्र की भलाई को ध्यान में रखना चाहिए। पार्टी बदलने से पहले हमें यह सोचना चाहिए कि यह फ़ैसला हमारे समर्थकों को कैसे प्रभावित करेगा। नेता तो जल्दी बदल सकते हैं, लेकिन मतदाताओं का दिल जीतने में समय लगता है। मतदान में वृद्धि के लिए नेताओं को मतदाताओं की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए और उनकी भावनाओं से खिलवाड़ करने से बचना चाहिए। लोकतंत्र को मज़बूत करने के लिए राजनीति में मज़बूत आदर्शों की स्थापना की ज़रूरत है, जिससे मतदाताओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। हमें ऐसा माहौल बनाने की ज़रूरत है जहाँ मतदाता स्वेच्छा से मतदान करने के लिए प्रेरित हों। यह केवल राजनीतिक व्यवस्था को बेहतर बनाकर ही हासिल किया जा सकता है। राजनीतिक परिदृश्य को बेहतर बनाने के लिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अवसरवादी नेताओं को दूर रखा जाए, ताकि जनता के बीच पार्टी के प्रति सम्मान की भावना बढ़े।

ग़ज़ल: बाकी है सफ़र ...!

मंज़िल दूर, बाकी है सफ़र,
ये देखों थकावट का असर।
ना चुराना मेहनत से नज़र,
चाहे दिखा रहें समय ग़ज़र।
ऐसे ही करना जीवन बसर,
न रखना कोई बाकी क़सर।

मंज़िल दूर, बाकी है सफ़र,
ये देखों थकावट का असर।
ये जन्दिगी मिली है मयस्सर,
अब इसे नहीं रखना सिफ़र।
निराशा में ना जाना बिखर,
कहीं तो लिखा होगा शिखर।

मंज़िल दूर, बाकी है सफ़र,
ये देखों थकावट का असर।
नजरें हो चार, समझो यार,
मिला साथी बना हमसफ़र।
चलने दें, जीवन इस क़दर,
आया आनंद कितना सुंदर।

संजय एम तराणेकर

तू आगे बढ़

उम्मीद के दामन को थामे,
तू ज़दिगी की जंग लड रही है
तू सुंदर है, कोमल भी पर तू शक्ति स्वरूपा,
झुकना तेरे बस में नहीं, बस तू आगे बढ़।
ममता का दुलार,
स्नेह का यह बंधन
जिससे रिश्ते मजबूत होते हैं मन के,
झुकना तेरे बस में नहीं, बस तू आगे बढ़।
संघर्षों की राह पर रास्ता निकाल कर,
अपने लिए मंजिल की तलाश कर
नयी राहें अपने-आप मिल जाएंगी,
झुकना तेरे बस में नहीं, बस तू आगे बढ़॥

स्वतंत्र लेखक व रचनाकार
हरिहर सिंह चौहान

सनातनी, संतों, शंकराचार्यों ने ठाना है, गौवंश बचाना है हर एक असली हिंदू को 17 मार्च रामलीला मैदान आना है

जगदीश सीरवी

हैदराबाद सर्वदलीय गौरक्षा मंच, राष्ट्रिय अध्यक्ष राजर्षी जयपाल नयाल सनातनी ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अभिमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज और सनातन धर्म के चारों शंकराचार्य तथा पूज्य गौ ऋषि गोपाल मणि जी के गौ रक्षा आंदोलन का पूर्ण समर्थन करते हुए हैदराबाद के गौ सांसद पद के साथ तेलंगाना प्रभारी के रूप पिछले ३ महीने से कार्य कर रहे है।

श्री जयपाल नयाल सनातनी ने आज प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि कुंभ २०२५ में पूज्य शंकराचार्य जी ने ३२४ कुंडिय कामधेनु रक्षा यज्ञ के माध्यम से २ करोड़ ६८ लाख आहुतियों से गौवंश को बचाने और गौरक्षा आंदोलन को शक्ति देने हेतु और लगातार 1 महीने तक गौ संसद

लगाकर देश भर के गौभक्तों के साथ गाय पर चर्चा की और केंद्र सरकार को सम्पूर्ण गौवंश रक्षा हेतु ३३ दिन का समय दिया जिसकी समय सीमा 17 मार्च को पूर्ण हो रही है। 17 मार्च को दिल्ली रामलीला मैदान में पूज्य शंकराचार्यों के पावन सान्निध्य में देश भर के गौ भक्त, गौ रक्षक, गौ संत, वकील, डॉक्टर, कथा वाचक, देश की गौभक्त माताएं- बहनें आम और खास गौ वंश प्रेमी, जीवदया प्रेमी दिल्ली पहुंच रहे है। जो 17 मार्च शाम 5 बजे तक केंद्र सरकार के जवाब का इंतजार करेंगे अगर कोई उचित जवाब केंद्र की ओर से नहीं आता है तो फिर 5 बजे के बाद स्वामी करपात्री जी महाराज के 1966 के गौरक्षा आंदोलन की तरह अखिल भारतीय स्तर का आंदोलन प्रारंभ हो जाएगा। देश के आम और खास नागरिक यदि आप भी चाहते है कि संपूर्ण भारत वर्ष से गो हत्या का कलंक मिटें और गौमाता को संवैधानिक राष्ट्रमाता का सम्मान मिले, तो आप 17 मार्च को दिल्ली पधारें साथ ही इस नीचे दिए नंबर 8448531008 पर आपकी एक मिस कॉल इस गौ हत्या बंदी एवं गौ प्रतिष्ठा आंदोलन के महायज्ञ में एक आहुति प्रदान कर सकता हैं। आजाद भारत से लेकर अभी तक जितनी सरकारों को आपने और आपके पूर्वजों ने वोट देकर, अनजाने में जो गो हत्या का पाप लिया है। यह गो प्रतिष्ठा आंदोलन आपको उस पाप से मुक्ति का अवसर प्रदान कर रहा है इस भगवती गौमाता के आंदोलन में सभी अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। आपका मत है गौ हत्या हो! अगर नहीं तो विश्व में दूसरे no का सबसे बड़ा मांस निर्यातक इन राजनीतिक पार्टियों को को वोट देकर आप पाप के भागी नहीं बन रहे!

भाजपा सरकार की आदत बन गई किसानों को छलने की: गजेन्द्र सिंह सोलंकी

– गेहूं का स्टॉक सीमित करना किसानों के हित में गलत, सरकार तुरंत वापस ले फैसला

उमेश कुमार, भोपाल। मध्य प्रदेश किसान कांग्रेस महासचिव एवं जिला कांग्रेस कमेटी महामंत्री (ग्रामीण) गजेन्द्र सिंह सोलंकी ने भाजपा सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि यह सरकार लगातार किसानों के साथ अन्याय कर रही है। हाल ही में सरकार द्वारा गेहूं का स्टॉक सीमित करने का जो निर्णय लिया गया है, वह किसानों के हितों पर सीधा कुठाराघात है। इससे मंडियों में गेहूं की कीमतों में 300 से 400 रुपये प्रति क्विंटल तक की गिरावट आ गई है, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

सरकार की नीति किसानों के विरुद्ध

श्री सोलंकी ने कहा कि जब गेहूं की फसल पककर तैयार हो चुकी है, तब सरकार की आंखें खुली हैं और व्यापारियों के लिए स्टॉक सीमा लागू कर दी गई है। यह नीति किसानों के लिए हानिकारक है, क्योंकि इससे वे

अपनी फसल उचित दाम पर बेचने में असमर्थ हो रहे हैं। एक ओर तो भाजपा सरकार खुद को किसान हितैषी बताती है, वहीं दूसरी ओर किसानों को आर्थिक रूप से कमजोर करने और लूटने का कोई भी मौका नहीं छोड़ती।

उन्होंने कहा कि सरकार ने पहले किसानों को खाद संकट, पानी संकट, बिजली संकट में धकेल दिया और अब जब फसल तैयार हुई तो उचित मूल्य का संकट खड़ा कर दिया। यह दिखाता है कि भाजपा सरकार पूरी तरह से किसान विरोधी है और योजनाबद्ध तरीके से किसानों का शोषण कर रही है।

भाजपा सरकार को किसानों की खुशहाली रास नहीं आती

श्री सोलंकी ने कहा कि इस वर्ष मौसम अनुकूल रहा, जिससे फसल अच्छी हुई, लेकिन भाजपा सरकार को किसानों की खुशहाली फूटी आंख नहीं सुहाती। इसलिए अब गेहूं की खरीदी पर स्टॉक लिमिट का नियम लागू कर दिया गया है। उन्होंने सरकार से सवाल किया कि जब भाजपा सरकार किसानों के कल्याण के नाम पर करोड़ों रुपए के विज्ञापन अखबारों और टीवी पर प्रसारित कर रही है, तो अब किसानों से 3000 प्रति क्विंटल के समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदने की अपनी घोषणा पर अमल क्यों नहीं कर रही?

सरकार तुरंत वापस ले स्टॉक लिमिट का फैसला

प्रदेश महासचिव गजेन्द्र सिंह सोलंकी ने मुख्यमंत्री एवं केंद्र सरकार से आग्रह किया कि किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए इस अन्यायपूर्ण फैसले को तुरंत वापस लिया जाए। यदि सरकार किसानों के साथ इसी तरह अन्याय करती रही, तो कांग्रेस पार्टी चुप नहीं बैठेगी और किसानों को उनका हक दिलाने के लिए हर स्तर पर संघर्ष करेगी।

"आंधी का वाज" ने जब बिहार सरकार को उसकी जमीन पर आकर धमकाया था.....

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। "आंधी का ईगल (वाज)" के रूप में जाना जाने वाला ओडिशा का वह शख्स जो बचपन में अंग्रेजों की गाड़ी पर पत्थर मारा, कालेज के दिनों में कटक से पेशावर (अब पाकिस्तान) तक 3000 किलोमीटर साइकिल से यात्रा कर किर्तिमान स्थापित किया, ऐसा एक योद्धा जो 47 वार कश्मीर के टूटे एरोड्रम में सैनिकों को लादकर अपना जहाज से उतारा तथा एल ओ सी तक पाकिस्तानी फौज को ढकेल कर खदेड़ने में अहम भूमिका अदा की। और तो और तब इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णे को अपनी डेकोडा प्लैन में बैठाकर भारत लाया था जिनका आज जन्म दिन है। आप रहे ओडिशा के मुख्यमंत्री बीजू पट्टनायक यानी आंधी का वाज /ईगल/गरूड़। कम शख्स को मालुम होगा जिन्होंने 1970 में ओडिशा से सरायकेला पहुंचकर बिहार सरकार को उसकी जमीन पर मेरा जमीन सरायकेला खरसावां मेरी भाषा ओडिया कह कर धमकाया जिससे बिहार सरकार का होश ठेकाने पर आ गया था।

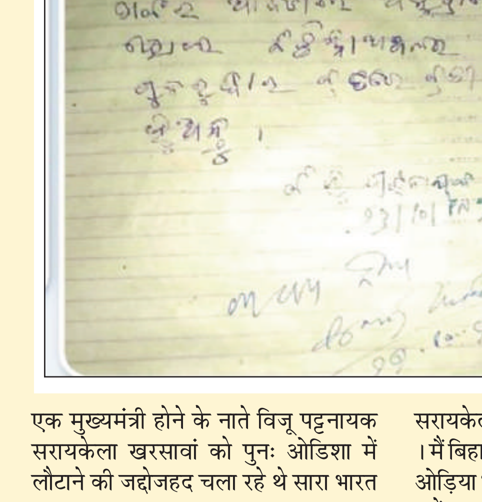

परन्तु वह जांबाज मुख्यमंत्री 1970 में जब सरायकेला पहुंचे तब उसने कहा मैंने तो कश्मिर के विरूद्ध सीमा पर लड़ा पर मुझे तो वास्तव में सरायकेला खरसावां जो मेरा ओडिशा है, उस पर लड़ना चाहिए था।

बात उस वक्त की है जब सरायकेला खरसावां आजाद भारत में ओडिशा का एक राजस्व जिला रहा जिसे जबरन बिहार ने षड्यंत्र के तहत लिया था और ओडिया भाषा को सिंहभूम से हटाने का मुहिम छेड़ रखा था। एक मुख्यमंत्री होने के नाते विजू पट्टनायक सरायकेला खरसावां को पुनः ओडिशा में लौटाने की जद्दोजहद चला रहे थे सारा भारत जान रहा था।

वे 1970 में उत्कल मनी आदर्श पाठागार का आधारशिला रखने सरायकेला पहुंचे तब सरायकेला से बिहार सरकार ओड़िया भाषा को समाप्त करने की षड्यंत्र रखा था, जिसपर उन्होने बिहार को एक पखवाड़े का मोहलत देत हुए कड़कदार लब्ज़ में सरायकेला के पी एच ई डी पंप हाउस के पास कमर में हाथ रखते हुए कहा था ₹मैंने देश की सीमा पर अपने विमान में भारत के लिए पाकिस्तान के खिलाफ लड़ाई लड़ी है, पर मुझे वास्तविक लड़ाई सरायकेला खरसावां के लिए लड़ना चाहिए था। मैं बिहार सरकार को खबरदार करता हुं वह ओड़िया भाषा को सिंहभूम से उठाने का भूल न करें अन्यथा मैं 15 दिन के बाद 16 वां दिन से ओडिशा से हिन्दी को उठाकर फेंक दुंगा₹।

बीजू पटनायक के उस दहाड़ के बाद 1970 में ओडिया शिक्षकों की विधिवत बहाली पटने से होने लगी। वे आज से दस पंद्रह वर्ष तक नियमित ओडिशा शैक्षणिक कार्य में जुटे रहे। बाद में सेवानिवृत्त हुए। सच तो यह है कि इधर झारखंड सरकार ने बिहार सरकार के उस अधुरे काम को 20-25 वर्षों में तमाम कर दिया। जहां बीजू बाबू का संदेश देश के लिए आज प्रासंगिक हो जाता है जिसपर उन्होंने लिखा गोपबंधू से प्रेरणा लें। ये वही उत्कल मणि गोपबंधू जी जो चक्र धरपुर में ओडिशा खोल कर सिंहभूम के सैकड़ों ओडिया स्कुलों के लिए प्रेरक रहें हैं।

मुख्यमंत्री बीजू बाबू का यह घटना पचास- पचपन साल पहले की घटना है आज के इसी झारखंड के इलाके में। यह बीजू बाबू द्वारा उठाए गए ऐतिहासिक कदम के कारण संभव हुआ था। बीजू पट्टनायक को सरायकेला में लाने वाले शख्स में भवानी शंकर कवि ही प्रमुख थे। जिनको आज उनसे मिलकर उनकी जुवानी सबको सुननी चाहिए।

बिजेड़ी बिधायक रणेन्द्र प्रताप स्वैन गोमांस बेच रहे हैं : भाजपा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: भाजपा ने तिगिरिया पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराया, गिरिया बरमन रिजर्व फॉरेस्ट में बड़े पैमाने पर गायों की हत्या और गोमांस की तस्करी में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। भाजपा के प्रदेश किसान मोर्चा अध्यक्ष महेश्वर साहू, भाजपा नेता अभय बारिक, शंकरशंकर मोहंती, पार्टी कार्यकर्ताओं और कार्यकर्ताओं ने तिगिरिया थाना प्रभारी से शिकायत की है। कई वर्षों से कुछ असामाजिक युवक ओडिशा के विभिन्न हिस्सों से गाय, बैल और सांडों

को पंकल और बारामरन के जंगलों में लाकर उनकी निर्मम हत्या करते हैं और मांस तथा मूल्यवान हड्डियों की तस्करी देश-विदेश में करते हैं।

भाजपा ने आरोप लगाया है कि स्थानीय बीजद नेता रणेन्द्र प्रताप स्वैन, जो 20 वर्षों से उनके कारोबार को बढ़ाने में मदद कर रहे हैं, अब उन्हें वित्तीय सहायता दे रहे हैं। यहां तक कि स्थानीय अधिकारी भी विधायक रणेंद्र प्रताप स्वाईं के प्रभाव में आकर चुप बैठे हैं। रणेन्द्र प्रताप व्यक्तिगत रूप से ऐसी बेईमान गतिविधियों में शामिल हैं। इसलिए शिकायत पत्र में स्वैन के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है।

महागणपति

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम्।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे॥
ओंकारमायंप्रवदन्लिसंतो वाच: श्रुतीनामपियंगृणन्ति।
गजाननं देवगणालताङ्घ्रिं
भजेऽहमर्धेत्युकृतावतंसम्॥

जो ज्ञान तथा आनन्द के स्वरुप है, निर्मल स्फटिक तुल्य जिनकी आकृति है, जो समस्त विद्याओं के परम आधार हैं, उन हयग्रीव गणेश की मैं उपासना करता हूं, जो आदि ओंकार है, वेद की ऋचाएं भी जिनकी स्तुति करती हैं, जिनके सिर पर अर्द्ध चन्द्र शोभायमान है, समस्त देवता जिनके चरणों में नतमस्तक हैं, उन श्री गणेश की मैं वन्दना करता हूं।

श्री गणेश आदि स्वरुप, पूर्ण कल्याणकारी, देवताओं के भी देवता माने गये हैं, जिनकी उपासना एवं पूजा का उल्लेख वेदों में भी प्राप्त होता है, सभी प्रकार के पूजनों में प्रथम पूजन का अधिकार गणपति का ही माना गया है, इसके पीछे ठोस शास्त्रीय आधार है, किसी भी कार्य को पूर्ण रूप से सिद्ध करने के लिए समुचित प्रयत्न करना पड़ता है, लेकिन कई बार सभी प्रकार के प्रयत्नों की पराकाष्ठा होने पर भी ऐन मौके पर कोई न कोई बाधा आ जाती है, इस प्रकार की बाधा को हटाने के लिए, जिससे कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो जाय, और जैसे- तैसे पूरा न होकर जिस सफलता के साथ कार्य पूरा करने की इच्छा है उसी रूप में कार्य पूरा हो, इसके लिए ही गणपति पूजन विधान निर्धारित किया गया है।

गणेश पूजा ही क्यों?

प्रतिभा और ज्ञान की भी एक सीमा अवश्य होती है, व्यक्ति अपने प्रयत्नों से किसी भी कार्य को श्रेष्ठतम रूप से पूर्ण करते हुए उज्जवल पक्ष की ओर विचार करता है, लेकिन उसकी बुद्धि एक सीमा के आगे नहीं दौड़ पाती है, बाधाएं उसकी बुद्धि एवं कार्य के विकास को रोक देती है, और यही मूल कारण है कि हमारे शास्त्रों में पूजा, साधना उपासना को विशेष महत्व दिया गया है।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और पूर्णता ब्रह्मा, विष्णु, और महेश द्वारा सम्पादित की जाती है, लेकिन सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही यह व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे, और विघ्न न आएं यह भी गणेश के ही जिम्मे है, विघ्नकर्ता और विघ्नहर्ता दोनों ही गणेश हैं, आसुरी प्रकृति के अभक्तों के लिए गणेश विघ्नकर्ता हैं, तो उनकी पूजा उपासना करने वाले भक्तों के लिए विघ्नहर्ता और ऋद्धि-सिद्धि के प्रदाता है, इसीलिए श्री गणेश को सर्वविघ्नैहरण, सर्वकामफलप्रद, अनन्तानन्तसुखद और सुमंगलमंगल कहा गया है। सभी प्रकार के देवता विभिन्न शक्तियों से सम्पन्न हैं, लेकिन विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट शक्ति सम्पन्न देवताओं का स्मरण, पूजन, साधना सम्पन्न करनी पड़ती है, इसीलिए किसी भी कार्य को निर्विघ्न, पूर्ण फलयुक्त, मंगलमय रूप में पूर्ण करने हेतु भी गणपति का पूजन किया जाता है।

गणपति पूजन ☞

गणेश का स्वरूप शक्ति और शिवतत्व का साकार स्वरूप है, और इन दोनों तत्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है, गणेश शब्द की व्याख्या अत्यन्त महत्वपूर्ण है, गणेश का 'ग' मन के द्वारा, बुद्धि के द्वारा ग्रहण करने योग्य, वर्णन करने योग्य सम्पूर्ण भौतिक जगत को स्पष्ट करता है, और 'ण' मन, बुद्धि और वाणी से परे, ब्रह्म विद्या स्वरुप परमात्मा को स्पष्ट करता है, और इन दोनों के ईश अर्थात स्वामी गणेश कहे गये हैं।

श्री गणेश के द्वादश नाम

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक:।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक:॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा॥
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

यह श्लोक गणेश पूजन और उनकी साधना उपासना के महत्व को विशेष रूप से स्पष्ट करता है, इसका तात्पर्य यह है, कि व्यक्ति विद्या प्रारम्भ करते समय, विवाह के समय, नगर में अथवा नये भवन में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं बाहर जाते समय, संग्राम अर्थात शत्रु और विपत्ति के समय, यदि श्री गणेश जी के इन बारह नामों का स्मरण करता है, तो उसकी उद्देश्य की पूर्ति में अथवा कार्य की पूर्णता में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता, गणेश जी के ये बारह नाम 1 सुमुख, २ एकवन्त, * कपिल, 4 गजकर्ण, 5 लम्बोदर, ६ विकट, 7 विघ्ननाशक, 8 विनायक, ९ धूम्रकेतु, 10 गणाध्यक्ष, 11 भालचन्द्र, और १२ गजानन है।

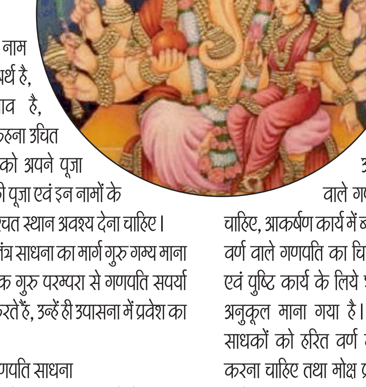

इनमें से प्रत्येक नाम का एक विशेष अर्थ है, और विशेष भाव है, संक्षिप्त में यही कहना उचित है, कि साधक को अपने पूजा कार्य में गणेश की पूजा एवं इन नामों के जप को एक निश्चित स्थान अवश्य देना चाहिए। मंत्र साधना और तंत्र साधना का मार्ग गुरु गम्य माना गया है, जो साधक गुरु परम्परा से गणपति सपर्या की विद्या प्राप्त करते हैं, उन्हें ही उपासना में प्रवेश का अधिकार है।

कामना सिद्धि गणपति साधना

साधना की दृष्टि से अलग-अलग रूपों में गणपति का स्मरण और चिन्तन विभिन्न फलों की प्राप्ति में सहायक है, तंत्रसार में गणेश के भिन्न-भिन्न ध्यान का फल इस प्रकार है

पीतं स्मरेत एतम्भमकार्य एवं
वश ग्राय मंत्री गुरुणं स्मरेत तम्।
कृष्ण स्मरेन्मारण कर्मणीशम
उच्चाटेन धूम्रनिभं स्मरेत तम्॥
बन्धू कपुष्णादिनिमं चं कृष्टौ
स्मरेत बलार्थ किल पुष्टिकार्ये।
स्मरेत धनार्थी हरिवर्णमेत
मुक्तों च शुक्लं मनुवित स्मरेत तम्
एवं प्रकारेण गणं त्रिकालं
ध्यानाच्च किल सिद्धियुक्तो भवेत स:॥

अर्थात साधक को चाहिए, कि वे स्तम्भन कार्य में गणेश जी के पीत कांति वाले स्वरूप का ध्यान करें, वशीकरण आदि कार्यों में गणेश जी के अरुण कांति वाले स्वरूप का चिन्तन अनुकूल रहता है। मारण कार्य में कृष्ण कान्ति वाले गणेश जी का ६ या न फलदायक माना गया है, इसी प्रकार उच्चाटन कार्य में धूम्रवर्ण वाले गणपति का स्मरण करना चाहिए, आकर्षण कार्य में बंधूक पुष्प के समान लाल वर्ण वाले गणपति का चिन्तन करना चाहिए। बल एवं पुष्टि कार्य के लिये शान्त गणपति का ध्यान अनुकूल माना गया है। धन प्राप्ति के इच्छुक साधकों को हरित वर्ण वाले गणपति का ध्यान करना चाहिए तथा मोक्ष प्राप्ति के लिये शुक्ल वर्ण वाले गणपति का ध्यान पूर्ण फलदायक होता माना गया है।

गणेश मंत्र साधना

गणपति उपनिषद के अनुसार गणपति का सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय मंत्र निम्न है -

॥ॐ गं गणपतये नम:॥

साधक या गृहस्थ व्यक्ति को चाहिए कि वह इस मंत्र का जप निरन्तर करता रहे, सोते समय भी इस मंत्र का सतत जप किया जा सकता है, यह मंत्र अपूर्व सिद्धि एवं फलदायक है।

द्वात्रिंशाक्षर मंत्र

यह मंत्र अत्यंत ही अनुकूल और तुरन्त प्रभाव देने बाला माना गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में बताया गया है, कि श्री गणेश जी को यह मंत्र सबसे अधिक प्रिय है -

मंत्र

॥ श्रीं ह्रीं क्लीं गणेश्वराय ब्रह्मस्वरूपाय चारवे सर्व सिद्धि प्रदाय विघ्नेशाय नमो नम:॥

श्री गणेश जी के इस मंत्र में *२ अक्षर है। यह सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का शीघ्र ही फलदायक मंत्र है। इसके पांच लाख जप से मंत्र सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इस मंत्र के सिद्धि होने पर घर में विघ्न नहीं आते, उसे असाधारण क्षेत्र में पूर्ण सम्पन्नता तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इस मंत्र की साधना में विशेष विधि विधान की आवश्यकता नहीं है। नित्य ११ मालाएं, फेरे पर इतना ध्यान रहे, कि यह क्रम तब तक नियमित रूप से चलता रहे जब तक पांच लाख मंत्र जप पूर्ण न हो जाय। मंत्र जप करते समय सामने विजय गणपति का विग्रह हो तो विशेष फलदायक होता है।

षोडशाक्षरी मंत्र

यह मंत्र भी विशेष महत्वपूर्ण माना गया है, इसकी साधना भी ऊपर लिखे अनुसार ही सम्पन्न होती है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में पांच लाख मंत्र जप बताया गया है, जिससे कि जीवन में अपने लक्ष्य को तुरन्त प्राप्स करने में साधक सफलता प्राप्स कर लेता है।

मंत्र

॥ॐ गं गौं गणपतये विघ्नविनाशिने स्वाहा॥

ऊपर मैंने महागणपति से सम्बन्धित कुछ मंत्र व साधनाएं स्पष्ट की हैं, जो कि प्रत्येक गृहस्थ अपनी सुविधानुसार सम्पन्न कर सकता है, ये साधनाएं पुरुष और स्त्री समान रूप से सम्पन्न कर सकते हैं।

राष्ट्रीय पोशाक दिवस

राष्ट्रीय पोशाक दिवस को हर साल ६ मार्च को मनाया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण उत्सव है। जो भारतीय संस्कृति और परंपराओं को महत्व देता है। इस दिन लोग अपने स्थानीय और राष्ट्रीय पोशाकों में खुशियां मनाते हैं और अपने सांस्कृतिक धरोहर को महसूस करते हैं। राष्ट्रीय पोशाक दिवस का मुख्य उद्देश्य है। भारतीय पोशाक और सांस्कृतिक पहनावे को बढ़ावा देना। इस दिन लोग अपने राष्ट्रीय पोशाकों को पहनकर गर्व महसूस करते हैं। और अपने देश की धरोहर को समझते हैं। इस दिन कई सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी और परेड होते हैं जिनमें लोग अपने राष्ट्रीय पोशाकों में सजते-सजाते भाग लेते हैं। स्कूल, कॉलेज, कार्यालय और सामुदायिक संगठन भी इस दिन को ध्यान में रखते हैं। और राष्ट्रीय पोशाकों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करते हैं। राष्ट्रीय पोशाक दिवस एक ऐसा अवसर है जो भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और गर्व को समझाने का माध्यम बनाता है। इस दिन को ध्यान में रखते हुए हमें अपने देश के पोशाकों का महत्व समझना चाहिए। और उन्हें समर्थन देना चाहिए। यह दिवस भारत की विविध और समृद्ध पोशाक संस्कृति का उत्सव मनाने के लिए मनाया जाता है। इस दिन, लोग पारंपरिक भारतीय पोशाक पहनते हैं। और देश की विभिन्न संस्कृतियों का प्रदर्शन करते हैं।

राष्ट्रीय पोशाक दिवस मनाने के कुछ कारण:

भारतीय पोशाक संस्कृति को बढ़ावा देना: भारत में विभिन्न प्रकार की पोशाकें हैं, जो विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। राष्ट्रीय पोशाक दिवस इन पोशाकों को प्रदर्शित करने और लोगों को उनके बारे में जागरूक करने का एक अवसर प्रदान करता है।

सिंहभूम मे माओ का ई आई डी ब्लास्ट सीआरपीएफ के तीन जवान घायल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

चक्रधरपुर। पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा घने जंगलों में नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे सर्च आपरेशन के दौरान छोटानागरा थाना क्षेत्र अंतर्गत बलिबा के समीप जंगल मे सुबह नक्सलियों के द्वारा जवानों को नुकसान पहुंचाने को लेकर पूर्व के दिनों में लगाए गए ईआईडी ब्लास्ट हो गया। इस ब्लास्ट में सीआरपीएफ के 3 जवानों के घायल होने की भी सूचना है। घायल जवानों को बेहतर इलाज के लिए रांची भेजने के लिए हेलीकॉप्टर भी मंगवाया गया है।

घटना की आधिकारिक तौर पर पुष्टि होनी बाकी है। कोल्हान और सारंडा क्षेत्र से नक्सलियों की पूरी तरह सफाया को लेकर सीआरपीएफ, जिला पुलिस, कोबरा बटालियन लगातार अभियान चला कर नक्सलियों के विरुद्ध कार्रवाई कर रही है।

इधर गत दो दिन पूर्व पश्चिमी सिंहभूम के पुलिस अधीक्षक आशुतोष शेखर ने माओवादियों के जंगली गढ़ को ध्वस्त कराते हुए कहा कि प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) नक्सली संगठन के शीर्ष नेता मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछु, अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगरिया, अश्विन अपने दस्ता सदस्यों के साथ सारंडा, कोल्हान क्षेत्र में विध्वंसक गतिविधि के लिए भ्रमणशील है।

जिसके आलोक में चाईबासा पुलिस, कोबरा, झारखण्ड जगुआर एवं सीआरपीएफ के विभिन्न बटालियनों की टीमों का एक संयुक्त अभियान दल गठित कर लगातार अभियान संचालित किया जा रहा है।

वर्ष 2022 से लगातार संयुक्त अभियान गोईलकेरा थानान्तर्गत ग्राम कुईड़ा, छोटा कुईड़ा, मारादिरी, मेरालगड़ा, हाथीबुरू, तिलायबेड़ा बोयपाईससांग, कटम्बा, बायहातु, बोरोय, लेमसाडीह के सीमावर्ती क्षेत्र तथा टोन्टो थानान्तर्गत ग्राम हुसिपी, राजाबासा, तुम्बाहाका, रेगड़ा, पाटातोरब, गोबुरू, लुईया के सीमावर्ती क्षेत्र में संचालित किया जा रहा है।

इसी क्रम में प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) नक्सली संगठन के उग्रवादियों द्वारा टोन्टो थानान्तर्गत जंगली, पहाड़ी क्षेत्र में हथियार, गोला-बारूद छुपाकर रखने की सूचना प्राप्त हुई, जिसके के आलोक में सोमवार को टोंटो थानान्तर्गत वनग्राम हुसिपी के आस-पास जंगली, पहाड़ी क्षेत्र में सर्च अभियान प्रारंभ किया गया।

सर्च अभियान के दौरान टोंटो थानान्तर्गत वनग्राम हुसिपी के आस-पास जंगली, पहाड़ी क्षेत्र में सुरक्षा बलों को लक्षित करने के उद्देश्य से नक्सलियों द्वारा पूर्व में लगाये गये विस्फोटक एवं अन्य सामग्री एक पुराने नक्सल डम्प से बरामद किया गया। बरामद विस्फोटकों को सुरक्षा के दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता के मदद से विनिष्ट किया गया है।

उक्त नक्सल डम्प को सुरक्षा बलों के द्वारा ध्वस्त किया गया। साथ ही उक्त नक्सली डम्प से भारी मात्रा में हथियार, कारतूस एवं अन्य दैनिक उपयोग की सामग्री बरामद किया गया, जिसे विधिवत जप्त किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023